इन्साफ़

प्रकाशक
साहित्य प्रकाशन,
दिल्ली

मूल्य तीन रुपया

मुद्रक
रामा कृष्णा प्रेस,
कटरा नील, दिल्ली।

इन्साफ़

यज्ञदत्त शर्मा

प्रकाशक

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

लेखक के अन्य उपन्यास

दो पहलू—भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम में शांति तथा क्रांति, दोनों पहलुओं की पृष्ठ-भूमि पर रचित उपन्यास। —मूल्य ४॥)

प्रकाशक : हिन्दी पुस्तक एजेंसी बनारस, कलकत्ता

इन्सान—भारत-विभाजन और उसके बाद की परिस्थितियों पर कलात्मक प्रकाश डालने वाला सामाजिक उपन्यास। यह उपन्यास यू० पी० सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया है। —मूल्य ४)

प्रकाशक : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

अन्तिम चरण—कांगरेसी सरकार के शासन-काल में समाज के अव्यवस्थित ढांचे और घूसखोरी का सजीव चित्राङ्कन। —मूल्य ७॥)

प्रकाशक : भारती(भाषा)-भवन, दिल्ली

निर्माण-पथ—यह उपन्यास भारत के मजदूर और पूंजीवादी दृष्टिकोणों के हल का सुन्दर ढङ्ग प्रस्तुत करता है। —मूल्य ४)

प्रकाशक : राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

महल और मकान—भारतीय उद्योगों के समाजवादी दृष्टिकोण का रोचक तथा कलापूर्ण सुझाव। —मूल्य ३)

बदलती राहें—जमींदारी की दीवार का गिरता और समाजवादी दृष्टिकोण का उभरता हुआ चित्र। —मूल्य ३)

मधु—अंगरेजी शासन काल में वेश्यावृत्ति के व्यवसायीकरण के इस उपन्यास में खूब परखचे उड़ाये गये हैं। —मूल्य ३)

झुनिया की शादी—भारतीय समाज में नारी और उसके जन्म से पैदा होने वाली आर्थिक समस्या की रोमांचकारी गाथा।—मूल्य ३)

साहित्य प्रकाशन के अन्य उपन्यास

धरती के लाल—रूमानिया के क्रांतिकारी उपन्यासकार सादोवीनू के प्रसिद्ध उपन्यास 'दी मडहट ड्वैलर्स' का अनुवाद। —मूल्य २)

काले बादल—अमरीका के आटम-पंथी साहित्य की रोमांचकारी पोल—लेखक मिस्टर किम—रूस के प्रसिद्ध उपन्यासकार।—मूल्य ३॥)

सा हि त्य प्र का श न, दि ल्ली।

मेरा यह उपन्यास उन किसानों की नज़र
है जिनके हरे भरे खेत ज़मीदारी
खत्म होनेकी नजर हो गये।

यज्ञदत्त

लेखक की अन्य रचनाएँ

हिन्दी का संक्षिप्त साहित्य—हिन्दी साहित्य के इतिहास की संक्षिप्त झाँकी। —मूल्य २)

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

प्रबन्ध सागर—उच्च कोटि के साहित्यिक, कलात्मक, धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक तथा विविध विषयों पर विद्वतापूर्ण लिखे गये निबन्धों से युक्त बी० ए०, हिन्दी प्रभाकर, मध्यमा तथा अन्य विशेष योग्यता की परीक्षाओं के लिए उपयोगी पुस्तक। —मूल्य ४॥)

प्रकाशक : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

हिन्दी के उपन्यासकार—हिन्दी के प्रमुख उपन्यासकारों की रचनाओं पर आलोचनात्मक समीक्षा से पूर्ण। —मूल्य ३)

प्रकाशक : भारती(भाषा)-भवन, दिल्ली।

आलोचना के सिद्धान्त—बी० ए०, प्रभाकर तथा विशेष योग्यताओं के विद्यार्थियों के लिए आलोचना-सम्बन्धी नियमों के स्पष्टीकरण की सुन्दर तथा सरल पुस्तक। —मूल्य २।)

प्रकाशक : राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

आदर्श पत्र-लेखन—व्यक्तिगत, व्यावहारिक, तथा व्यापारिक पत्रों का भावनात्मक, कथात्मक और विचारात्मक संग्रह। हिन्दी में अपने ढंग का एक अकेला ग्रन्थ। —मूल्य ७॥)

कबीर-साहित्य और सिद्धान्त—कबीर के जीवन, साहित्य और धार्मिक आस्थाओं का व्यापक विवेचन। —मूल्य २॥)

प्रकाशक : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली।

पात्र-परिचय

श्यामू

किसान, कांग्रेसी कारकुन, सत्याग्रही, स्वतन्त्र भारत का किसान, फिर जमींदारी उन्मूलन के बाद इन्साफ की बलिवेदी पर आहुत होकर, भूमिधर के स्थान पर भूमिहीन श्रमिक—श्रम बेचने के लिए प्रस्तुत।

जगवती (जग्गो)

दिलेर, दारोगा को भी पीटने वाली, धैर्यशील, पति की गृहस्थी को संभालने वाली, (खेती भी कराई) रहमदिल, हर परिस्थिति में चौकन्नी और सतेज। श्यामू की पत्नी।

लाला छेदीमल

गाँव का टकसाली बनिया। सभी की हाँ में हाँ मिलाने वाला। पर अपने स्वार्थ में चौकस और इसी दृष्टि से सोच विचार कर काम करने वाला।

चौधरी राघवनारायण

जमींदार कांगरेसी नेता, सत्याग्रही, स्वतन्त्र भारत में एम. पी., जमींदारी उन्मूलन कानून के अनुसार भी बचाने में निपुण। अफसरों से मेल जोल रखने वाला, इन्साफ को नापसन्द करने वाला—टकसाली सामन्ती विचारधारा का पोषक।

पटवारी

पैसे के लिए बेटे की कसम खा लेने को तैयार रहने वाला गाँव का कारकुन। जो अपनी हवेली खड़ी करने के लिए किसानों के जायज हक पर भी अपनी कलम का छुरा फेरने से बाज नहीं आता।

कारिन्दा (भीखू)

वीर, ऐंठभरा, किन्तु शालीनता के क्षणों से कभी-कभी दमक उठने वाला सामन्तों की आड़, बर्बरता का पुजारी और मालिक का खैरख्वाह। अमीर-उमरा, हाकिम-हुक्कामों में जमींदार के धन पर पुजने वाला।

जगन

पटवारी का लड़का, समानता के विचारों में प्रकाशित और अत्याचार व झूठ के विरोध के लिए बाप के खिलाफ भरी अदालत में गवाही देने वाला। नये युग का नया युवक।

तथा

गाँव शहर के अन्य पात्र जैसे फीसगर्ज वकील, घूसखोर अमीन, मुंशी और अहलमद आदि।

भूमिका

हिन्दी उपन्यास का भावी भव्य और आलोकित है, क्योंकि कुछ नये उभर-उठने वाले उपन्यासकारों ने हिन्दी की स्वस्थ परम्परा को आगे बढ़ाने का बीड़ा उठा लिया है।

उपन्यास हिंदी में प्रतिमास १००-१५० के बीच प्रकाशित होते हैं, इनमें कुछ को छोड़कर बाकी सब जासूसी, कामुक या इन दोनों के मेलजोल से लबरेज होते हैं। इन 'कुछ' में अधिकांश समस्यामूलक होते हैं। और समस्याएँ ऐसी जिनमें 'बात अधिक काम कम' झलकता है।

कहानी की सबसे बड़ी विशेषता है उसका स्वयं उठना। पात्र बोलते रहें और कहानी न बोले, तो बड़ा अजीब-सा लगता है। इतना अजीब कि उपन्यासकार के प्रति, उसकी कहानी कहने की शक्ति के प्रति, शंका तक उत्पन्न होजाती है।

कहने को हमारे आलोचक व लेखक दोनों ही एक स्वर से यह कहते हैं कि हिंदी का कथा-साहित्य बहुत आगे बढ़ आया है, पर यह कभी नहीं विचारते कि उसकी जड़ें कहाँ हैं? ('जड़ की बात' लिखनेवाले उपन्यासकार श्री जैनेन्द्रकुमार भी नहीं।)

हमारे उपन्यासकारों को पात्रों में जो एक विशिष्ट मोह दिखने लगता है, उसके कारण धरती और उसके समाज पर पाँव न टिक पाकर अधर लटक जाते हैं। पात्र ऐसे समाज के होते हैं जो साँस लेते हैं तो घुँटते हैं, प्यार करते हैं तो घुँटते हैं और मरते तो हैं ही घुट-घुटकर! बस मरने की लालसा में मोह-व्याप्ति का साहित्य उपन्यासों के लेखकों द्वारा प्रकाशित होता रहता है।

जिन्दगी जिनमें है, हर परिस्थिति में जो हँसते हैं, रोते नहीं वे पात्र हिन्दी के स्वनामधन्य उपन्यासकार खोजने पर भी नहीं पाएँगे, यह बात समझ में आनेवाली नहीं।

जैनेन्द्र जी के इधर चार-पाँच उपन्यास एक साथ आये हैं और चारों रोगाग्रस्त पात्रों के 'क्रांतिकारी' विवेचनों से भरे पड़े हैं। कहानी के लिए पाठक केवल वही सिद्धान्त दुहरा सकता है 'या तो यह घटना हो चुकी है, या हो रही है, या होगी।' हाँ, उनकी शैली के शायद कुछ शौकीन हैं, जैसे 'अज्ञेय' की शैली भी लोगों को रुचती है। पर यह रुचि एक विशेष अंश की, पढ़े लिखे लोगों में भी एक विशेष अंश की, रुचि की परिचायिका है। अटपटी वाक्य-रचना, या संस्कृत-अंगरेजी मिलाकर बात कहना, कुछ को रुचेगा, यह मानने में इन्कार नहीं करना चाहिए, पर वे कुछ जो आलोचक भी हैं, अपनी रमक में इनकी रचनाओं को उच्च कोटि की घोषित करने की जो 'अनुकम्पा' कर बैठते हैं, वह नये आने वाले लेखकों के लिए गुमराही का साइनबोर्ड बन जाती है। और इन आलोचकों में एक श्रेष्ठ प्रगतिवादी आलोचक ने तो जैनेन्द्र की 'सुखदा' को आस्मान पर उठाकर रख दिया, उसमें उन्हें नारी का अपनी स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष और सफल संघर्ष दिखलाई पड़ गया। ठीक उसी लीक को उन्होंने आगे बढ़ाया जो उनके दूसरे भाई ने वर्षों पहले 'प्रेमचन्द से हजार कदम आगे' लिखकर डाल दी थी। शुक्र है कि आज हजार कदम आगे वाली बात कोई रहीं कहता, बल्कि उनकी परम्परा को आगे बढ़ाने की ओर कदम उठाने का आह्वान किया जाता है।

आज प्रेमचन्द के पुर्नमूल्यांकन की हमें आवश्यकता है क्योंकि उपन्यासकार हमारे स्वस्थ परम्परा से छिटक कर रोगों की दलदल में जा फँसे हैं। हिन्दी के उपन्यासकार और नये लेखक प्रेमचन्द से काफी कुछ सीख सकते हैं और सबसे बड़ी बात जो उन्हें सीखे बिना सफलता नहीं मिलेगी वह है अपने देश की पहचान—धरती से दोस्ती, हरे भरे खेतों से दोस्ती, फूलों से दोस्ती मटर और सरसों से प्यार, चने के हरे कालीन और उमड़ती सौंधी-सौंधी गंध से प्रेरणा प्राप्त करने की हौंस। हमारा देश बहुत बड़ा गाँव हैं, जिसमें कहीं-कहीं शहर की बिंदियां छिटकी पड़ी हैं और उनके कोने में कहीं-कहीं ऐसे पात्र झाँक रहे हैं जो रोगी हैं। रोगी हमारा आदर्श नहीं हो सकता,

रोग का निदान ही हमारा उद्देश्य होगा।

रोग का निदान—युगीन समस्याओं का हल खोजने की चेष्टा आज के उपन्यासों में कम हो चुकी है, (कहते हैं विलायत में कविता गद्य की ओर भाग रही है)। हमारे यहाँ भी इसी प्रकार की बहसें, जो पश्चिम में चलती हैं, वह तो आलोचक प्रवरों में चल जाती हैं, पर देशी समस्याओं व कृतियों पर बस लेखक का नाम व पश्चिम के उपन्यासों के समकक्ष रख कर ही थोड़ा-बहुत लिखा जाता है, अन्यथा प्रशंसा और अप्रशंसा की सीधी लकीरें खींच दी जाती हैं।

प्रेमचंद की महानता में आज किसी को सन्देह नहीं, पर उनकी उद्देश्य परकता की परम्परा को हमारी भाषा के कथा-साहित्य में कितना बढ़ाया गया है, यह विचारने की बात है। प्रेमचंद में जो समाज के प्रति चैतन्य और स्वस्थ दृष्टिकोण था, वह किस सीमा तक निखरा है, अथवा विद्यमान भी है या नहीं, यह भी एक प्रश्न है, जो हमें विहंगावलोकन के लिए विवश करता है।

प्रेमचंद के जमाने में कुछ ऐसी बात नहीं थी कि वे लोग मनोविज्ञान का दामन ही नहीं पकड़ते हों, दामन पकड़ते थे, पर मात्र विवेचन को आधार नहीं बनाते थे। मनोविज्ञान को इन्सान की दुर्बल-सबल भावनाओं और उनके संघर्ष को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त करते थे, पर साथ ही उन परिस्थितियों का विशद वर्णन होता था, जिनके कारण भावनाएँ रूप पाती थीं और कार्य रूप में, सक्रिय रूप में प्रकट होती थीं। उनके चैतन्य प्रकटीकरण पर सुझावात्मक टिप्पणी भी तिरछे रूप में उनमें विद्यमान रहती थी।

आज मनोविज्ञान व्यक्ति की इकाई और उसके भीतर के कुछ ऐसे संस्कारों को उकसाने के लिए काम आरहा है जिन्हें शाश्वत, जन-पक्षीय, निराश्रित और निरपेक्ष घोषित किया जाता है।

एक ओर तो ऐसे बुद्धिजीवी लेखक हैं जो बुद्धि की आँख को भी महत्त्व नहीं देते और दूसरे ऐसे हैं, जो अपनी आँख को अपनी बुद्धि का आइना पहना कर ऐसी मान्यताओं पर 'चोट करना' चाहते हैं, जो सही

अर्थों में मान्यताएँ हैं ही नहीं।

सच तो यह है कि इन लेखकों में भी वही सेक्स की समस्या उमड़ती घुमड़ती रहती है।

हिन्दी साहित्य में सेक्स की यह समस्या अपने आप बनाई हुई समस्या है और जिसका भूत अब इतना बड़ा हो गया है कि हमारे लेखकों के मारे नहीं मरता, उन पर छाया रहता है। लाख उसे कोसें, व्यक्ति की स्वतंत्रता का दानव इतना फूल गया है कि गलत ढंग से बढ़े इस 'विध्वंसकारी सुधार' की नींव हिल ही नहीं पाती।

मध्यवर्गीय बुद्धि ने, जब समाज के बन्धनों को तोड़ने की बात छेड़ी तो सबसे पहिले परिवार पर और उसके सदस्यों के सम्बन्धों पर कुल्हाड़ी चलाई। परिवार में पत्नी की भूख और माँ के प्रति विद्रोह, पिता के प्रति-घृणा बहिन के प्रति दिल में अजीब सा स्नेह, इन सबका मोल बदला और नये किस्म के उपन्यासों की बाढ़ आई—सुनीता, शेखर, नरमेध आदि पनपे। इस नयेपन ने और उसके मोह ने देशी समाज से ऐसा मुँह फेरा कि अपने ही यहाँ एक नया विदेशी समाज उत्पन्न हो गया।

प्रेमचंद की लीक खत्म-सी हुई, कुछ मिट्टी पड़ी और नई लीक कई धाराओं में फैलने लगी।

आज के अधिकांश आलोचकों में जिस आलोचक को देखिये साहित्य में 'कुंठा' ढूँढने के लिए बेकरार है। इस कुंठा की बीमारी ने एक नई कुंठा को जन्म दे दिया है। पाठकों का विश्वास नहीं—उनसे लगाव नहीं—अपने कमरे में बैठे साहित्यालोचन करते हैं, इसीलिए बड़े-बड़े विदेशी नाम लेखों में झलकते हैं, देशी नाम जहन में आते ही नहीं।

लेखक, इसलिए, जीवन से भटके लगते हैं कि सारे देश की मनोदशा उस मध्यवर्गीय वृत्ति-सी मानली है, जो उच्चवर्ग से समझौता करने की फ़िराक में रहती है, इसीलिए रचनाओं में निराशा, हल्का-फुल्कापन या फिर कुछ लेक्चरबाजी के भी दर्शन होजाते हैं। पात्र लेखकों के हाथ में कठपुतली मात्र रह गये हैं। दिमाग से जन्म लेते हैं और दिमाग में ही

मर कर समाप्त हो जाते हैं।

दिमाग की यह जो छाया साहित्य पर लम्बी लेट गई है उसका कारण है—लेखकों का समाज और उसकी रचनात्मक शक्ति से अलगावा, जो प्रेमचंद में नहीं था। इसीलिए प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन समाज की रचनात्मक शक्तियों की सही पहचान है और उनकी तर्जुमानी है।

आज के हिन्दी उपन्यास को हम इसी पृष्ठभूमि में मापने पर यह पाते हैं कि कुछ शक्तियाँ नई उभर रही हैं, जिनमें प्रेमचंद की परम्परा बढ़ाने की ललक है, जो अपने देश के पात्र लेते हैं, देश के लोगों की आम भाषा बोलने की सफल चेष्टा करते और ८० प्रतिशत जनता के हितों को मुखरित करते हैं।

जिन दो नई शक्तियों ने मुझे आकृष्ट किया, वे हैं सर्वश्री नागार्जुन और यज्ञदत्त। यज्ञदत्त के उपन्यास-साहित्य ने कई मंजिलें तय की हैं। पहली मंजिल में उनके उपन्यास भी दिमागी राजनैतिक पात्रों से भरे, किन्तु समस्या-मूलक और सुलझाने की ओर उन्मुख रहने वाले होते थे। आगे की घटनाओं और समाज के प्रति एक बार फिर सोच विचारकर यज्ञदत्त का रचनाकार गाँवों की विभिन्न समस्याओं की ओर मुड़ा, यह उपन्यास 'इन्साफ' जमींदारी उन्मूलन कानून का असली स्वरूप पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास में किसान की मानवीयता, उसका देश प्रेम, उसका कांगरेसके आंदोलनमें योगदान आदि सब कुछ प्रदर्शित है, पर अन्त में उच्च वर्गों की स्वार्थपरता का जो सजीव और पेचीला चित्रण है, वह अविस्मरणीय है।

'इन्साफ' के पात्र बोलते हैं पर कहानी उनसे भी ज्यादा बोलती है। इसका नायक श्यामू किसान है, जो जमींदारी उन्मूलन कानून के बनने के बाद भूमिधर बनने का ख्वाब सँजोये अंत में जमींदार, कारिन्दा और गाँव के पटवारी की चाल से अदालत का दरवाजा खटखटाकर भी इंसाफ नहीं पा सका—मुकदमा हार जाता है, पर हिम्मत नहीं हारता। यही हिम्मत उसकी जीत है और दूसरी जीत है उसकी पटवारी का लड़का,—जो अपने पिता के खिलाफ अदालत में गवाही देता है,—पटवारी का बेटा जगन उस नई

पीढ़ी का प्रतीक है जो इंसाफ के लिए परिवार-कुटुम्ब सभी के मोह से ऊपर उठता है और सचाई का साथ देता है।

सचाई का साथ देना, उस पर न्यौछावर होने के लिए तैयार रहना ही प्रेमचंद की परम्परा है, जिसे कथा-साहित्य में पनपते, हम देखना चाहते हैं।

श्यामू जानता है कि अदालत पटवारी के खाते-खतौनी सही मानेगी, चाहे उनमें झूठ ही क्यों न हो,—और इसलिए वह मुकदमा हारेगा भी, पर वह तो न्याय की प्रणाली को खोखला साबित करने की कसम खा चुका है,—वह इन्साफ को उसके दरवाजे तक छोड़ कर आयगा ही ?

गाँव के और हलजोतने वाले किसान अपनी जमीन ट्रैक्टर के मुँह में दे चुके होते हैं, और श्यामू की मदद के लिए खड़े भी नहीं हो सकते। खड़े भी हों तो भी खाते-खतौनी के आगे क्या मूल्य ?

श्यामू एक ऐसा किसान है जिसको, जमीन छिनी तो अफसोस उतना नहीं हुआ जितना 'उसे जचा कि मानो देशने गत कितने ही वर्षों जो संग्राम किया, जो विद्रोह किया, वह सब संग्राम नहीं था, विद्रोह नहीं था, एक उपहासमात्र था, एक दिखावा और धोखा था।

आजादी के बाद किसान और निम्नमध्यवर्ग को जो निराशा हुई है और उनका सरकार व उसके बारे में जो भरम टूटा है,'इन्साफ' इस दिशा में एक सीमा-चिन्ह है, इस सीमा-चिन्ह के इर्द-गिर्द भी कोई हिन्दी का तथा-कथित महान उपन्यासकार नहीं पहुँच पाया है।

निराशा के भी कई चेहरे होते हैं। एक निराशा भरम टूटनेपर होती है, पर आशा व उत्साह का दामन कायम रहता है। दूसरी निराशा असफल प्रेम से होती है, तीसरी निराशा,—अपने ही मन की सब बातें न होने पर होती है और इसी प्रकार अन्य।

'इन्साफ' में श्यामू की निराशा को हंसी का दामन प्राप्य है और यही उपन्यासकार की स्थिति में विश्वास, सुधरने की गुंजाइश का प्रकटीकरण है।

यज्ञदत्त ने अपने पिछले उपन्यासों में सहकार और सामन्ती उदारता के जो चित्र दिये हैं : यह उपन्यास उनके बिल्कुल विपरीत पड़ता है।

इसका एक ही कारण है : लेखक कई रास्तों पर चलकर अपने अनुभव से इस रास्ते पर आया है कि ढोंगी कानून किसानों की,––गरीबों की, कोई सहायता नहीं कर सकते उल्टे सदैव उनका गला घोंटने के लिए हाथों की फाँसी तैयार रखते हैं।

पर इस जुल्म के सामने आजका इन्सान दबा—पिचला और कुचला हुआ नहीं है। वह समझता है : 'बड़ी-बड़ी सल्तनतें उठगई और आज उनका नामो निशान भी बाकी नहीं बचा। फिर बेचारे चौधरी राघवनारायण के भिड़ाड़ों पर आप कहाँ तक थेकली लगाते रहेंगे ? आज इधर थेकली लगाएँगे कल उधर से फट जायगा। मूंछों का रौब-दौब और सरमाये की ताकत इन्सानियत को नहीं कुचल सकेगी। इन्सानियत रौंद डालेगी आपकी इस वहशियाना नासमझी को, जुल्म को आपके'।

'इन्साफ' हिन्दी उपन्यासों के साथ एक बड़ा इन्साफ है।

१६ जनवरी १९५४] —वीरेन्द्र त्रिपाठी

इन्साफ

: १ :

श्यामू आज बहुत प्रसन्न था। हिन्दुस्तान का राज जो उसे मिल गया। उसकी चाल में मस्तानी अदा थी। पंजों-ही-पंजों के बल चल रहा था। फिरङ्गी को उसने पछाड़ा था और बिना अस्त्र; गाँधी महात्मा की अहिंसा से। तपस्या की थी, श्यामू ने भारत माता की स्वतन्त्रता के लिए। स्वतंत्रता-संग्रामों में भाग भी लिया था। जेल वह कई बार गया था और कई-कई वर्ष यातना भुगती, परन्तु लीडरी हाथ न लग सकी।

लीडरी की इच्छा भी बहुत कम रहती थी श्यामू के दिल में। वह तो एक लगन और उमङ्ग होती थी जिसकी धारा में बहकर वह 'इनकलाब जिन्दाबाद' और 'हमारा देश आजाद हो' के नारे लगाता हुआ आन्दोलनों में शामिल हो जाता था। सन् तीस, चालीस और बयालीस के तूफानी जन-आन्दोलनों में एक वीर सिपाही बनकर श्यामू ने भाग लिया और जेल गया, पर छूटते ही उसके सामने अपने परिवार को सँभालने की समस्या आ खड़ी हुई। राजनीति का पल्ला छोड़कर घर-गृहस्थी का दामन सँभालना पड़ा। और अब उसकी कोई विशेष जरूरत भी नहीं रह गई थी राज-नीति को।

सिपाही का काम करीब-करीब खत्म हो चुका था। हिन्दुस्तान आजाद था। युद्ध-काल व्यतीत हो गया। पतझर का मौसम गया, अब बहार आगई थी गुलशन में।

श्यामू जब-जब भी जेल गया था, उसके परिवार की दशा बिगड़ी और उसका सामाजिक स्तर नीचे गिरा। इधर सन् १९४२ के आन्दोलनमें

जेल जाने पर तो उसके परिवार का ढाँचा ही बदल गया। जब वह जेल में ही था तो उसके पिता का देहान्त हो गया। घर में रह गई उसकी बूढ़ी माँ, स्त्री और दो अनजान लड़के,—या यों कहो कि खर्च-ही खर्च रह गया, आय का सब साधन जाता रहा।

लेकिन श्यामू की स्त्री जगवती, जिसे वह प्यार से जग्गो ही कहकर पुकारता था, कमाल की औरत थी। यह वही औरत थी जिसने बदमाश दारोगा को अपने पैर की जूतियों से पीटा और सिपाहियों को फटकारा था। अपने ससुर के मर जाने पर जग्गो ने ही पूरी गृहस्थी को सँभाला और खेती कराई, एक मर्द बनकर। हल बैलों को थामा [1] और गिरने नहीं दिया अपनी हालत को, किसी भी तरह। खेतों को अपने सामने जुतवाया,[2] मैड़ा दिलवाया [3], बुवाया [4] और फस्ल कटवाई। खेती की, और शान के साथ खेती की।

जग्गो वाकई एक जीदार औरत थी जिसे सारा भीखनपुर मानता था। लेकिन रहम दिल भी इतनी थी कि बस मोम का दिल था उसका। किसी को मुसीबत में देखकर वह वहाँ न जाय, यह हो ही नहीं सकता था। सब से पहले पहुँचती थी जग्गो और जब श्यामू जेल चला जाता, था, तब तो हर जगह उसी को जाना होता था।

आज हिन्दुस्तान की आजादी का दिन था। श्यामू का देश सदियों की गुलामी का काला दामन चीर कर बाहर निकला था; साँस लिया था उसने आजादी का। गुलामी की जंजीरों को श्यामू और देश के नेताओं ने जेलों की कठिन यातनाएँ सहन करके तोड़ा था। बलिदान किया था देश की

१. सम्भाला (maintained)।

२. जमीन में हल चलवाना।

३. जोतने के बाद जमीन में पैदा होने वाले मोटे मिट्टी के ढेलों को फुड़वाने के लिए एक मोटे सपाट लक्कड़ से उसपर मैड़ा दिलवाया जाता है।

४. खेत में बीज डालना।

आज़ादी पर। श्यामू के नेता ने, उस नेता ने जिसने मोती के खजाने को लात मारकर अपने जवाहरातों को देश की स्वाधीनता पर न्यौछावर किया था, आज देश की बागडोर सँभाली थी,—उसे गर्व था अपने नेता पर। उसे लगा कि मानो उसके अपने हाथ में बागडोर आगई थी देश की।

घर में कुछ न रहते हुए भी वह आज बनिये की दूकान से उधार सरसों का तेल लाया। कुम्हार के यहाँ से दीवले[1] मँगाये और रात को जी खोलकर रोशनी की। दीवलों की कतारें लगा दीं अपने मकान की दीवालों पर, बाहर चबूतरे और बैठक पर भी दिये जलाये। दुबारी के बाहर वाले आलों में बड़े दिये रखे। एक कंडील भी टाँगा,—ऐसा कंडील, जैसा कभी उसने दीवाली के अवसर पर भी नहीं टाँगा था।

श्यामू आज दिये जलाने चला तो जग्गो मस्ती में झूमती हुई मुस्कराकर बोली,—"हटो भी; तुम क्या जानो दिये जलाना? दिये जलाना औरतों का काम है।" बात सीधी ही थी, लेकिन एक लोच थी जग्गो के कहने में और उसके नेत्र तो न जाने क्या-क्या कह गये एक हल्के से संकेत में।

"सचमुच औरतों का ही काम है दिया जलाना जग्गो! मेरे घर में तो यह दिया जलता जो दीख रहा है यह सब तेरी ही बदौलत है, वरना कभी का बुझ गया होता। मैं तो कभी ध्यान ही नहीं दे सका इस जिम्मेदारी की ओर।

"लेकिन आज तू जो दिये जला रही है जग्गो! यह देश की आज़ादी के दिये हैं, जिन्हें जलाने के लिए लाखों दीपक बुझे हैं, लाखों घरों में अँधेरा हुआ है,—वीरान बन गये हैं वह घर। आज हमारे बेताज के बादशाह ने देश की राजगद्दी सँभाली है।" श्यामू ने गर्व के साथ कहा। उसे अभिमान था अपने बेताज के बादशाह पर। एक श्रद्धा थी उसके दिल में, अपार स्नेह और कर्तव्य परायणता की धधकती हुई आग।

---

१. मिट्टी की छोटी-छोटी प्यालियाँ सी, जिन्हें दीवाली के दिन आमतौर पर रोशनी करने के लिए जलाया जाता है।

आज श्यामू और जग्गो के गौरव और आत्मसम्मान ने, कहा ही नहीं, ललकारा था उन्हें, बनिये से तेल कर्ज लेकर भी अपने मकान पर रोशनी करने को। फिर देश की आजादी का दिन श्यामू न मनाता, रोशनी न करता? एक तिरङ्गा झण्डा भी जग्गो ने अपने बुकचे [1] से निकाल कर श्यामू को दिया और उसने वह झन्डा एक लम्बे बाँस पर टाँग कर अपनी दुबारी के दरवाजे के ठीक ऊपर लगा दिया, कन्डील के पास।

हल्की-हल्की हवा चल रही थी। कन्डील के प्रकाश में श्यामू और जग्गो ने इस झण्डे को फहराते हुए देखा। झण्डा धीमे-धीमे झटके के साथ कभी-कभी लहरा उठता था। दोनों ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया इस झन्डे को। इसी की छत्र-छाया में श्यामू ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी और विजय प्राप्त की थी,—आज उसी विजय का शुभ दिन था। श्यामू झुक गया उस पताका के नीचे।

श्यामू के लड़के भी इधर-उधर दिये जलाते फिर रहे थे और माँ अपने पीढ़े पर बैठी-बैठी यह मनोहर दृश्य देख रही थी। कई बार श्यामू के जेल चले जाने पर घर में कई-कई दिन तक अन्धकार होता भी उसने देखा था और आज देखा यह आजादी का दिन भी,—मानो पिछले सब घावों पर आज मरहम लगा दिया भगवान् ने। वह तो भगवान् के ही नाम की माला जपती थी, उसे अटल विश्वास था अपने भगवान् पर।

श्यामू आज जीवन में उतना प्रसन्न था, जितना शायद उस दिन रहा हो जब रथ में बैठकर, हाथ में कँगना बाँधे, सिर पर मौड़ रखे, अपनी जग्गो से शादी करने सुसराल गया था। आजादी की सुनहली किरणों का प्रकाश उसके दिल में इस तरह उतर रहा था जैसे जग्गो की रूप-आभा नेत्रों के द्वार से अन्दर घुसकर उसके हृदय में समा गई थी। अलौकिक आभा का सौंदर्य इस समय उसके नेत्रों में क्रीड़ा कर रहा था।

एक स्वप्न था उसके सामने,-दस वर्ष पुराना स्वप्न। भारत आजाद

---

१. गाँव की स्त्रियों के निजी कपड़े रखने का थैला।

होगा और वह आजाद देश का रहने वाला। आजादी में सुख होगा, कपड़ा होगा, खाना होगा और इन्सानियत का अधिकार होगा। सतयुग का स्वर्ग फिर से उतर आयगा भारत की पृथ्वी पर। बकरी और शेर एक घाट पानी पियेंगे। रामराज्य होगा। जनता की आवाज को सम्मान देने के लिए उसका राजा राम अपनी पतिव्रता सीता को भी वन-वास देने पर उतारू हो उठेगा।

गाँधी का सुदर्शनचक्र भारत के कोने-कोने में घूम जायगा और देश की दरिद्रता को इस तरह काटकर फेंक देगा जैसे भगवान् श्रीकृष्ण ने जरा-संध का सिर काट गिराया था।

वह झूम उठा एक बार इस कल्पना के स्वप्न में। श्यामू अपने घर रोशनी करके कस्बे की रोशनी देखने निकला तो दंग रह गया। एक अजीब रौनक थी कस्बे की। रोशनी के अलावा वन्दनवारें भी बँधी थीं कई घरों पर। लाला छेदीमल के मकान पर बड़ी शानदार रोशनी थी। हवेली के चारों ओर की दीवारों पर मोमबत्तियाँ जल रही थीं। दरवाजे पर गैस का हंडा मँगवाकर लगाया था आज लाला ने। वह स्वयं भी अपने एक गाड़ी कुनबे के साथ रोशनी करने में संलग्न था।

लाला छेदीमल भी खूब आदमी था भीखनपुर में। अपने काम-से-काम रखता था। उसकी दूकान पर बिसातखाना, बजाजा, परचून का सामान, अत्तार की दवाइयाँ, बच्चों की तख्ती, कलम, दावात और इनके अलावा भी न जाने कितने किस्म का सामान था। उसके एक लड़के ने चार पान रखकर एक तख्ता दूकान पर ही दूसरी ओर को लगा लिया था और उसपर वह पान के साथ सिगरेट की डिब्बी और बीड़ी भी रखने लगा था।

आज छेदीमल के मन में भी खुशी के लड्डू फूट रहे थे। यह न जानते हुए भी कि आजादी क्या बला है, एक उमंग थी दिल में आजादी की। उसी उमंग में भरकर वह मोमबत्ती-पर-मोमबत्ती जलाता चला जारहा था।

श्यामू हवेली के दरवाजे पर पहुँचा तो लाला छेदीमल की रोशनी को देखकर झूम उठा आजादी के नशे में। एक क्षण खड़ा होकर बोला,—"देखा, लाला छेदीमल! आखिर आज आजादी का दिन आकर ही रहा। अंगरेज

बेचारे को जाना ही पड़ा। गाँधी बाबा की अहिंसा ने सरकार की तोप और बन्दूकों को वह पटखी दी कि बस भागते ही बना।"

"भाई वाकई खूब पटखी दी, गाँधी बाबा ने। बस कमाल ही कर दिया। पर श्यामू! तुम लोगों ने भी क्या कम तकलीफें उठाई? और हमारे चौधरी! उन्होंने तो अपना सब कुछ ही न्यौछावर कर दिया देश पर।" लाला छेदीमल ने कहा।

शामू अपने त्याग की प्रशंसा सुनकर गर्व से फूल उठा, परन्तु तुरन्त ही विनम्र बनकर बोला,—"वाकई, चौधरी राघवनारायण ने त्याग किया है लाला! और सबसे बड़ा त्याग उनका यही था कि वह पुलिस के लाख बहकाने-फुसलाने पर भी कभी अमन-सभा के मेम्बर नहीं बने।" एक सचाई को सामने लाते हुए श्यामू ने कहा।

फिर श्यामू और आगे बढ़ गया। पटवारी के घर भी उसने रोशनी देखी और गाँव के चौकीदार के घर भी। गाँव के पास ही चमारों की छोटी सी बस्ती थी। श्यामू वहाँ भी गया। उसने देखा कि वहाँ भी कुछ घरों के सामने वाले ओटों पर दिये जल रहे थे और 'आजादी' शब्द का उच्चारण भी वहाँ की आपसी बातों में सुनने को उसे मिला। वह सब, अपनी जिस दशा में भी थे, प्रसन्न थे।

श्यामू लौटता हुआ चौधरी राघवनारायण की कोठी के सामने से निकला, वहाँ रोशनी तो थी ही, साथ ही नाच-गाने का भी प्रबन्ध था। एक रौनक छारही थी वहाँ। श्यामू को राघवनारायण ने उधर से निकलते देखा तो अपने कारिन्दे को भेज कर बुलवाया।

श्यामू बस इतनी ही बुलवाने की बाट देखता था, और कारिन्दे के बुलाने को उधर घूमते ही वह स्वयँ उसी ओर को चल दिया। वहाँ पहुँचा, तो चौधरी ने कहा,—"चुपके-ही-चुपके खिसके जा रहे थे श्यामू! आज देश की आजादी का दिन मैंने खूब धूम-धाम से मनाने की ठानी है। क्या खयाल है तुम्हारा?"

"बहुत नेक खयाल है चौधरी साहब!" मुस्करा कर श्यामू बोला; और

चौधरी राघवनारायण ने हाथ पकड़कर उसे अपने पास बिठला लिया, सफेद चाँदनी बिछी चौकी पर।

श्यामू भी आलथी-पालथी मार कर बैठ गया और बहुत रात तक उसने गाना सुना, तमाशा देखा, तथा आजादी का दिन मनाया।

दिन समाप्त हो गया, रात भी विदा होगई, आजादी का दिन एक बीती बात बन गया। श्यामू सुबह उठा तो वही एक हाथ में साँटा, कंधे पर हल और दूसरे हाथ में बैलों के पघे[1] थे और वह अपने खेत की ओर भोर के तड़के[2] चला जा रहा था। उसके पैर एक विचित्र प्रसन्नता के साथ उठ रहे थे। वह भारत की आजाद जमीन पर पैर रखकर आगे बढ़ रहा था। उसके दिल में एक उत्साह था, आजादी का अभिमान था, एक शान थी उसकी चाल में।

हिन्दुस्तान आजाद हुआ। काँगरेसी नेताओं ने सरकार सँभाली और देश के गरीबों को धनवान बनाने का नारा लगाया। श्यामू ने जी-जान से अपने इलाके के चुनाव में काँगरेस के उम्मीदवार को सहायता दी। काँगरेस का उम्मीदवार भी कोई और नहीं, उसके अपने ही गाँव का चौधरी राघवनारायण था, स्वतंत्रता-संग्राम में श्यामू का पुराना साथी,—आन्दोलनों का साथी,—जेलों का साथी; सिर्फ दर्जे का फर्क था। राघवनारायण को बी किलास मिलता था जेल में और श्यामू को सी किलास। सो वह गुलामी का जमाना था और विदेशी सरकार की नीति थी। उसी के विरुद्ध तो संग्राम चल रहा था, जिसमें मानव-मात्र को उसके एक होकर आगे बढ़ने की दुसाई दी जाती थी।

आज सरकार को चुनने वाली थी भारत की जनता। यह जनता की सरकार बनने जा रही थी जिसको जनता के हित का कार्यक्रम बनाना था।

---

१. वह रस्सी जो बैलों की नाँक में बँधी रस्सी में बँधी होती है। इसी के संकेत पर बैल इधर-उधर घूमता तथा चलता है।

२. सुबह-ही-सुबह।

काँगरेसी सरकारें बन गईं। जमींदारी समाप्त होने की धूम देश-व्यापी बनकर भारत की जन-वाणी बनी। देश के सभी राजनैतिक दलों से इसे समर्थन मिला, और बिल पास हो गया। काश्तकारों को भूमिधरों की पदवी, सरकार ने लगान का दसगुना रुपया सरकारी खजानने में जमा करने पर अता की।

श्यामू के पास भी चौधरी राघवनारायण के तीन खेत थे, जिन्हें उसका खान्दान सदियों से जोतता-बोता चला आरहा था। सरकार की बख्शी हुई नियामत[1] की तरफ श्यामू का भी जी लपलपाया। एक लालच-सा उसने अपने अन्दर-ही-अन्दर अनुभव किया, साथ ही उसे अपना अधिकार-सा भी वह लगा। जितने की वह जमीन नहीं थी, उससे न जाने कितने गुना अधिक रुपया वह और उसके पूर्वज चौधरी राघवनारायण और उनके पूर्वजों को दे चुके थे,—बिना रसीद, बिना पर्ची,—ईमानदारी के नाते,—भगवान् को हाजिर नाजिर[2] मानकर। श्यामू को वह रुपया देना था और वह उसने दिया था, साथ ईमानदारी के दिया था।

"जग्गो ! अब तो अपने भी तीन खेत हो जाएँगे। सरकार ने जमींदारी समाप्त करने का बिल पास कर दिया,—कानून बना दिया। बस लगान का दस गुना रुपया खजाने में जमा करना होगा और हम भूमिधर बन जाएँगे।" प्रसन्नतापूर्वक श्यामू ने कोठे के एकान्त में जग्गो की ठोड़ी के नीचे अपनी दो उँगली लगाकर उसे ऊपर उठाते हुए कहा।

जग्गो की आँखें श्यामू की आँखों में समागईं। एक क्षण मौन खड़े होगये दोनों प्राणी और श्यामू ने प्यार से जग्गो के दोनों कंधे पकड़ लिए। जग्गो ने धीरे से पूछा,—"क्या सच ! अब यह हमारे खेत हमारे हो जायँगे ? सरकार हमें ही इनका स्वामी बना देगी ?"

---

१. प्रदान की हुई वह उत्तम वस्तु या धन-राशि जिसके मिलने की पहले कभी स्वप्न में भी आशा न रही हो।

२. साक्षी।

"बिल्कुल जग्गो !" आशा और प्रसन्नता की लहरों में आलोड़ित होकर श्यामू ने कहा।

भारत की स्वतंत्रता का वह देवता, जिसके बलिदानों के फल-स्वरूप इस परिवार को काश्तकार से भूमिधर कहलाने का सौभाग्य प्राप्त होगा, जग्गो के सामने खड़ा था,—यह उसकी श्रद्धा का देवता था,—उसके प्यार का प्रतीक। जग्गो के हृदय में आनन्द की सरिता तरंगित होउठी।

श्यामू ने अपनी माँ के पास जाकर भी यह शुभ समाचार देते हुए उसकी बूढ़ी हड्डियों को अंक में भर लिया,—उठा लिया ऊपर को अपनी दो मजबूत भुजाओं में और छाती से लगा लिया,—ठीक उसी प्रकार जैसे श्यामू की माँ अपनी जवानी के दिनों में श्यामू बालक को कभी लगा लेती होगी।

श्यामू के घर में आनन्द छा गया और श्यामू की ही तरह भीखनपुर के बहुत से परिवारों में इस खबर का हृदय से स्वागत हुआ, अप्रसन्नता छा गई। आम लोग खुश थे, केवल दो-चार आदमियों के ही चेहरे उतरे हुए थे। सो उस ओर किसी का ध्यान नहीं था। गाँव के अधिकांश आदमियों की भलाई थी इसमें।

श्यामू सीना उभार कर गाँव के गलिहारे से निकला। सामने लाला छेदीमल की दूकान थी। श्यामू वहाँ पहुँचा तो लाला ने आदर पूर्वक कहा,–"श्यामू चौधरी ! अब वाकई गाँव की हालत कुछ सुधर जायगी।"

"भय्या ! आजादी इसी का नाम है। अभी और बहुत कुछ होगा जनता की भलाई के लिए। यही दिन लाने के लिए तो गाँधीजी ने अपनी जिन्दगी का बलिदान कर दिया।" श्यामू ने गम्भीरतापूर्वक कहा।

"ठीक कहते हो श्यामू ! हिन्दुस्तान के दिन फेर दिये भगवान् ने। गाँधी महात्मा भगवान् के औतार थे।" लाला छेदीमल ने बोरी के टुकड़े पर बैठे-बैठे दीवार से कमर लगाकर कहा। लाला की यही वह ठेक[1] थी जहाँ सुबह से शाम तक बैठक लगाई थी उसने जीवन भर। जिन्दगी के चालीस वर्ष इसी

---

१. स्थान।

बोरी और दूकान के इसी कोने में बैठकर उसने गुजारे थे । एक दिन पाँच रुपये का सौदा लेकर बैठा था और आज यह दूकान लम्बा-चौड़ा भानमती का पिटारा[1] बन गई थी ।

श्यामू के लिए लाला ने अपनी ओर से पान लगाने को कहा अपने बेटे को और श्यामू ने यह मान का पान बड़े प्रेम से खाया । यह उसके त्याग का मान था जो लाला ने पान के रूप में प्रदान किया,—इसे कैसे मना कर सकता था वह ?

पान मुँह में दबाकर श्यामू अपने खेतों पर गया । खेतों में फसल लह-लहा रही थी । सिर समानी[2] ईख एक खेत में थी, दूसरे में गेहुंओं की बालें लहरा रही थीं और तीसरे में मटर-ही-मटर बिछी पड़ी थी। श्यामू ने देखा यह फसल उसकी थी, यह जमीन उसकी थी और यह आसमान उसका था जिसके नीचे उसके खेत मुस्करा रहे थे, गा रहे थे अपना धीमा-धीमा राग मन्द पवन के शीतल झोकों में । पवन के परों पर खेतों की सुरीली तान और मधुर मुस्कान बिखर कर दूर देशों को अपना संदेश लिए, इठला कर बह रही थी ।

श्यामू ने प्रकृति का ऐसा यौवन आज पहली बार अपने जीवन में देखा। आता वह नित्य ही था इन खेतों पर, परन्तु जो सुख उसे आज इन खेतों पर दृष्टि फैलाने से प्राप्त हुआ उसकी कल्पना भी वह पहले कभी नहीं कर पाया था ।

आज उसे इन खेतों में कुछ विचित्र आकर्षण दिखलाई दिया,—अपनापन-सा । अपनी जिन्दगी का राज़-सा उसे उनमें छिपा दिखलाई दिया और अपनी तथा अपने खान्दान की मेहनत का साकार स्वरूप उनके अणु-अणु में उसने देखा ।

उसने देखा और सुना कि मानो वह खेत हँस रहे थे, बोल रहे थे,

---

१. वह पिटारा जिसमें से जो माँगो वह मिलजाय ।

२. सिर के बराबर ऊँची ।

कह रहे थे श्यामू से,—"श्यामू, हमारी मिट्टी पर तुम्हारा खान्दान सदियों से पलता चला आया है; लेकिन आज पहली बार हमारा और तुम्हारा सीधा आपसी सम्बन्ध बन सका। आज पहली बार हम दोनों को आपस में अपनापन महसूस करने का अवसर मिला।"

श्यामू के नेत्र बन्द होगये खेत के मेढ़ें[1] पर खड़े-खड़े। उसने सतयुग का स्वप्न देखा और अपने नेताओं की बुद्धि तथा दया-भावना की सराहना की। चौधरी राघवनारायण के प्रति इस समय श्यामू के मन में अपार श्रद्धा थी।

---

१. खेत के किनारे पर बनी हुई ऊँची मिट्टी की डौल। यह डौल खेत की सीमा तो बतलाती ही है, साथ ही खेत के पानी को भी खेत से बाहर जाने से रोकती है।

: २ :

जग्गो के पास दो-चार गहने थे, कुछ अपने पीहर के और कुछ उसकी शादी के समय उसकी सुसराल वालों ने उसे चढ़ाये थे। इनमें एक गुलूबन्द, जो जग्गो को बहुत प्यारा था और खिलता भी खूब था वह जग्गो की मोरनी-सी सुराहीदार लम्बी गर्दन में, वह भी लाकर रख दिया उसने श्यामू के सामने।

"जग्गो ! एक ही फसल में बनवा दूँगा यह सब गहने। तू चिन्ता न करना जरा भी।" सब चीजों को रूमाल में बाँधते हुए श्यामू ने कहा।

"बनते रहेंगे सब, इसकी क्या चिन्ता है ? तुम अपना काम करो। यह वक्त शायद फिर नसीब न हो।" गम्भीरतापूर्वक जग्गो ने समझदारी के साथ कहा।

"तुमने ठीक ही सोचा है जग्गो ! सदियों से हमारे बाप-दादे इसी जमीन पर खाते-कमाते चले आये; लेकिन आज तक एक खेत भी अपना न कर सके। आज यह मौका हाथ आया है हमें भी समाज में जरा ऊपर बढ़ जाने का; इसे हाथ से नहीं जाने देना चाहिए।" श्यामू ने कहा।

श्यामू ने चीजें रूमाल में बाँधकर धोबी का धुला कुर्ता पहना। पजामा बदला, जूता पहना, सिर पर किश्तीनुमा दो इन्ची बाढ़ वाली गाँधी-टोपी जमाई और तय्यार था बस वह शहर जाने के लिए। एक उमंग थी उसके दिल में,—वह जा रहा था काश्तकार से 'भूमिधर' बनने।

चीजें बेचकर श्यामू ने सरकारी खजाने में अपनी जमीन के लगान का दस गुना रुपया जमा कर दिया, रसीद ले ली, सरकारी मुहर लगवाकर

और अब वह बहुत खुश था। उसकी आत्मा प्रसन्न थी,—एक काम किया था उसने जो उसके पूर्वज नहीं कर सके। उसने अन्दर-ही-अन्दर एक अभि-और गौरव का अनुभव किया।

संध्या को रसीद लेकर वह गाँव लौटा तो लाला छेदीमल की दूकान पर खड़े होकर कुछ देर बातें कीं। और भी गाँव-बस्ती के लोग वहाँ जमा थे, जिनमें जमींदारी खत्म होने की ही बातें चल रही थीं। सरकार की तारीफ ही कर रहे थे सब लोग। उनके चेहरों पर खुशी के आसार थे और उनकी आँखों में आशा झाँक रही थी। श्यामू को दूर से आता देखकर सब शहर की बातें सुनने के लिए उतावले हो उठे। श्यामू ने आकर सच-मुच ही अपने छोटे से व्याख्यान का दरवाजा खोल दिया। कांगरेस के कार-नामों पर हलकी सी नजर डालकर बोला,—"अब गरीब को भी साँस लेने का मौका मिलेगा। खेती करने वाले किसान की मेहनत और मजदूरी पर उसका अपना अधिकार होगा। वह अपना और अपने बाल-बच्चों का अच्छे किस्म से पालन-पोषण कर सकेगा। उसके मुनाफे को बीच में खाजाने वाला वर्ग अब धीरे-धीरे समाप्त होता चला जायगा।"

श्यामू की बात गम्भीर थी, परन्तु फिर भी उसे समझना उतना कठिन नहीं था। लोगों ने सहृदयता और आशा के साथ उसकी बातों को सुना और भविष्य की कल्पना में खो गये। भविष्य की कल्पना एक सुनहली कल्पना थी उनके जीवन की आशाओं की, सपनों से भरी।

श्यामू ने भी एक स्वप्न देखा और देखा कि उसका भीखनपुर अब पुराना भीखनपुर नहीं रह गया था। भीखनपुर का हर किसान भूमिधर बन गया था और सभी के रहने का मकानों का ढाँचा बदला हुआ था। एक रौनक आगई थी गाँव में। हर आदमी खुशहाल था और जमीन का मालिक वह था जो उसे जोतता और बोता था। उस पर कर्ज नहीं था किसी का। उसकी मेहनत का फल उसे मिलता था। सचमुच ही स्वर्ग उतर आया था आकाश से।

इस स्वप्न की रङ्गीन दुनियाँ में आशा और उत्साह की मौजों के

साथ बहता हुआ श्यामू सरकारी खजाने की रसीद को सीने से चिपकाये अपने घर की ओर बढ़ा। उसके कदम हलके हो रहे थे। वह फूला नहीं समा रहा था आज अपने में। तकलीफ़ें उठाते-उठाते तो उसकी जिन्दगी के चालीस वर्ष व्यतीत हुए थे और मेहरबानियों का बोझ भी कम नहीं था उसके सिर पर चौधरी राघवनारायण की। उन्हें भी वह ढोता हुआ चला आरहा था एक अरसे से। कमर झुक गई थी उसकी। लेकिन आज वह बोझा श्यामू अपने सिर से उतार कर भीखनपुर में घुसा था।

देश को आजादी मिले कई वर्ष व्यतीत हो चुके थे लेकिन श्यामू के शरीर में आजादी के प्रकाश ने आज ही प्रवेश किया था। उसने आज ही अनुभव किया आजादी का सुख। आजादी का सुनहला स्वप्न अपने साकार रूप में आज उसके सामने खड़ा था। वह खुश था, बहुत खुश।

जग्गो दोपहर ढलते ही श्यामू के आने की प्रतीक्षा में आँखें पसारे बैठी थी। बड़ी हँसमुख थी जग्गो। अपनी सास से कभी-कभी हल्का-सा मजाक भी कर डालती थी। सास पीढ़े पर बैठी चर्खा कात रही थी। उसके ठीक सामने जमीन पर एक बोरी का टुकड़ा डाला जग्गो ने भी और उसी पर बैठ गई कपास ओटने की चरखी लेकर। फिर मुस्करा कर बोली,—"माजी! अबतो हम लोग भी भूमिधर बन जायँगे।"

"भूमिधर कैसे री बहू?" चरखा थाम[1] कर बूढ़ी सास से पूछा।

"वह कहते थे कि सरकार अब वह जमीन जो हम जोतते बोते हैं, हम लोगों को देदेगी। हमें लगान का दस गुना रुपया भरना पड़ेगा सरकारी खजाने में, बस!" जग्गो ने कहा।

"दस गुना!" आश्चर्य-चकित होकर जग्गो की सास ने कहा और वह सचमुच स्तम्भित-सी रहगई। "इतना रुपया हम कहाँ से पायँगे बहू? हम तो छमाही और साल का लगान भी न जाने किस तरह पेट काट कर भरते हैं। तुम लोगों को क्या पता श्यामू के बापने वक्त-बे-वक्त अपनी इज्जत

१. रोक कर।

को कैसे सँभाला ? श्यामू ने तो खाक ही छानी है आज तक। बाप मर गया है तब कहीं हल बैलों की ओर ध्यान दिया है । वरना पन्द्रह साल से देख रही हूँ, जब से होश सँभाला है इसने, बस कांगरेस और आजादी का ही भूत सवार रहा है इसके सिर पर ।

"लेकिन बहू ! मैंने तो पहले भी कह दिया था और आज भी कहती हूँ कि यह कांगरेस और आजादी, सब बड़े ही आदमियों की चोचलेबाजी है ।"

जग्गो की सास भी गाँव की एक समझदार औरत थी । जग्गो बड़ा मान करती थी उसका । बहुत कम बोलती थी सामने । जग्गो जो कुछ कह देना चाहती थी इस समय, वह उसने मन में ही सुरक्षित रख लिया, किसी और समय कहने के लिए । परन्तु उसके मन में उमंग थी और कान उतावले हो रहे थे श्यामू के मुँह से यह सुनने के लिए कि वह खेत जिनमें जग्गो बीज-बोने[1] साग तोड़ने और सिल्ला[2] चुगने जाती थी अब उसके अपने थे। उसका अधिकार था उनपर, कोई बेदखल नहीं करा सकता था उसे । उन्हें उसके हाथ से छीनने की शक्ति नहीं थी किसी में । वह मालकिन थी उनकी ।

यह सोचते-ही-सोचते जग्गो के सामने उसके हरे-भरे लहलहाते हुए खेत मुस्कराने लगे । वह मटर की बैंजनी और गुलाबी फूलों से लदी डालें मस्ती में झूम उठीं, वह सरसों के पीले और तरे[3] के सुफेद फूलों से सुशोभित पौदे खेत की हर क्यारी की डौलियों पर खिलखिला कर हँसे, वह गेहूँ की मूंछ-

---

१. हिन्दुस्तान में कुछ जाति विशेष की स्त्रियाँ भी खेतों पर पुरुषों के साथ काम करती हैं । यदि पुरुष हल जोतता है तो स्त्री उसके खूड में बीज डालती है ।

२. फसल कटजाने के बाद खेत में गिरजाने वाले अनाज की बालों को बीनना।

३. तरा भी सरसों की ही किस्म का एक गोल बीज होता है और इसका भी तेल निकाला जाता है ।

दार बालें अपने सतर तूड़ों [1] को लिए हवा के परों पर फहराईं, वह ईख के आपस में प्यार से बँधे हुए गन्ने, जिन्हें बहुत लम्बा होने पर ढह[2] जाने के भय से दस-दस बीस-बीस करके श्यामू ने गन्ने के ही अगौलों [3] से बाँध दिया था, अपना खरखराहट का गम्भीर शब्द करके कुछ कह उठे और जग्गो को लगा कि मानो उसकी फसलें भी आज आजादी का राग अलाप रही थीं।

जग्गो खो गई इस असली आजादी के ख्वाब में और इसी समय उसके कानों ने किसी के पैरों की बाहर गलिहारे [4] में आने की आवाज सुनी। जग्गो के कान खरगोश के कानों की तरह सतर होगये; वह श्यामू के पैरों की आवाज थी; और सचमुच श्यामू आगया।

जग्गो शरमाई और कुछ लजाई-सी वहाँ से उठकर कोठे के सामने वाले छप्पर के नीचे चली गई परन्तु उसके कान अभी भी श्यामू के होंठों से निकलने वाले शब्दों से ही बँधे थे। श्यामू ने खुशी के आवेग में आगे बढ़ कर अपनी माँ के चलते हुए चरखे की हथली को रोक कर उसके सामने बैठ कर कहा,—"माँ! तेरा बेटा अब कारतकार नहीं है। वह भूमिधर बन गया है। वह खेत जिनमें मेरे पुरखा जन्म जन्मान्तर से खेती करते चले आये और उन्हें अपना न बना सके, वह आज मेरे हैं। मैं उनका मालिक हूँ।" और यह कहते हुए उसने जेब से सरकारी खजाने की मोहर लगा हुआ परचा निकाल कर अपनी बूढ़ी माँ के सामने कर दिया।

माँ ने अपने नेत्र श्यामू के नेत्रों में पिरो दिये। उसकी पुतलियाँ श्याम की पुतलियों में समा गईं। वह समझ ही न सकी एक क्षण के लिए तो कि यह क्या होगया, परन्तु धीरे-धीरे अपने को सँभाल कर बोली,—"सच रे श्यामू! तूने भर दिया दसगुना रुपया खजाने में?"

---

१. बाल पर खड़े हुए लम्बे-लम्बे तिनके 'तूड़' कहलाते हैं।

२. गिरजाने

३. गन्ने की चोटी के पत्तों के गुच्छे को अगौला कहते हैं।

४. घर के बाहर वाली छोटी गली।

"हाँ माँ ! उसी की तो परची है यह, सरकारी मोहर लगी है इसपर असली कागज सरकार से आयेंगे ।" श्यामू ने मुस्कराते हुए कहा ।

श्यामू की माँ गद-गद हो उठी । उसने श्यामू को अपनी अंक में भर लिया प्यार से, और भरे ही बैठी रही बहुत देर तक । श्यामू की माँ के लिए यह चमत्कार था, देन थी भगवान् की । उसने कभी स्वप्न में भी यह नहीं सोचा था कि उसका श्यामू एक दिन अपने खेतों का मालिक बनेगा । आज उसके दिल से श्यामू के कांगरेस में आवारा घूमने की जलन आप-से-आप न जाने किधर को बहकर निकलगई । उसने अपने बेटेकी दूरदर्शिता की मन-ही-मन सराहना की और फिर तुरन्त बहू की ओर घूम कर बोली,—"बहू ! तेरे ही सौभाग्य से यह दिन इस घर को देखना नसीब हुआ है ।"

जग्गो घूंघट की ओट में लजाकर अपने में ही सिमट गई । सास के इन चार शब्दों ने उसके कानों में अमृत घोल दिया ।

वहाँ से जग्गो तुरन्त चौके की ओर चली गई । साग उसने पहले ही चूल्हे पर चढ़ाया हुआ था । उसका श्यामू जो भूखा था तमाम दिन का । आज केवल दो ही रोटियाँ ना बाँध कर ले गया था वह शहर को, और वह दोनों रोटियाँ भी ज्यों-की-त्यों नतने में ही बँधी उसके पास थीं । वह भूल ही गया रोटी खाना, भूमिधर बनने की प्रसन्नता में ।

श्यामू अपने वार्ड की काँगरेस कमेटी का प्रधान था । उसका असर भी था इलाके में क्योंकि उसने काम किया था इलाके के आदमियों के साथ मिल जुलकर । श्यामू दोस्त का दोस्त था और दुश्मनी वह किसी से करना पसंद नहीं करता था । कुछ काम भी नहीं पड़ा था उसे आज तक दुश्मनी करने का किसी से । एक बार किसी आन्दोलन के अवसर पर इलाके का दारोगा उसे जरूर अपना दुश्मन समझने लगा था, लेकिन वह भी उसकी खामखयाली ही थी । श्यामू उसका भी दुश्मन नहीं था ।

दारोगा को अपनी गलती महसूस करनी पड़ी, उस दिन, जब भीखनपुर से थाने के रास्ते में उसे एक हजूम-के-हजूम ने घेरलिया और ईंट-पत्थरों की बौछार होने लगी थी उस पर । श्यामू की एक ही ललकार काफी हुई

उस समय उस बवण्डर को रोकने के लिए। दारोगा को झुक जाना पड़ा श्यामू के सामने और श्यामू ने उसे हिफ़ाजत के साथ थाने तक पहुँचा दिया।

श्यामू आज घर से अपने घेर[1] की ओर बढ़ा तो रास्ते में उसकी चौधरी राघवनारायण के कारिन्दे से भेंट हुई। कारिन्दे को मानो सब कुछ मालूम था जो हुआ। उसने छूटते ही कहा,—"कहो श्यामू आज तो तुम भी भूमिधर बन गये।"

कारिन्दे के इन शब्दों में गहरा व्यंग्य छुपा था, श्यामू ने महसूस किया। वह ठिठका कुछ उत्तर देने से पहले; फिर तनिक सँभलकर बोला,—"बन नहीं गया हूं तो बन जाऊंगा। रुपया मैंने जमा कर दिया है खजाने में। फिर पीढ़ियों-दर-पीढ़ियों से जोतता-बोता भी आ रहा है मेरा खान्दान इन तीन खेतों को।"

"ठीक है !" कारिन्दे ने आँखें मटकाते हुए कहा,—"लेकिन श्यामू ! यह चौधरी राघवनारायण की मेहरबानियों का खून कर रहे हो तुम, यह नहीं भूल जाना चाहिए तुम्हें।"

श्यामू सहमा-सा रह गया। चौधरी राघवनारायण के कुछ अहसान अवश्य थे श्यामू पर, उसकी मुसीबतों के समय कभी-कभी मदद की थी उसे, लेकिन क्या वह इसलिए की थी कि श्यामू सदा-सदा उनका काश्तकार ही बना रहे।

फिर वैसा काश्तकार बनकर आज कोई रह नहीं सकता था। आज तो सभी काश्तकार थे। भूमिधर भी तो काश्तकार ही थे, उसने मन में सोचा। कुछ बोला नहीं वह।

श्यामू को चुप देखकर कारिन्दे ने अपनी चाँदी के पोलेदार, पीतल और ताँबे के तारों से मँढी लाठी के ऊपरी ठोक को अपनी दोनों मुट्ठियों में

---

१. गाँव में घर स्त्रियों के रहने का स्थान होता है और घेर पुरुषों के। घेर में गाय, बैल, भैंस इत्यादि जानवर भी बाँधेजाते हैं; तथा खेती का सामान भी रखा जाता है।

पकड़कर अपनी ठोड़ा उसपर जमादी, और बिल्ली-जैसी कंजी आँखों से मुस्कराकर बोला,—"श्यामू ! भलमनसाहत का जमाना ही उठता जा रहा है। जिधर भी देखो खुदगर्जी-ही-खुदगर्जी दिखाई देती है। बस लूट मार मची है, लूट मार। सरकार ने भी लूट खसोट शुरू करदी।

"जब अंगरेज सरकार कुछ करती थी तो हमारे राघव चौधरी भी बड़े भिनभिनाते थे और अब अपनी ही सरकार जुल्म करती जा रही है तो म्याउँ बने बैठे हैं। जबान भी तो नहीं हिलती, जबान भी।"

श्यामू ने कारिन्दे की बात सुनी तो उसे लगा कि चौधरी राघव-नारायण की जमीदारी का असली जमीदार कारिन्दा ही था। आज जमीदारी खत्म होने का दर्द शायद चौधरी राघवनरायण से अधिक इस कारिन्दे को हुआ।

श्यामू मुस्कराकर बोला,—"मुखत्यार साहब ! दर्द दिल में बहुत ज्यादा मालूम देता है। शायद चौधरी को भी इतना रंज न हो जमींदारी खत्म होने का, जितना आपको है। अब वह नजराने और चौथ वसूल करने का जमाना खत्म होगया। लोग बागों को अपने बाल बच्चों को भी तो पालने का मौका मिलने दो।"

कारिन्दे को भीखनपुर इलाके के लोग मुखत्यार साहब कह कर पुकारते थे, क्योंकि इस जमीदारी का स्याह सफेद करना सब इसीके हाथ में रहता था और खुद चौधरी राघवनारायण भी कभी इसके कामों में विशेष हस्ता-क्षेप नहीं करते थे।

कारिन्दा जरा त्यौरी चढ़ाकर बोला,—"श्यामू ! जब किसी का कुछ छिनता है तो दर्द होता ही है। तुम अभी क्या जानो कि दर्द किसे कहते हैं ? कुछ पाने का ख्वाब देख रहे हो तुम तो।"

श्यामू इसके जवाब में कुछ न बोला; लेकिन उसने मन-ही-मन महसूस किया कि सदियों से दूसरों को लूटने-खसोटने वाला इन्सान और उस इन्सान का कारिन्दा भी आज क्या सोचता है। जो खून अंगरेज के मुँह लगा था उइसी खून का स्वादन कारिन्दे महाशय की जबान से भी छू गया है। चाँदी

के पीछे वाली लाठी कंधे पर रखे, मूंछों पर ताव दिये, रेशमी कुर्त्ता पहने और कुर्त्ते में चाँदी के जंजीर वाले बटन लगाये, फाइन की धोती में, पैरों में मुण्डा जूता डाटे शान के साथ भीखनपुर के बेजबान काश्तकारों पर रौब गाँठते और ताकत आजमाते इसकी जिन्दगी बीती है। ऐश ली है इसने जिन्दगी की। अब ताकत हाथ से जा रही है, तो दिल टूटता है, गुस्सा भी आता है।

श्यामू को सचमुच रहम आगया कारिन्दे की दशा पर। उसे लगा कि कारिन्दे के एक संकेत पर नाच जाने वाला भीखनपुर अब मुस्करा रहा था उसके इस क्रोध पर, उसकी इस ऐंठ पर, उसकी इस जलन पर। एक उपहास की सामग्री बन गया था वह।

"आपका नाराज होना जायज [1] ही है मुखत्यार साहब! जिस नजर से आप देख रहे हैं उस नजर से तो वाकई बहुत बड़ा अनर्थ होता चला जा रहा है। जो कल स्वामी था उसे आज भाई-बिरादरी का नाता निभाना पड़ रहा है। जिन्हें कल तक रोटियाँ नसीब नहीं होती थीं वह अपनी रोटियाँ सीधी करने के लिए संघर्ष कर रहा है, और उसके मिलने के कुछ आसार भी उसे दिखलाई दे रहे हैं। यह वाकई अफसोस की बात है।"

श्यामू की यह व्यंग्य पूर्ण बात सुनकर कारिन्दा जल-भुन कर अन्दर-ही-अन्दर खाक होगया। उसके तन बदन में आग लगगई। उसके दाँत होंठो के अन्दर-ही-अन्दर किटकिटाये और वह मन-ही-मन खून का घूंट पीकर रह गया। वह सहन न कर सका श्यामू के इन शब्दों को, उस छोकरे के शब्दों को जिसका बाप हमेशा ही उसके सामने गिड़गिड़ाया था, और गिड़गिड़ाता-गिड़गिड़ाता ही मर गया एक दिन। कारिन्दे के पास एक फ़हरिस्त थी श्यामू के बाप पर किये गये एहसानों की, और श्यामू ने आज यह शब्द कहकर मानो एक ही झटके में वह लम्बी फ़हरिस्त उसके हाथ से झपट कर फाड़ डाली; उसकी धज्जी-धज्जी करके फूंक मार कर हवा में उड़ा दी।

श्यामू मुस्करा रहा था और मुस्कराते हुए ही बोला,—"मुखत्यार साहब!

---

१. उचित, ठीक।

जीने का मौका दीजिये दुनियाँ को। लोगों के सदियों से सूखे और जले-भुने ढाँचों में भी कुछ जान पड़ जाने दीजिये। इन लोगों का भी मुस्कराने और हँसने को दिल करता है। इनकी खुशी देखकर आपके दिल पर नमक नहीं मला जाना चाहिए। बड़ी मुश्किल से आपके भगवान् ने यह दिन भेजा है इन बेचारों के लिए। अपने भगवान् की हाँ-में-हाँ मिलाने की तो आपकी पुरानी आदत रही है। आज देख रहा हूँ कि आप उससे भी अपना नाता-रिश्ता छोड़ते चले जा रहे हैं, जाने क्यों कतरा रहे हैं इतने ?"

"ऐसे व्याख्यान मैं बहुत सुन चुका हूँ श्यामू ! मुझ पर इनका न कोई असर कभी हुआ है और न होगा। जिन बदमाशों के हँसने और मुस्कराने की बात तुम करते हो, उन्हें मैं खूब समझता हूँ।" यह शब्द कहते हुए कारिन्दे की त्यौरी चढ़ी हुई थी, जल रही थीं उसकी आँखें।

श्यामू ने उसकी कोई परवाह नहीं की। वह अपनी धुन में झूमता हुआ मस्त हाथी की तरह घेर की ओर चल दिया। एक कीड़ा-मकौड़ा समझता था वह इस कारिन्दे को। उसने विदेशी सरकार के विरुद्ध सीना-सपर होकर युद्ध किया था, बगावत की थी, लाठियाँ खाई थीं और मुस्कराया था फिर भी। वह जेल गया था, सख्तियाँ सही थीं और विचलित नहीं हुआ था। श्यामू इस कारिन्दे की चढ़ी हुई त्यौरी की भला फिर क्या चिन्ता करने लगा था ?

: ३ :

श्यामू अपने मन में निश्चिन्त था। सरकारी कानून उसके साथ था और अपने तीन खेतों की सीमा पार करके दूसरे के खेतों में घुसने का कभी उसने इरादा नहीं किया था। वह संतुष्ट था अपनी सीमा में, लेकिन उसकी वह सीमा चौधरी राघवनारायण की सीमा के ठीक बीचों बीच पड़ती थी। उनकी सुफैद कोरी चादर पर एक काले धब्बे के समान वह कारिन्दे की नजर में खटकता रहा था।

बड़े ही दूरदर्शी थे चौधरी राघवनारायण भी! उनकी काबलियत की दाद देनी ही पड़ती थी सबको। ऐसा कौन आदमी था इलाके का जो इंकार कर सकता था उनकी होशियारी की दाद देने से? अंगरेजी सरकार के उखड़ते हुए कदमों और छूटते हुए पंजों को उन्होंने कितने ही वर्ष पूर्व भाँप लिया था। फिर इस मामूली जमींदारी के खात्मे की बात और इसके उन-पर पड़ने वाले प्रभावों को परख लेना भला उनके लिए कौन कठिन बात थी। यह सब तो करा-धरा ही उनके अपने हाथों से गया था।

रंज बहुत था मन में लेकिन क्या मजाल जो माथे पर नाम के लिए भी कभी किसी ने कोई शिकन देखी हो। मुस्करा कर ही बातें करते थे हमेशा जमींदारी खत्म होने की भी। "ग़रीब काश्तकारों की भलाई के लिए यह सब किया है हमने। अब हम और आप सब लोग बराबर के काश्तकार हैं,—भाई-भाई, बराबर के।" पिछली बार भीखनपुर में जब आये थे तो उन्होंने कहा था।

तालियाँ बजाई थीं इन शब्दों पर गाँव के सभी लोगों ने और चौधरी

राघवनारायण की जै-जै कार भी गूंज उठी थी गाँव के शान्त वातावरण में। उनके यह शब्द गाँव के लोगों ने सुने, गाँव की दीवारों ने सुने, गाँव के वृक्षों ने सुने, गाँव के जानवरों ने सुने और गाँव के कण-कण ने उन्हें अपने जन-नेता की वाणी, अमर वाणी, के रूप में सुरक्षित रख लिया था अंतर में।

शब्द यह श्यामू ने भी सुने थे और मुक्त कण्ठ से सराहना की थी उनकी। उसका हृदय अपार श्रद्धा से उमड़ आया था। उस समय श्यामू के सामने चौधरी राघवनारायण त्याग और तपस्या की महान मूर्ति के समान विराजमान थे। उसका मन प्यार करता था उन्हें।

चौधरी राघवनारायण जमींदार से काश्तकार बन गये, यह रहस्य था श्यामू के लिए भी, और गाँववाले तो भला समझ ही क्या सकते थे बेचारे, इस राज को ?

श्यामू आज सुबह-ही-सुबह उठकर अपने खेत पर गया तो उसने देखा कि एक ट्रैक्टर[1] उसके पासवाले खेत में खड़ा धक-धक कर रहा था। यह खेत श्यामू के पड़ोसी का था और उसकी याद जहाँ तक भी पीछे जा सकती थी वहीं से वही उसे जोतता-बोता चला आ रहा था; लेकिन आज उसमें उसके हल-बैल नहीं थे।

ट्रैक्टर की सीट[2] पर श्यामू ने दूर से देखा तो वह आश्चर्य से आवक और स्तम्भित-सा रह गया। चौधरी राघवनारायण के कारिन्दे महाशय वहाँ विराजमान थे। बीड़ी पी रहे थे उस पर बैठे, बड़ी शान के साथ। उनकी मूछों में वही तनाव था जवानी का। बाल सफेद जरूर पड़ गये थे, लेकिन वह खिजाब लगा कर काले कर लिए थ।

श्यामू को उधर आता देख जरा गर्दन मोड़ ली कारिन्दे ने।

---

१. ट्रैक्टर एक एंजिन के किस्म की मैशीन है जो खेतों को जोतने, कुएँ से पानी खींचने, ठेला खींचने इत्यादि खेती के बहुत से कामों में आती है। बड़े पैमाने (Large scle) पर खेती करने में इसका प्रयोग होता है।

२. बैठने का स्थान (Seat)

श्यामू ने वहाँ पहुँच कर मुस्कराते हुए कहा,—"मुखत्यार साहब ! जैराम जी की।"

"अरे ! जैरामजी की श्यामू ! कहो भय्या ! अच्छे तो हो।" शब्दों में मिठास भर कर कारिन्दे ने कहा। कभी-कभी यह कारिन्दा मीठा भी इतना हो जाता था कि कोई उसकी कर्कशता को नहीं भाँप सकता था। कड़वी कुनेन पर खाँड मँढ़ जाती थी।

"सब मेहरबानी है तुम्हारी मुखत्यार साहब ! आप तो मजे में हैं न !" श्यामू ने पूछा।

"अरे ! मजा-वजा कहाँ रह गया है अब श्यामू ! अब तो किसी तरह जिन्दगी के आखिरी दिनों को धक्का देने की बात है। सोचता हूँ थोड़ी-सी रह गई है, इसे भी गुजार दूँ। मालिक की बेखैरख्वाही न हो कोई इस जिन्दगी में। जिसका नमक खाया है, उसे हलाल करके दिखा दूँ।"

"खयाल तो आपका बहुत नेक है मुखत्यार साहब ! आप जैसे पुराने ईमानदार आदमी से और कोई उम्मीद ही भला क्या कर सकता है ? आपकी ईमानदारी की ही तो बदौलत चौधरी राघवनारायण ने, स्याह-सफेद, कुछ भी कर देने की आपको छूट दे रखी है।" श्यामू ने कहा।

"इसमें क्या शक है ? चौधरी ने जिस यकीन और विश्वास के साथ अपना काम मुझे सौंपा है, उसे उसी यकीन और विश्वास के साथ निभाना मेरा फर्ज है।" गम्भीरता पूर्वक कारिन्दे ने कहा।

"और आप निभा भी रहे हैं पूरा-पूरा। आप से अच्छा शायद वह खुद भी नहीं निभा सकते मुखत्यार साहब !" श्यामू ने मन की बात मन में छुपाये हुए कहा।

श्यामू सोच रहा था कि उसके पड़ौसी के खेत में कारिन्दे का ट्रेक्टर आज क्यों खड़ा था ? उसे दिखलाई दिया कि मानो यह शत्रु उसके खेत की सीमा से आकर टकरा जाना चाहता था, परन्तु मन के भावों को मुख पर नहीं आने दिया और गम्भीरता पूर्वक कारिन्दे की तारीफ़ ही करता हुआ मुक्त कण्ठ से बोला,—"मुखत्यार साहब ! कोई माने या न माने,

आप तो अपना फर्ज पूरी तरह निभा रहे हैं।"

कारिन्दा अपनी तारीफ के शब्द सुनकर अन्दर-ही-अन्दर प्रफुल्लित हो उठता था, उसकी बाछें खिलजाती थीं; और हृदय के गम्भीरतम राज उभर कर जबान पर आजाते थे। अपनी तारीफ में वह स्वयं व्याख्यान-माला की झड़ी लगा डालता था और भूल जाता था एक क्षण के लिए आपसी वैमनस्य को भी।

दिल का बुरा आदमी नहीं था कारिन्दा भी, लेकिन फर्ज के सामने किसी का खून करडालने में भी उसे संकोच नहीं होता था। इन्सान का खून कर डालना उसके लिए बाँये हाथ का काम था। इस माने में बेरहम भी था वह, लेकिन उसके रहम की कहानियाँ भी आस-पास के देहात में कम मशहूर नहीं थीं। यों खुद एक नामी डकैत रह चुका था वह अपनी जवानी के दिनों में, और जेल से छूट कर आने पर ही चौधरी राघवनारायण के पिता से उसकी भेंट हुई थी। उसे सुरक्षा प्रदान की थी चौधरी साहब ने, और कारिन्दे के पद पर भी सुशोभित किया। उस दिन से आज तक यह वही डकैत प्रहरी बना हुआ था उनकी जमीदारी का और क्या मजाल जो उनकी इस सम्पत्ति की ओर कोई आँख भरकर भी देख पाता। भीखू कारिन्दे की हरदम लाल अंगारों के समान दहकती हुई आँखों के सामने पड़ने की ताब नहीं होती थी आस-पास के के किसी भी आदमी में। इलाका-का-इलाका लोहा मानता था भीखू का।

लेकिन भीखू भी एक अजीब शान का इन्सान था। जहाँ एक ओर जमींदार की कौड़ी-पाई वसूल करने में वह काश्तकार की हड्डी फोड़कर भी उसमें से पैसा निकालने की सोचता था वहाँ दूसरी ओर मौका पड़ने पर उनकी आग में कूदजाना भी उसे आता था। भीखनपुर की आन पर मरता था भीखू कारिन्दा। कल्लू धोबी की धोबिन को सीकरी के मेले से सैंकड़ों लाठियों के बीच से उठा कर भाग आना भीखू का ही काम था। रामू जुलाहे की औरत को मय उसके जेवर के पीहरवालों के रोक लेने और उसका दूसरा कराव कर देने की धमकी को ललकारने और रामू के साथ उसे लिवालाने का दम भीखू में ही था। गाँव में डकैतों के घुस आने पर शेर की तरह उनपर टूट

पड़ने और और अपने चाँदी के पोलेदार लाठी का जौहर दिखाने की आन भी भीखू की ही भुजाओं में थी। इसी तरह के छोटे-मोटे कारनामों का तो भण्डार भरा पड़ा था भीखू की राम-कहानी में।

भीखू के इन कारनामों की ओर जब कोई संकेत करदेता था तो भीखू फिर एक इन्च आगे नहीं बढ़ सकता था। स्वयँ सुनाना शुरू कर देता था अपनी राम-कहनी, और बड़ी ही तन्मयता के साथ सुनाता था।

आज श्यामू के मुख से अपने फर्ज की अदायगी[1] की बात सुनकर तो मानो उसने अपना कार्यक्रम ही खोलकर रख दिया श्यामू के सामने। वह अपने स्वाभाविक स्वर में बोला,—"फर्ज की क्या बात पूछोगे श्यामू ? फर्ज के लिए तो यह जिन्दगी ही गला डाली। एक बचन देदिया था चौधरी के बाप को, बस उसी की टेक के लिए सब कुछ कर रहा हूं, और करता रहूँगा जब तक इस शरीर में प्राण बाकी हैं। चौधरी का अहित होता इन आंखों से भीखू नहीं देख सकता।"

"दे ना भी नहीं चाहिए मुख्तयार साहब !" गम्भीरता पूर्वक श्यामू ने कहा।

"श्यामू ! यह ट्रेक्टर इसी लिए खरीदवा कर मँगाया है मैंने। मैं भी देखता हूँ सरकार कहाँ तक सताती है हमें ?" गम्भीरता पूर्वक कारिन्दे की जबान से निकला।

श्यामू ने कारिन्दे के यह गम्भीर शब्द सुने और वह चुप रह गया। कारिन्दे का निश्चय उसने भाँप लिया। वह इतना मूर्ख नहीं था कि कारिन्दे की मोटी बातें भी न समझ पाता और इतना अन्धा भी नहीं था कि दिन को दिन और रात को रात न देख सकता।

कारिन्दे का ट्रेक्टर धक-धक करके चल पड़ा। ट्रेक्टर का मिस्तरी उसे चला रहा था और कारिन्दा उसी के पास बैठा एक अजीब शान के साथ सामने फैले हुए खेतों पर नजर जमाये था। ट्रेक्टर चलता चला जा रहा

---

१. कर्त्तव्य निभाना।

था, छोटे-मोटे डौलों को तोड़ता-फोड़ता, झाड़ झंकाड़ों को जड़ मूल से उखाड़ता-पछाड़ता और समतल करता हुआ तमाम भूमि को। श्यामू ने देखा कि ट्रैक्टर के खूड़[1] में पुराने सब खूड़ समाते जा रहे थे। उनका अस्तित्व ही जड़मूल से समाप्त होता जा रहा था। ट्रैक्टर की जुताई के बाद यह दिखलाई देना भी बन्द हो गया कि वह वहाँ मौजूद थे कभी। यह दृश्य देखते-देखते श्यामू आतंकित-सा हो उठा। उसका हाथ जो अपने हल की हत्थी पर रखा था काँपने लगा और उसे लगा कि मानो उसके हल का खूड़ भी उस ट्रैक्टर के खूड़ में समाता जा रहा था। श्यामू को सर से पैर तक पसीना आ गया। उसकी पिंडलियाँ काँपने लगीं। उसका बदन थरथरा उठा और हृदय की धड़कन बढ़ गई।

हल रुक गया, श्यामू के बैल खड़े हो गये। श्यामू का सिर जोर से चकराने लगा।

इसी समय श्यामू की दृष्टि गाँव की ओर गई तो उसने देखा जग्गो सिर पर बासी रोटियों का बोहिया रखे अपनी मस्तानी अदा के साथ निर्भीक शेरनी के समान झूमती हुई आ रही थी। उम्र अधेड़ थी उसकी लेकिन यौवन का उभार अभी कम नहीं हुआ था, किसी भी तरह। उसके हर कदम में एक खिंचाव था, हर निगाह में एक आकर्षण था और थी उत्साह और उमङ्गों की जवानी, जो बचपन और बुढ़ापा दोनों पर मुस्कराती थी। इस मुस्कराहट में प्यार और सेवा की शक्ति लिए जग्गो इठलाती हुई श्यामू की ओर बढ़ी तो श्यामू ने महसूस किया कि मानो उसके बदन में फिर से जान आ गई। उसकी ढीली पड़ती हुई नाड़ियों में फिर से रक्त-प्रवाह तीव्र हो उठा और उसका क्षीण होता हुआ उत्साह-सागर एक नये जोश के साथ तरङ्गित होने लगा। उसे लगा, मानो उसे बल मिल गया,—एक साथी का बल।

श्यामू ने हल गहरा जमीन में गाड़ कर बैलों के कंधे से जुआ उतार दिया

---

1. हल चलने पर उसकी फाली से जो जमीन खुदती है उसकी गहरी लकीर बनती जाती है। उसे खूड़ कहते हैं।

और खेत की डौल के पास खड़ी छोटी सी कीकर[1] की ओर बढ़ चला। जग्गो उसी पेड़ की छीदी-सी छाया के नीचे अपना रोटियों का बोहिया रखकर जा बैठी थी।

एक लोटे में छाछ और मिस्सी नमक की दो रोटियों पर गुड़ और अचार रख कर श्यामू के हाथ में देती हुई जग्गो बोली,—"आज चौधरी का ट्रैक्टर आ ही गया। बड़ा शोर मचाया हुआ था कारिन्दे ने इसका गाँव में।"

"हाँ जग्गो! और देख नहीं रही हो, सब खेत भी मिला कर इसने एक कर दिये। हमारे पड़ौसी बिन्दा के खेत भी तो जोत डाले, सब के सब।" श्यामू ने कहा।

"उँह! बिन्दा भी कुछ आदमी है मरा! उसका पेट तो कुआ है, कुआ। कभी भरता ही नहीं। दो लड़की बेच के खा गया तब भी उसका पूरा नहीं पटा। अब इन खेतों के भी सुना है कारिन्दे ने कुछ रुपये दिला दिये उसे चौधरी से।" जग्गो ने कहा।

"यह बात है।" श्यामू ने कहा। "मैं भी तो सोच रहा था कि कैसे कारिन्दे ने अपना ट्रैक्टर बिन्दा के खेती में दे दिया। आखिर अदालत भी तो कोई चीज है। सरकारी कानून की भी तो कुछ ताकत है।"

बात खत्म हो गई। श्यामू का भय उस समय जाता रहा।

जग्गो गाँव की बातों की श्यामू से अधिक खबर रखती थी।

---

१. बबूल का पेड़।

: ४ :

श्यामू संध्या को हल बैल लेकर गाँव लौटा और घेर में हल यथा-स्थान रखकर बैलों को उनकी खोर [1] पर बाँध दिया। जग्गो वहाँ पहले से ही मौजूद थी। जग्गो ने कुट्टी काट कर ढेर लगाया हुआ था। जब से श्यामू ने कुट्टी काटने का मशीनदार गँडासा लगा लिया था, जग्गो को बड़ी सहूलियत हो गई थी कुट्टी काटने में। आनन फानन में पाँच छै पुलियाँ[2] फर्र-फर्र काट कर फेंक देती थी अकेली ही।

श्यामू के बैलों को बाँधते ही जग्गो ने टोकरा भरकर चारा उनके सामने डाल दिया। दिन भर के थके-भूके बैल चारे पर जुट गये, खाने के लिए। जग्गो फिर चने के चून [3] की टोकरी उठा लाई और चारे पर उसकी बुरकी [4] देकर अपने दोनों हाथों से उसे मिलाने लगी। बैल चारा खाते-खाते बड़े प्यार से निहाते जाते थे जग्गो के मुख पर,—वह खाना खिला रही थीं उन्हें, ठीक उसी तरह खिला रही थी जैसे वह अपने दोनों लाड़ले बेटों को खिलाती थी चूल्हे के सामने बिठलाकर।

श्यामू आज रोजाना की तरस खेतों से लौट कर अपने जानवरों की

---

१. चारा खाने का स्थान।

२. चारे की बँधी हुई एक प्रकार की गठिया ,जो कि चरी इत्यादि के पौदों को इकट्टा करके उसी के दो चार फैड़ों को मेंठा देकर , उससे बाँध दी जाती है।

३. आटा।

४. हलका-हलका बखेरना।

देखभाल पर न जुट सका । उसके प्यारे बछड़े ने श्यामू के घेर में घुसते ही उस का प्यार पाने के लिए लालच भरी दृष्टि से देखा, उसकी बछेरी[1] हिनहिनाई,[2] उसकी गाय रम्भाई[3] और छोटे-मोटे सभी लवारों[4] ने उसकी ओर देखा परन्तु श्यामू का ध्यान किसी और ही बात में तल्लीन था । जग्गो से बिना कहे ही घेर से बाहर निकलकर वह सीधा पटवारी के घर की ओर बढ़ चला ।

रास्ते में लाला छेदीमल से भेंट हुई, और वह मुस्कराते हुए बोला,—"श्यामू चौधरी, अब तो अपने गाँव में भी ट्रैक्टर आगया । लेकिन भाई है खूब ! बीस-पचास आदमियों और चालीस-सौ बैलों का काम अकेला ही सिपटा[5] लेता है । क्या गड़-गड़ करके चलता है, मानो अपने सामने किसी को बर्दाश्त ही नहीं करता । इस साल खूब पैदावार होगी भीखनपुर के इलाके में ।"

"जरूर होगी लाला छेदीमल ! लेकिन उस पैदावार से भीखनपुर और इसके रहने वाले किसानों को क्या मिलेगा ?" हो सकता है कुछ नाज तुम्हारी मार्फत बिकने से कुछ तुम्हारे आढ़त के पैसे अच्छे बन जाय, लेकिन भीखनपुर के अन्य किसी आदमी को इसका कोई लाभ नहीं ।" श्यामू ने स्पष्ट और गम्भीर उत्तर दिया ।

श्यामू की बात का कोई उत्तर नहीं था लाला छेदीमल के पास, परंतु फिर भी एक जलन-सी ही पैदा की उसके दिल में इस उत्तर ने । उसे लगा कि श्यामू लाला छेदीमल की भी बढ़ती आय को देखकर प्रसन्न नहीं और उसके मन में चौधरी राघवनारायण का ट्रैक्टर भी खटक रहा था । कुछ

१. घोड़ी की बच्ची को बछेरी कहते हैं ।
२. घोड़ी के बोलने को हिनहिनाना कहते हैं ।
३. गाय के बोलने के शब्द को रम्भाना कहते हैं ।
४. जानवरों के बच्चे ।
५. समाप्त करना ।

अधिक न कहते हुए केवल इतना ही कहा लाला ने,—"श्यामू चौधरी ! भगवान् ने जिसे ताकत दी है, वह तो आजमाता ही है उसे। लेकिन दूसरों की तरक्की को देखकर जलना बुरी बात है भय्या !"

"जरूर बुरी बात है लाला छेदीमल ! लेकिन जल कौन रहा है ? मैं तो एक सचाई को सामने रख रहा हूँ। तुमने रास्ता चलते मुझे टोक दिया, तो मैंने इतनी बात कहदी, वरना मैं तो तुमसे कुछ कहने नहीं आया।

"रही बात ताकत की, सो ताकत आदमी को पागल बना देती है, बेईमान बना देती है। इन्सान वही है जो ताकत पाकर भी बेईमान न हो, उस का सही-सही इस्तेमाल करे।

"मैं तुमसे ही पूछता हूं कि क्या इस ट्रेक्टर से भीखनपुर और भीखनपुर के रहने वालों का कुछ भला होने वाला है ?"

यह प्रश्न भारी था लाला छेदीमल के लिए। इस विषय पर कोई भी मत प्रकट करके वह व्यर्थ का बवंडर अपने सिर पर नहीं लेना चाहता था। चौधरी राघवनारायण के कारिन्दे भीखू से वह थर-थर काँपता था। उसकी तनी हुई मूछों के बाल सामने आते ही उसे थरथरी आने लगती थी और उसकी चाँदी के पोले वाली लाठी का खोदा[1] तो उसे कभी भूलता ही नहीं था। लाला छेदीमल की मोटी तोंद पर वह खोदा अक्सर मजाक में भी आकर जम जाता था भयभीत कर डालता था उसे। लाला छेदीमल भीखू की दया का पात्र था।

भीखू की खातिर करने में भी लाला छेदीमल कभी आना-कानी नहीं करता था। उसके सामने आते ही थली छोड़कर खड़ा हो जाना और उसकी खातिर में जुट जाना वह अपना धर्म समझता था। एक छोटी सी मूढ़ी उसने बढ़ई से खास भीखू कारिन्दे के ही बैठने के लिए बनवाई थी। भीखू के बैठते ही किशमिश और छुआरों से उसकी खातिर की जाती थी, मूंग-

१. लाठी के आगे के सिरे से किसी को मारना, खोदा मारना कहलाता है।

फलियाँ भी खूब शौक से खाता था भीखू यहाँ बैठकर,—और इस सब का कभी एक पैसा भी माँगने की जुरत लाला नहीं कर सकता था,—माँगने का कभी खयाल भी नहीं किया उसने।

लेकिन भीखू कारिन्दा भी बड़ा रहमदिल आदमी था लाला छेदीमल की नजर में। काश्तकारों का अनाज जब वह चौधरी राघवनारायण के लिए तोलता था तो मन का पैंतालीस सेर उसका धर्म का तोल होता था और अगर कभी अपनी-सी पर आता था तो मन का पचास सेर भी तोलते उसे भाँपना कठिन था। तराजू चलाने में कमाल हासिल था उसे। क्या मजाल जो तराजू की डंडी उसकी आज्ञा का उलंघन कर सके।

फिर इसी तरह जब वह चौधरी का माल आड़त के लिए तोलता था तो उसमें भी वही हाथ की सफाई काम देती थी। भीखू लाला छेदीमल की इस हाथ-सफाई से पूरी तरह परिचित था, परन्तु कभी उसमें रोक-टोक करना वह अपना छोटापन समझता था। रिआया का माल रिआया पर ही तो जारहा था,—और इस मामले में वह हमेशा दरियादिली[1] से काम लेता था। गाँव में कोई भीखू को चाहे कुछ भी समझा करे, लेकिन लाला छेदीमल की नजरों में वह देवता था,—उसके बाल बच्चों को पालने वाला देवता।

श्यामू के पास अधिक समय नहीं था यहाँ व्यर्थ खराब करने के लिए। लाला छेदीमल की विचार-धारा बहकर कहाँ तक पहुँच सकती थी, श्यामू इससे अपरिचित नहीं था। उसकी दूकान, उसके बाल-बच्चे और तराजू की काट-छाँट तक ही लाला छेदीमल की दुनियाँ थी। इससे बाहर की बातों पर दिमागपच्ची करना वह व्यर्थ समझता था। गाँव में ट्रैक्टर आया, बहुत अच्छा हुआ। नहीं आया, तो उनकी उससे कोई विशेष हानि नहीं। चौधरी का कारिन्दा भीखू उस पर पहले भी मेहरबान था और आज भी। ट्रैक्टर आने-न-आने से उसपर कोई असर नहीं हुआ। वह मौन था।

---

1. खुला दिल।

श्यामू लाला को यों ही खड़ा छोड़ आगे बढ़ गया। उसकी गति में तीव्रता थी। पटवारी के घर पहुँचकर श्यामू ने उनको आवाज दी। पटवारी घर पर ही था, तुरन्त बाहर निकल आया।

"आओ श्यामू चौधरी, बैठो।" पटवारी ने घर के बाहर छप्पर में पड़ी खटिया की ओर संकेत करके कहा।

"बैठने का समय नहीं है पटवारी जी! जरा-सी तकलीफ देने आया था आपको।" श्यामू ने कहा।

"तकलीफ किस बात की श्यामू चौधरी! मैं तो सेवक हूँ गाँव भर का।" विनम्र भाव से पटवारी ने कहा। "आज्ञा करो मुझे तो! और फिर आजकल तो राज है श्यामू चौधरी, तुम्हारा। तुम्हारी आज्ञा न मानेंगे तो भला रहेंगे कहाँ?"

"मजाक कर रहे हो पटवारी जी! राज तो बड़े-बड़े आदमियों का है, हमारा क्या राज? लेकिन हाँ, कुछ ऐसा जच जरूर रहा है कि शायद सरकार गरीब आदमियों को भी साँस लेने का मौका दे। शताब्दियों से दम घुटता चला आ रहा है गरीबों का।" श्यामू बोला।

"इसमें क्या शक है श्यामू चौधरी! हम तुम जो सच पूछो तो पिसने के ही लिए पैदा हुए हैं। भगवान् की माया है और उस माया पर पार भी नहीं बसाती कुछ अपनी। आदमी बेचारा है ही क्या चीज, भाग्य के हाथों में खेलने वाला एक पुतला ही तो है।" पटवारी ने बहुत गम्भीरतापूर्वक सैद्धान्तिक वातावरण बनाते हुए कहा।

श्यामू इस प्रकार के भाग्यवाद में विश्वास नहीं रखता था। परिस्थितियों को ही लोग परेशानी में भाग्य नाम से पुकारने लगते हैं, उसका ऐसा विश्वास था। अंगरेजी शासन-काल में भारत का भाग्य गुलामी था। श्यामू ने उस भाग्य को छिन्न-भिन्न करने के लिए संघर्ष किया था और उसे सफलता मिली थी उसमें। पटवारी के भाग्य-विवेचन से वह सहमत नहीं था परन्तु फिर भी उसने विरोध में कुछ न कहना ही उचित समझा। बात बदलकर वह अपने मतलब पर आगया और बहुत नम्र शब्दों में बोला,—"तकलीफ

यह देनी थी पटवारी जी ! कि मुझे अपने खेतों की काश्त [1] की खसरे [2] से नकल लेनी है। कृपया वह मुझे उतार दीजिये आप।"

"खसरे की नकल ! यह तो आपने पेचीदा सवाल कर दिया इस समय श्यामू चौधरी ! आपको क्या कुछ पता नहीं है कि जमींदारी खत्म हो रही है और सरकार ने सब रजिस्टर तहसील में मँगा लिए है। हमें तो नई सरकार पुरानी सरकार के बेईमान कारिन्दे समझती है, चौधरी साहब ! हमारे पास इन कीमती कागजात को कौन छोड़ता है ?

"लेकिन आपकी खिदमत तो हमे करनी ही होगी। हजार तालों के बीच से भी आपका काम करके लाना होगा हमें।"

बात पटवारी ने इस अदा से की, कि श्यामू रीझ उठा। अविश्वास करने का कोई कारण ही नहीं रहने दिया पटवारी ने।

श्यामू प्रसन्नतापूर्वक पटवारी के मकान से लौट आया।

पटवारी श्यामू को अपनी ड्योढ़ी पर देखते ही ताड़ गये थे कि हो-न-हो यह महाशय खसरे की नकल लेते आये थे।

पटवारी बातें करने में बहुत पटु था और गम्भीर भी इतने था कि किसी काम के अंतिम निर्णय होने से पूर्व उनके भाव को जान लेना किसी आदमी के लिए एक कठिन समस्या थी।

इधर जब से जमींदारी समाप्त होने का चक्र देश में चला था, तबसे पटवारी का महत्त्व गाँव और आसपास के इलाके में बहुत बढ़ गया था। अच्छे-अच्छों को आजकल उनकी ड्योढ़ी पर माथा रगड़ने के लिए आना होता था। अनेकों परिवारों के भाग्य पर स्याह या सफेद रेखा खींच देना इस समय उनके लिए बाँये हाथ का काम था। उनके तनिक से संकेत पर बिना एक खूड वाला अच्छा खासा भूमिधर और एक जमींदार, निराधार बिना एक खूड वाला बन सकता था।

---

१. खेती करने का हक।

२. यह पटवारियों का वह रजिस्टर होता है जिसमें हर फसल की काश्त और उसके काश्तकार का नाम दर्ज होता है।

सैकड़ों को बना दिया ऐसा ही पटवारी ने,—उसे गर्व था अपनी इस दैविक शक्ति पर। उसकी कलम में इस समय राम बोलता था, राम लिखता था। भाग्य-विधाता बनी हुई थी उसकी कलम भीखनपुर और भीखनपुर के आसपास के देहात की।

श्यामू प्रसन्न चित्त जा रहा था अपने घर की ओर लपका हुआ। संध्या की गोधूलि में झुटपुटा [1] सा होता चला जा रहा था रात्रि के तिमिर का। पक्षी आसमान पर झुंड-के-झुंड बनाये अपने घोंसलों की तरफ तीव्र गति से उड़े जारहे थे। सूर्य देवता पश्चिम दिशा के गोलाकार आकाश की अंतिम रेखा तक पहुँचकर मानो पृथ्वी में घुस रहे थे, केवल दो चार लाल-पीली रेखाएँ भर रह गई थीं नीलाम्बर में। वायु का वेग भी इस समय ढीला पड़ गया था,—थक गई थी दिन भर के परिश्रम के पश्चात् वायु। अंग शिथिल पड़ गया था उसका, और परों में अब तीव्र उडान भरने की शक्ति अवशेष नहीं रह गई थी,—आराम करना चाहती थी वह। वृक्षों की चोटियों पर पर फैला दिये थे उसने अपने और वृक्षों ने भी उसे सम्भाल लिया था अपनी अंक में,—प्यार के साथ,—दुलार के साथ।

जग्गो राह देख रही थी श्यामू की। श्यामू को दूध निकालना था अभी भैंस का और गाय का दूध लेकर वह घर को जाना चाहती थी। उसे पता था कि उसके बेटे स्कूल से पढ़कर आ चुके होंगे।

श्यामू के दोनों बेटे मोहन और कान्हा भीखनपुर के पास ही मुरादनगर कस्बे के प्राइमरी स्कूल में पढ़ने जाते थे। चार मील पैदल चलकर जाना होता था उन्हें पढ़ने के लिए। संध्या को स्कूल से छुट्टी पाकर घर आते-आते रात हो जाती थी उन्हें। और जब आते थे तो भूख से ताऊँ-बिलाउँ [2] हो जाते थे दोनों। जग्गो को ढोरों [3] का चारा डालकर गाय का दूध निकालते

---

१. हलका-हलका अन्धकार।

२. तिलमिला उठना।

३. जानवरों।

ही घर पहुँचने की रहती थी अपने लालों के लिए खाना बनाने की।

श्यामू को आते देख जग्गो मुस्करा कर बोली,—"बड़ी देर लगादी कहीं। मोहन और कान्हा भूख से छटपटा रहे होंगे।"

"तू जल्दी से जा मोहन की माँ! मुझे वाकई ध्यान ही भूल गया था इसका।" घेर की ओर तेजी से कदम बढ़ाते हुए श्यामू ने कहा। "कान्हा को बड़ी भूख लगी होगी।"

"और मोहन को नहीं?" मुस्करा कर चलती-चलती जग्गो बोली।

"मोहन फिर बड़ा है।" श्यामू ने कहा।

श्यामू ने घेर में जाकर कटिया [१] के गले का घुन्डा [२] खोल दिया और वह भैंस के नीचे जाकर दूध चूँखने [३] लगी। थोड़ी ही देर में भैंस पवास [४] आई। श्यामू ने कटिया को पकड़ कर एक ओर खूंटे से बाँध दिया और स्वयँ दुहावनी [५] लेकर दूध निकालने बैठ गया। अपनी दुहावनी डटाडट [६] किनारे तक भरकर श्यामू ने कटिया के गले का घुंडा फिर खोल दिया और वह भी उछलती, कूदती, फुदकती दौड़कर अपनी माँ के थनों से चिपट गई। खूब जी भर कर दूध चूँखा उसने और भैंस ने भी प्यार से अपनी थूथड़ी [७] घुमा-घुमाकर अपनी बच्ची को निहारा, चुमकारा।

श्यामू दूध की दुहावनी लेकर घर की ओर बढ़ा तो रास्ते में चौधरी राघवनारायण की कोठी पड़ती थी। कोठी बड़ी आलीशान थी। आधी में

---

१. भैंस का मादा बच्चा।

२. जेवड़े। वह रस्सी का फन्दा जिसमें जानवरों को बाँधा जाता है।

३. जानवर के थनों से दूध पीने को चूँखना कहते हैं।

४. थनों में दूध उतर आना।

५. मिट्टी की वह हँडिया जिसमें दूध निकाला जाता है।

६. ऊपर तक भरकर।

७. मुँह।

रब और आधी में सब वाला हिसाब था। अर्थात् लगभग आधे गाँव का इलाका घेरा हुआ था। कोठी के सामने का चौक ही कोई पाँच बीघे की चार दीवारी से घिरा हुआ था। दगड़े [1] से लगा ऊँचा दरवाजा था, जिसके सींखचोंदार, लोहे के, किवाड़ थे,—पुराने जमाने के। दोनों ओर के दो खम्भों के ऊपर दो शेरों के मुँह बने हुए थे पत्थर के। सामने एक लम्बा-चौड़ा विशाल बराँडा दिखलाई देता था, जिसमें बीस-पच्चीस मूढ़े पड़े रहते थे हर समय। मूढ़े हिरन की खालों के मढ़े हुए थे और चौधरी राघवनारायण का कहना था कि वह सभी खालें खरीदी नहीं गई थीं, बल्कि उनकी बन्दूक का निशाना बनाकर ही लाई गई थीं वहाँ।

कोठी के दरवाजे के अन्दर संध्या के धुँधले प्रकाश में श्यामू की दृष्टि गई तो उसे प्रेत के सामन चौधरी का ट्रेक्टर सामने खडा हुआ दिखलाई दिया। कोठी के इसी दालान में एक दिन श्यामू ने हाथी झूमता देखा था और उसके भारी-भारी पैरों के वजन का अन्दाज लगाकर श्यामू का दिल दहलता था। उसने देखा था ईख की पूलियाँ-का-पूलियाँ उस हाथी को चबा-चबा कर सटकते हुए; और एक-एक गन्ने की पोरी के लिए गिड़गिड़ाते, तरसते भी उसने भीखनपुर के रेंदना-फेंदना [2] से धूल भरे बालकों को देखा था।

आखिर मौत ने ही भीखनपुर की छाती पर से उस हाथी के भारी पैरों को समेटा,—और श्यामू ने एक संतोष की साँस ली थी उस दिन। श्यामू बहुत पढ़ा लिखा नहीं था लेकिन भीखनपुर के लोगों की भलाई-बुराई के कामों को समझने-की पैनी बुद्धि थी उसके पास। आज यह चौधरी राघवनारायण का दानव जैसा ट्रेक्टर उसकी आँखों में आकर इस तरह चुभ गया था मानो किसी ने लाल सुर्ख आग का जलता हुआ सूँआ लाकर भौंक दिया हो। उसकी आँखों की पुतलियाँ खून बरसा रही थीं। यह ट्रेक्टर चौधरी राघवनारायण को भूमिधर बनाने का औजार था।

---

१. रास्ता।

२. छोटे-मोटे।

ट्रैक्टर से जलन नहीं थी श्यामू को, उसे जलन थी ट्रैक्टर की चाल से। वह उसकी दृष्टि से गाँव की जमीन पर नहीं चल रहा था; वह चल रहा था गाँव की सूखी हड्डियों वाले कंकालों की छातियों पर, इन्साफ की दुहाई देता हुआ,—अपने को भूमिधर कहकर।

यह भीखनपुर के जमींदार चौधरी राघवनारायण का ट्रैक्टर नहीं था, यह था भीखनपुर के भूमिधर श्री राघवनारायण एम० पी० का प्रगतिशील हल,—वह हल जो देश की भुखमरी में अन्न की कमी की पूर्ति का बीड़ा उठाकर दैविक शक्ति के साथ आगे बढ़ा था। इसके सिर पर वरदान था गाँधी महत्मा का, आशीर्वाद था देश के नेता का, प्रधान मंत्री का।

श्यामू थोड़ी देर खड़ा रहा; कुछ सोचता रहा और फिर अपने घर की ओर बढ़ गया।

घर पहुँचा तो दोनों लड़कों ने 'पिताजी नमस्ते' कहकर श्यामू का अभिवादन किया।

"नमस्ते बेटा!" कहकर श्यामू ने भी मोहन को बुलाते हुए दूध की दुहावनी उसके हाथ में दे-दी।

घर के मंगलमय वातावरण में पहुँचकर श्यामू ने देखा कि वहाँ वास्तव में सुख था। जग्गो चूल्हे पर मकी की रोटियाँ पो रही थी, पानी के हाथ की।[1] श्यामू की माँ खाट पर बैठी थी रजाई में लिपटी। उसने साँझ से ही अपनी पुरानी हड्डियों को सर्दी के आघात से बचाने के लिए रजाई में छिपा लिया था, परन्तु बैठी-बैठी भी वह बेकार नहीं थी,—काम कर रही थी उसी तरह जुट कर। दिन मे जो सूत काता था उसे अब सरसों के तेल की रोशनी में अटेरन[2] पर अटेरने में तन्मयता के साथ जुटी थी। उसके

१. मकी की रोटियाँ पलोथन लगाकर नहीं पोई जातीं। यह पानी में हाथ भिगोकर कर ही बनाई जाती हैं।

२. चर्खे के सूत की पिंदियों को बुनने के लिए अटेरन पर अटेर कर आटी बना ली जाती हैं।

अटेरने में वह संलग्नता थी कि जो शायद ही किसी पुजारी की माला के जाप में मिलनी सम्भव थी।

श्यामू अपनी माँ के पास जाकर बैठ गया। बेटे को देखकर माँ ने एक घड़ी के लिए अटेरन बन्द करके कहा,—"श्यामू ! कुछ पता भी है, तेरा मोहन पहले नम्बर पर पास हुआ है अपने छमाही के इम्तहान में।"

"सच !" प्रसन्नता में गद्‌गद् होकर श्यामू ने कहा।

"और कान्हा ने भी दूसरा दर्जा पाया है।" माँ बोली।

श्यामू ने स्नेहातुर होकर मोहन और कान्हा की ओर देखा और उसके हृदय में आनन्द का साम्राज्य छा गया। वह तल्लीन हो उठा एक सुख की कल्पना में।

: ५ :

जमींदारी समाप्त होने की लहर भीखनपुर और भीखनपुर के आस-पास के देहात में बड़े जोर-शोर के साथ चली। लोगों के मुरझाये हुए चेहरे खिल उठे। देहातों का रङ्ग बदलता दिखलाई दिया शुरू में तो, लेकिन ज्यों-ज्यों दिन गुजरे और घटनाएँ सामने आईं तो एक रूप-रेखा ही अजीब-सी बनती चली गई भीखनपुर में।

दखली और बेदखली का जाल फैला; रोकने की सरकार ने उसे भी कोशिश की और कानूनन कोशिश की; लेकिन आखिर इन्साफ़ पसन्द सरकार थी; योंही किसी का गला नहीं घोट सकती थी वह, मीयाद उसे निश्चित करनी पड़ी। घर की रक्षा करने वाले किसान को यदि रक्षा करने का अधिकार सरकार ने दिया था तो सदियों से निरन्तर उसे लूटते-खसोटते रहने वाले डाकू को भी निकल भागने का अवसर प्रदान करना उसका फर्ज था, और वह फर्ज सरकार ने हर तरह पूरा किया,—मुआवजे [1] के साथ, काश्तकार के हाथ से जमीन छीन लेने की मीयाद [2] के साथ।

मुआवजा श्यामू भर चुका था सरकारी खजाने में, और मीयाद के साथ अब उसे जद्दोजहद करनी थी;—संघर्ष उसे स्पष्ट सामने दिखलाई दिया। काना-फूँसी गाँव के वातावरण में अच्छादित थी। तुषारापात बहुत सी आशाओं और आकांक्षाओं पर हुआ और न जाने कितने स्वप्न चौधरी राघवनारायण के मस्तिष्क और उनके कारिन्दे की करामातों से टकराकर चकना-

---

१. बदला, परिवर्तन।

२. किसी कार्य के समाप्त होने की एक निश्चित अवधि।

चूर होगये, और उनकी हिम्मत भी पस्त होगई, लेकिन श्यामू ने नाहिम्मत हो जाना नहीं सीखा था। संघर्ष उसे प्रिय था और फिर सचाई के लिए तो वह पहाड़ से टकराया था एक दिन ! इनकलाब का नारा बुलन्द किया था उसने !

"मेरे सामने मेरी नौकरी का सवाल है श्यामू चौधरी !" आज पंद्रह दिन इधर-उधर करने के पश्चात् पटवारी ने श्यामू से स्पष्ट कह दिया। "मैं रसीद नहीं दे सकता। यह सच है कि इन तीन खेतों को पुश्त-दर-पुश्त से तुम लोग ही जोतते बोते चले आरहे हो, लेकिन खसरे और खतौनी में कहीं पर भी तुम्हारा नाम नहीं है।

"मैं मजबूर हूँ, तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता।"

"तो अदालत में गंगाजली हाथ पर रखकर यह कहोगे कि श्यामू इन खेतों को नहीं जोतता था। अपनी आस-औलाद के सिर पर हाथ रखकर यह स्वीकार करोगे कि तुम्हारे खसरे और खतौनी में जो लिखा है वह सब ठीक है, इन्साफ है ?" श्यामू ने तिलमिला कर पूछा।

"मुझे यही कहना होगा श्यामू ! अपनी आस औलाद का पेट भरने के लिए मुझे उसकी झूठी कसम भी खानी होगी।" गम्भीरतापूर्वक पटवारी ने कहा।

"तो ठीक है पटवारीजी ! तुम जो मुनासिब समझो कहना, लेकिन मैं इंसाफ के लिए अदालत का दरवाजा एक बार जरूर खटखटाऊँगा, और मुझे यकीन है कि अगर इन्साफ कोई चीज है तो वह इस बेईमानी और दगाबाजी के सिर पर चढ़कर बोलेगा।" श्यामू ने निर्भीकता के साथ कहा,—उसकी आवाज में एक कड़क थी,—विद्युत की कड़क।

श्यामू के उठकर जाते ही वहाँ चौधरी राघवनारायण का कारिन्दा आकर जम गया। पटवारी ने उसे विशेष खातिर के साथ अपने सिरहने बिठलाया और अपने हाथ से खड़े होकर उसकी चिलम भरी। फिर प्रेमपूर्वक दोनों हुक्का सुट्याने [1] के लिए बैठ गये। बातें शुरू होगईं और शुरू भी वह

१. खूब मौज के साथ लम्बे-लम्बे कश खींचकर हुक्का पीना।

श्यामू की ही गर्मागर्म बातों से हुईं। पटवारी ने मुस्कराते हुए चुटखियाँ ले-लेकर पूरी दास्ताँ कारिन्दे को सुनाई तो कारिन्दा मूँछों पर ताव देकर सीना निकालता हुआ बोला,—"हूँ! तो अदालत का दरवाजा खटखटाना चाहता है श्यामू! अभी नादान छोकरा है। पीसकर रखदूंगा, पीस कर। क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरुवा। मै कहता हूँ पटवारी! उसे अपनी औकात [2] नहीं भूल जानी चाहिए। उसी चौधरी के खिलाफ अदालत का दरवाजा खटखटायगा जिसने इसके खान्दान की परवरिश की है। मैं जानता हूँ जो कुछ चौधरी राघवनरायण ने इसके खान्दान के लिए किया है।"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं? आपसे ज्यादा और जान ही कौन सकता है मुखत्यार साहब! और फिर आपने क्या कुछ कम किया है? हम लोगों की तो पिताजी के जमाने से आप ही देख-भाल करते चले आरहे हैं।" एक खुशामदाना तरीके से दीनतापूर्वक पटवारी ने कहा।

"मैं इसे नमकहरामी मानता हूँ पटवारी! दो-दो दाने के लिए इसे मौहताज न कर दूं तो मेरा नाम भीखू नहीं। और फिर आज चौधरी राघवनारायण से टक्कर लेने चला है यह श्यामू, जब कि इलाके का दारोगा तो क्या, जिले का कलट्टर भी खड़ा होकर उन्हें कोठी के बाहर तक छोड़ने आता है।" बड़े गर्व के साथ कारिन्दे ने कहते हुए अपनी गर्दन को दो-तीन बार इधर-उधर घुमा कर आँखों की त्योरी को चढ़ाया। "यह मेरी आँखों देखी बात है पटवारी! कानों सुनी नहीं।"

"मैं सब कुछ जानता हूं मुखत्यार साहब! सब कुछ जानता हूँ। और फिर आपके ताल्लुकात क्या कुछ कम हैं। सच जानो, अदालत में रौनक आ जाती है आपकी शक्ल देखकर। चपरासी से लेकर अहलमद तक, सब की बाछें खिल जाती हैं, चेहरों पर मुस्कराहट दौड़ जाती है। बड़ा मानते हैं सब आपको।" पटवारी ने कहा।

"अरे! मानना क्या है पटवारी! बात यह है कि किसी की हक-

---

२. हैसियत, बिसात (Status)

तलफी [1] करना तो यारों ने सीखा ही नहीं। एक का सवा देता आया हूँ हमेशा से। और मालिक भी जानता है मेरी इस दरियादिली [2] को। लेकिन वाह रे शेर! क्या मजाल जो आज तक कभी हिसाब-किताब के बारे में एक बात भी कही हो। बस, जो लिखा दिया सो लिख लिया।" अभिमान के साथ कारिन्दे ने कहा।

"क्यों नहीं, क्यों नहीं मुखत्यार साहब! यह भाग्य की बात है कि आप दोनों की बेलाग जोड़ी बन गई। तभी तो रियासत का चर्खा आज भी उसी रफ्तार के साथ चल रहा है। क्या मजाल जो कहीं से भी एक ही पंखड़ी ढीली पड़ गई हो। आपकी इस अक्लमन्दी पर कौन मूर्ख है जो आपको दाद नहीं देगा।" पटवारी ने कहा।

"लेकिन हमें अफसोस है इस मूर्ख श्यामू पर, पटवारी! यह बरबाद हो जायगा।" कारिन्दे ने कहा।

"लेकिन आप कर भी क्या सकते हैं इसमें मुखत्यार साहब! श्यामू के तीन खेत आपके फार्म के बीचोंबीच पड़ते हैं। और फिर खेतों से भी बड़ी तो उसकी अकड़ है, जिसे हरगिज बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। आपको तो वह कुछ समझता ही नहीं।" पटवारी ने बात लगाकर कहा।

"अच्छा!" आँखों की त्यौरी चढ़ाते हुए कारिन्दा बोला।

अवसर ठीक समझकर पटवारी और भी दीन बनता हुआ बोला,—"लेकिन मुखत्यार साहब! मैंने उससे साफ-साफ कह दिया है कि वह आपके पैरों की खाक के बराबर भी नहीं है। खसरे और खतौनी [3] की नकल माँगने आया था। मैंने साफ इंकार कर दिया,—मैं नहीं दे सकता।"

"लेकिन वह तो पटवारी! तुमने हमें देने के लिए कहा था। तुम लाये नहीं अभी तक तहसील से कागजात?" कारिन्दे ने पूछा।

---

१. हक न देना।

२. रहम दिली, खुला खर्च करने की आदत।

"लाता कहाँ से मुखत्यार साहब ! बस पैसे की परेशानी ने तबाह[१] कर दिया मुझे तो। कहीं का भी तो नहीं छोड़ा। एक परेशानी हो तो कहूँ भी आपसे। लेकिन काम चल ही रहा है किसी तरह आपकी बदौलत। सच जानिये उस दिन जो आप दो सौ रुपये देखकर गये थे, उनमें से कसम खाने को भी जो मैंने एक रुपया छुआ हो। इन हुक्कामों की खातिर करते-करते नाक में दम है। यों ऊपर से देखने को तो कुछ भी नहीं हुआ, लेकिन अगर हिसाब लिखाने बैठ जाऊँ तो शायद दो सौ की जगह सवा दो सौ का हिसाब बन जायगा।

"सच जानिये मुखत्यार साहब ! तनखा भी मेरी तो हुक्कामों को ही खुश करने में निकल जाती है।"

पटवारी ने यह बात बहुत गम्भीरता पूर्वक कही और फिर मुख-मुद्रा भी उतनी ही गम्भीर बनाली; परन्तु कारिन्दे के मुख पर मुस्कान ही नाच रही थी। अपनी जाकट की जेब से उसने करारे-करारे तीन नीले नोट निकाल कर सामने करते हुए कहा,—"बहुत भूख बढ़ती जा रही है पटवारी ! इस साल में तीन हजार रुपया कमवा चुका हूँ।"

"मुखत्यार साहब खादिम हूँ आपका।" रुपया हाथ में थामते हुए पटवारी ने कहा। "इसी लिए तो चौबीसों घन्टे आपकी खिदमत को तैयार रहता हूँ। नौकरी सरकार से पाता हूँ और काम आपका करता हूँ।"

"खाली बातों का खाना छोड़कर अब काम की बात करो पटवारी !" कारिन्दे ने कहा।

"कल हर हालत में हो जायगा आपका काम। आज ही तहसील जाता हूँ खाना खा कर; आप बेफिक्र रहें।" पटवारी ने मुस्कारते हुए कहा।

यह आश्वासन पाकर कारिन्दा खड़ा हो गया और चलते-चलते बोला,—"उस श्यामू के बच्चे को मुँह न लगाना। दूर से ही डाटते-फटकारते रहना। मैं सब देख लूँगा। कोई चिन्ता की बात नहीं।"

---

१. बरबाद।

"आप ही के भरोसे तो भीखनपुर में इतने दिन से पड़ा हूँ मुखत्यार साहब ! आप के रहते पटवारी को भला क्या चिन्ता करनी पड़ी है ?"

कारिन्दे के चले जाने पर पटवारी ने उन तीन करारे नोटों को बड़े मोह के साथ देखा और देखता ही रहा बहुत देर तक। पटवारी ने सरकार की जमींदारी समाप्त करने की नीति की हृदय से सराहना की। उसकी प्रसन्नता का आज पारावार नहीं था। आजकल रुपयों में खेल रहा था पटवारी। चौधरी राघवनारायण का यही कारिन्दा जो पहले अपना सब काम कुछ चरी की पूलियों [1], जङ्गल की लकड़ी, उपले, कुछ अनाज, गुड़, कपास इत्यादि देखकर करा लेता था,—और उसपर भी धौंस रखता था अपनी; वही अब भाई बिरादरी के नाते गिड़गिड़ा कर कराता था,—साथ ही भेंट भी करारी चुकानी पड़ती थी उसे।

एक दिन वह भी था जब मामूली चमार या भंगी को भेजकर यही कारिन्दा पटवारी को अपने दरबार में बुलवा लिया करता था और आज यह दिन भी था कि कारिन्दे का दरबार ही गायब हो गया था, उसे स्वयँ ही आना होता था पटवारी के दरबार में। पटवारी एक गौरव का अनुभव कर रहा था अपने अन्दर-ही-अन्दर। सरकार के मौजूदा रौब-दौब का सेहरा अपने सिर बाँधे पटवारी आज गाँव का विधाता था।

रुपये उठाकर उसने अपने कोट की जेब में रख लिए और तुरन्त खाना खाकर तहसील के लिए रवाना हो गया। भीखनपुर की तहसील लगभग तीन मील के फासले पर थी; जहाँ के लिए पैदल ही यात्रा करनी होती थी। पटवारी झूमता और इठलाता हुआ जा रहा था तीन सौ रुपये की गर्मी में।

तहसील को जाने की सीधी बाट [2] श्यामू के खेत के डौले से होकर

---

१. जानवरों के लिए चरी जुआर के पेड़, का चारा।

२. रास्ता। बाट गाँव में उस रास्ते को कहते हैं जिसपर केवल आदमी ही चल सकते हैं ताँगे या सवारी नहीं। राहगीर यह सीधा रास्ता (Short cut) बना लेते हैं।

गुजरती थी। पटवारी अपनी कदीमी[1] पौशाक में इठलाता हुआ आगे बढ़ रहा था। वही घुटनों से नीचा कोट, गर्म, जिसे लगभग सात वर्ष पहले उसने बनवाया था,—काला बन्द गले का; पजामा अलीगढ़ फैशन का, और पैरों में सलीम शाही जूतियाँ[2] थीं,—नरी[3] की; आँखों पर सुनहली कमानियों वाला चश्मा था और सिर पर अब फैल्ट टोपी नहीं थी—गाँधी जी की टोपी थी साफ सुथरी,—कलफ से जिसकी दीवारें सतर खड़ी थीं।

श्यामू हल जोत रहा था अपने खेत में। पटवारी खेत के डौले पर आया और उसकी दृष्टि श्यामू पर गई तो उसका दिल आप-से-आप धक्क-धक्क करने लगा। वह समझ न सका अपने दिल की दशा, लेकिन उसने महसूस किया कि मानो वह कुछ कह रहा था। पटवारी के पैरों की गति पर भी आप-से आप इसका प्रभाव पड़ा। उसने चाहा कि वह किसी तरह श्यामू की नजरों से अपने को बचाकर निकल जाय, लेकिन पैर तो मानो जड़ होते जा रहे थे।

श्यामू ने पटवारी को इधर आते देखकर दूर से ही पहचान लिया था। उसके मन में घृणा थी इस समय पटवारी के प्रति। चन्द दिन पहले जब वह पटवारी से मिला था तो उसके प्रति श्यामू के मन में श्रद्धा भी कोई विशेष न सही पर वह उसे एक इन्सान समझता था, लेकिन अपने बाल-बच्चों के सिर पर हाथ रखकर झूठी कसम खा जाने वाले को श्यामू इन्सान नहीं मानता। श्यामू ने उससे बात करनी पसंद नहीं की, उसकी तरफ देखा भी नहीं।

पटवारी समझ गया कि श्यामू उससे नाराज था और वह श्यामू के स्वभाव से भी अपरिचित नहीं था। पटवारी के पैर श्यामू के खेत के डौले पर

---

१. पुरानी।

२. सलीम शाही जूतियाँ मेरठ के आसपास के देहात में विशेष रूप से पहनी जाती हैं। देसी जूती भी इन्हें कहते हैं। मुगल शहजादे सलीम ने इनकी ईजाद की थी।

३. नरी एक मुलायम किस्म का चमड़ा होता है।

पहुँच कर आप से आप रुक गये। उसे लगा कि मानो वह कुछ अनर्थ करने जा रहा था। परन्तु एक क्षण ठिठक कर उसने फिर धीरे-धीरे आगे बढ़ना प्रारम्भ कर दिया। अभिमानी श्यामू की तरफ से उसने अपनी मनोवृत्तियों को एक झटका देकर खींच लिया। मन-ही-मन कहा, 'इतना अभिमान! आखिर किस बात पर। मैं इसके बाप की उमरों[1] का हूँ और इसने 'जै राम जी की' करनी भी पसंद नहीं की, देखा भी नहीं मेरी ओर।' पटवारी के मन में श्यामू की शक्ल देखकर जो हल्की-हल्की गैरत अंकुरित हुई थी उसे पटवारी ने अपनी जूतियों की तली के नीचे कुचल दिया और अभिमान के साथ सीना-सपर होकर आगे बढ़ गया,—बोला नहीं एक शब्द, वह भी।

इसी समय जग्गो श्यामू की बासी रोटी लेकर आगई और श्यामू ने हल बैल छोड़ दिये।

श्यामू रोटियाँ हाथों में लेकर खाने बैठा तो खा न सका। एक भी टुकड़ा उसके हलक से नीचे न उतरा।

दशा को भाँप लेना जग्गो के लिए कठिन नहीं था। वह मुरझाई-सी, अनजान-सी सकपका कर बोली,—"क्या बात है आज? रोटी क्यों नहीं खाई जाती?"

"कोई खास बात नहीं है जग्गो!" एक लम्बा दर्द-भरा साँस खींचकर श्यामू ने कहा और फिर नैनों में निराशा लिए जग्गो की ओर देख कर बोला, "जग्गो! मैं गलत ही समझा था कि दिन फिर गये हैं हमारे।"

"मैं मतलब नहीं समझी तुम्हारा।" आश्चर्य-चकित होकर जग्गो ने श्याम के मुख पर निगाह जमाते हुए कहा।

"लेकिन जग्गो! तुम निराश न होना उसे सुन कर जो मैं तुमसे कहने जा रहा हूँ।" और इतना कह कर श्यामू फिर मौन हो गया।

श्यामू कहना चाहते हुए भी जग्गो से कुछ न कह सका। लेकिन गाँव की अफ़वाह जग्गो के कानों तक पहुँच चुकी थी। वह अपरिचित नहीं थी

---

१. आयु

उस राज़ से जिसे श्यामू छिपाना चाहता था।

जग्गो मुस्करा कर बोली,—"इतनी ज़रा-सी बात पर रोटी नहीं खाई जा रही। रोटी नहीं खाओगे तो लड़ाई कैसे लड़ोगे इन्साफ के लिए ? क्या अपने इन्साफ की दुहाई को दुनियाँ के लिए मज़ाक उड़ाने को छोड़ दोगे ?"

जग्गो के शब्दों ने श्यामू को नीचे से ऊपर तक झंझोड़ डाला,—हिला दिया उसके शरीर और मस्तिष्क के अणु-अणु को। उसे लगा कि मानो जग्गो ने उत्साह के साथ उसके दबते हुए आत्म सम्मान में फिर से ज्वाला प्रज्वलित कर दी। बुझती हुई चिंगारी पर वेगपूर्ण झोंके का प्रहार किया, दहका दिया उसे। श्यामू को अपने शिथिल होते हुए अङ्ग में स्फूर्ति का आभास हुआ। उसने स्नेह, प्रेम और श्रद्धा के साथ जग्गो के मुख पर ताका,— वह मुस्करा रही थी। एक अलौकिक कान्ति विराजमान थी उसके मुख-मण्डल पर। एक नशीला संदेश दे रहे थे जग्गो के मद-भरे नेत्र। जग्गो की पुतलियों में श्यामू ने झाँक कर देखा, तो देखा एक बढ़ावा था वहाँ, खिंचाव नहीं।

"मैंने सुना है कि चौधरी के कारिन्दे ने तुम्हें खाक में मिलाने की कसम खाई है। पटवारी को अभी-अभी तीन सौ रुपये दिये हैं उसने हमारे खेतों की चौधरी के नाम में काश्त लिखवाने के लिए। लाला छेदीमल की दूकान पर बड़ी शान के साथ कारिन्दे ने यह सब कहा है।"

"लाला छेदीमल की दूकान पर !" श्यामू ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ ! कान्हा ने अपने कानों से सुना है।"

"तब ठीक है।" एक निश्चय-सा करते हुए श्यामू ने कहा।

जग्गो मुस्करा रही थी उसी तरह, और मुस्कराते हुए ही बोली,— "तब ठीक क्या है ? लाला छेदीमल तुम्हारी गवाही देने वाला नहीं।"

और वास्तव में हुआ भी वही,—श्यामू का यह भ्रम भी टूट गया। संध्या को जब मसला लाला छेदी मल के सामने आया तो उनकी श्यामू के प्रति सहानुभूति में तो किंचित मात्र भी कमी नहीं थी, लेकिन अदालत में जाकर चौधरी राघवनारायण और कारिन्दे से दुश्मनी मोल लेने का साहस वह न कर सके। ऐसी इन्साफ की वेदी पर वह अपनी जिन्दगी भर की जोड़ी-

जँगोड़ी दूकानदारी को स्वाहा करने के लिए उद्यत नहीं थे। उन्हें भीखनपुर में रहना था; और भीखनपुर में रहने के लिए चौधरी राघव नारायण और उनके कारिन्दे की चिलमबरदारी[1] किये बिना काम नहीं चल सकता था,—यह बात कोई राज नहीं था, सभी जानते थे।

फिर लाला छेदीमल को कारिन्दे से लाभ भी बहुत था। यह दूकान यदि वास्तव में देखा जाता तो चल ही उसकी बदौलत रही थी। वरना कैसे यह लाला की पक्की हवेली बन पाती? चौधरी राघव नारायण की कोठी के बाद पक्का मकान लाला छेदीमल का ही था भीखनपुर में।

लाला ने साफ कह दिया—"भय्या श्यामू! चौधरी लोगों के बड़े-बड़े मामलों से हमें दूर ही रहने दो। बाकी वैसे हमारी पूरी-पूरी हमदर्दी तुम्हारे साथ है।"

लाला छेदीमल की सूखी और जबानी हमदर्दी को लेकर श्यामू अपने घेर में लौट आया। जग्गो ने जो कुछ कहा था वही सामने आया, लेकिन श्यामू इस समय निराश नहीं था। वह दृढ़ था अपनी बात अदालत के सामने रखने को।

---

१. खुशामद।

: ६ :

जग्गो ने खेत पर श्यामू को उत्साहित करने के लिए चाहे जो कुछ भी कहा हो, लेकिन उसे यह अब स्पष्ट दिखलाई दे रहा था कि उनके वह तीन खेत उसके पास नहीं रहेंगे। परन्तु फिर भी उसने साहस को हाथ से नहीं जाने दिया। श्यामू के गत संघर्षमय जीवन से जो कुछ भी जग्गो के हाथ लगा था, वह साहस ही था। पहली बार सन् १९३१ के नमक-आन्दोलन में जब श्यामू जेल गया था तो जग्गो गौन्हिआई [1] आई थी,—जीवन की नई आशाएँ और नई उमंगें लेकर। सजीला जवान था उसका बन्ना, [2] श्यामू, घूँघट की ओट से उसने झाँक कर देखा था और सखी-सहेलियों ने भी उसका यही वर्णन किया था। गौने से आकर एक दिन मिलने भी न पाई कि श्यामू को थाने के सिपाही गिरफ्तार करके ले गये।

जग्गो दूर तक जाते हुए श्यामू को खड़ी-खड़ी देखती रही,—आँसुओं से उसका कुर्ता भीग गया था। उसका सिर चकरा उठा था और वह बेहोश होकर वहीं किवाड़ों [3] की चौखट के पास मुरझाई कलिका के समान ढुलक पड़ी थी, आपत्ति के आघात से,—सह न सकी थी वह। परन्तु फिर तो श्यामू का जेल जाना और लौट कर आना जग्गो के लिए कोई नई बात नहीं रह गई थी, और सन् बयालीस में जब श्यामू फरार हुआ तो एकान्त में जग्गो ने

---

१. शादी के बाद गौने की रस्म होती है। गौना होकर बहू का सुसराल में आना गौन्हिआई आना कहलाता है।

२. दूल्हा।

३. दरवाजे के फाटक।

मुस्कराते हुए उसे रात्रि के अंधकार में नहीं, चन्द्रमा के प्रकाश में, अपने घेर के पीछे से रात्रि के बारह बजे माथे पर तिलक देकर 'अन्तिम विदा' कहते हुए अपनी श्रद्धा के पुष्प उस देवता के चरणों पर चढ़ाये थे।

जग्गो जानती थी कि श्यामू जो भी कदम उठायेगा, उसमें हो सकता है उसके घर और परिवार की बरबादी ही चाहे हो परन्तु वह इन्साफ का कदम होगा और उसके लिए जग्गो को कभी गाँव में सिर नीचा करके नहीं चलना पड़ेगा।

गाँव में जो कार्यवाहियाँ चल रही थीं उनकी काना-फूँसी पुरुषों की ही भाँति औरतों में भी चलती थी। एक-एक करके गाँव की छोटी-बड़ी सभी औरतें जग्गो के पास आईं और सभी ने जग्गो को समझाया। जो ज्यादा समझदार थीं उन्होंने कहा,—"बहू! श्यामू को समझाना तेरा काम है। बाल-बच्चेदार आदमी हो। बड़ों से झगड़ा मोल लेना अच्छी बात नहीं।"

साधारण दिमाग वाली औरतों ने कहा,—"बहू! हो तो यह अन्याय ही रहा है, लेकिन बड़ा जो कुछ भी करे वह सब ठीक ही है। उसे कोई बुरा नहीं कहेगा और तुम्हें सब नासमझ ठहराएँगे। श्यामू को समझा-बुझाकर कहो कि चौधरी के कारिन्दे से माफी माँग ले। वह खेत न सही कहीं और गिरी-पड़ी जमीन का एक आध टुकड़ा मिल जायगा चौधरी से।"

जो आपस में झगड़ा लगाने वाली चालाक औरतें थीं उन्होंने कहा,—"जग्गो! बड़ा जुल्म हो रहा है तुम पर। यह कारिन्दा बड़ा ही जालिम आदमी है। गाँव भर की निगाह इस समय श्यामू पर टिकी है और सब जानते हैं कि यदि उसे कोई सबक दे सकता है तो वह श्यामू ही है। श्यामू का नाम सुन कर थर-थर काँपता है कारिन्दा।"

जग्गो ने मुस्करा कर यह सब सुना। किसने किस पहराये[1] में बात की यह, जग्गो जानती थी। कारिन्दे से माफी माँगने की बात सुनकर वह तिलमिला उठी थी और श्यामू को बली का बकरा बनवा कर कारिन्दे से

1. पहलू को लेकर।

भिड़ा देने की नेक सलाह पर वह मुस्कराई थी,—लेकिन उसने जवाब किसी को कुछ नहीं दिया। इस मामले में बहुत गहरी थी जग्गो।

रुग-रुग [1] करके बातें सब जग्गो की सास के कानों में भी पहुँच गईं। जग्गो की सास भी गाँव की पुरानी मानी हुई समझदार औरतों में से थी। डर तो वह उस दिन भी रही थी जिस दिन श्यामू फूला-फूला भूमिधर बनने के सपनों को अपनी अंक में समेटे, उससे आकर लिपट गया था। विश्वास उसने कर अवश्य लिया था, परन्तु वह हो नहीं रहा था उसे। लाख प्रयास करने पर भी उसका मन न जाने क्यों कभी-कभी कह उठता था,—'यह कैसा परिवर्तन आगया? क्या सचमुच ही दुनियाँ बदल गई? अंगरेजी राज के जाते ही भारत के गरीबों के दिन फिर गये? परन्तु विश्वास नहीं होता था उसे। उसका जीवन अविश्वास और निराशा का एक लम्बा-चौड़ा पिछत्तर साल का जमाना देखकर आया था,—एक लम्बा रास्ता तय किया था उसने। इस रास्ते पर चलते-चलते उसने और उसके पति ने बार-बार गिर जाने पर भी आश्रय और सहारे के लिए उस पटखी देने वाले हृष्ट-पुष्ट मुस्कराते और ऐश में इठलाते हुए इन्सान की तरफ ही देखा था,—ठीक उसी तरह देखा था जिस तरह बेज़बान जानवर क़साई की तरफ देखता है। कभी सहारा मिला था और कभी इधर-उधर से साहस बटोर कर दोनों प्राणी आप ही एक दूसरे का कंधा पकड़ कर खड़े हो गये थे, और फिर चलने लगे थे अपनी उसी पुरानी राह पर,—श्यामू का बाप अपने कसले, खुरपे, दराँती और और खेती के सामान के साथ और श्यामू की माँ अपने घर-गृहस्थी की दिन चर्या में उलझी-सुलझी।

श्यामू एक उनके जीवन का सहारा था। श्यामू को एक ग्वाला बना कर जंगल में गाय-भैंस चराने के लिए न भेजकर स्कूल भेजा था उन्होंने। दरजा चार तक पढ़ा था वह और उसके बाद कुछ दिन अपने बाप के काम में भी हाथ बटाया था, लेकिन उन्हीं दिनों काँग्रेस की लहर कुछ ऐसी चली कि वह उसके तन और प्राणों में समा गई। श्यामू के बाप ने लाख कोशिश की,

---

१. थोड़ी-थोड़ी करके।

लेकिन श्यामू अपनी जिद पर कायम रहा। उसने अपना रास्ता न बदला और आखिर बाप को ही हार माननी पड़ी।

वही श्यामू आज इन्साफ के दरवाजे पर खड़ा था। उसे चिन्ता नहीं थी इस बात की कि लाला छेदीमल उसकी गवाही देंगे या नहीं, पटवारी उसके खिलाफ कहेगा या मुआफिक, कारिन्दा और स्वयँ उसका स्वामी चौधरी राघव-नारायण बेइन्साफी के लिए कहाँ तक जद्दोजहद करेंगे। यह सब होगा, और होता रहेगा। श्यामू अपना रास्ता बदलने को तय्यार नहीं था।

चौधरी राघव नारायण गाँव में आये, परन्तु श्यामू उनसे मिलने के लिए नहीं गया। कई बार ऐसा भी हुआ, जब श्यामू अपने घेर से घर की ओर चला तो चौधरी राघव नारायण अपनी कोठी के बाहर बगीचे में घूमते दिखलाई दिये, उन्होंने श्यामू की ओर देखा भी, लेकिन श्यामू ने उस ओर नहीं देखा। एक शेर की तरह सीधा चलना सीखा था श्यामू ने।

आज संध्या को लाला छेदीमल की दूकान पर श्यामू की कारिन्दे से भेंट होगई। कारिन्दा मुस्कराकर जरा चुटकी लेता हुआ बोला,—"मैंने कहा, चौधरी श्यामू हैं क्या?"

श्यामू ने बात अनसुनी करदी।

कारिन्दा फिर बोला,—"अरे भाई श्यामू! भला हमसे क्या नाराजगी है? मामला अगर कुछ है भी, तो तुम्हारा और चौधरी........"

"मुखत्यार साहब! बूढ़े हो गये, लेकिन यह इधर-उधर की बातें नहीं गईं। जमाना बदल गया, पर आपकी रफ्तार अभी वही चल रही है। कहाँ तक बचाते रहेंगे आप अपने चौधरी साहब को? बकरे की माँ बनकर बकरे की खैर मनाने चले हो, और बकरे की जिन्दगी पर भीखनपुर के पचासों लालों का बलिदान चढ़ाने पर उतारू हो। मैं कहता हूँ गाँव के पचास आदमियों की हक़तलफी [1] करके एक चौधरी राघव नारायण की जेब गरम करने से काम नहीं चलेगा।" श्यामू ने स्थिरता के साथ कहा।

---

१. हक छीनना।

"फिर किससे चलेगा श्यामू चौधरी ?" व्यंग्य के साथ कारिन्दे ने आँखें तरेरते हुए पूछा।

"मैं फजूल बातों में आपसे जबाँनदराजी नहीं करना चाहता। आप जो ठीक समझकर कर रहे हैं, करते जायँ। मैं भी जो ठीक समझता हूं कर रहा हूँ। आपकी उम्र मेरे साथ मजाक करने की नहीं है और न ही मैं आपके साथ मजाक करना पसंद करता हूं।" श्यामू ने स्थिरता के साथ कहा।

कारिन्दा श्यामू का टका-सा जवाब सुनकर लजा गया। उसकी गर्दन झुक गई। लेकिन उसकी मक्कारी ने उसे फिर उभारा दिया और पहले की ही तरह मुस्करा कर बोला,—"भय्या श्यामू! मैं ठीक कह रहा हूँ कि तुम मुझे गलत समझते हो। और अपने चौधरी राघव नारायण को भी तुमने अभी नहीं परखा। उनके दिल में तुम्हारे लिए कितनी मुहब्बत है, यह तुम नहीं जान सकते।"

"क्यों मूर्ख समझने की कोशिश कर रहे हो श्यामू को मुख्यतार साहब! अपने यह मुहब्बत और रहमदिली के हथकंड़े कहीं और ही चलाना। मुझे माफ करो, मैं आपसे इस विषय में बातें नहीं करना चाहता।" श्यामू ने स्पष्टता के साथ कहा।

"अरे मुझसे बातें करना न चाहो श्यामू! लेकिन चौधरी साहब से तो करना चाहोगे?" कारिन्दे ने मटक कर कहा।

"यदि वह करना चाहें, तब।" श्यामू बोला।

कारिन्दा जोर से खिलखिला कर हँस पड़ा श्यामू के इन शब्दों पर। लाला छेदीमल और कुछ आस-पास के लोग तो समझ ही न सके कि आखिर यह बातें क्या हो रही थीं; लेकिन श्यामू की आँखों के डोरे लाल हो गये। क्रोध के आवेग में उसका तमाम बदन थर-थर काँपने लगा और उसे लगा कि उस कमीने कारिन्दे ने अपनी और अपने चौधरी की ताकत के जोम में श्यामू के पौरुष को ललकारा था। श्यामू सँभाल न सका अपने को। वह कड़क कर बोला,—"कमीने कारिन्दे के बच्चे! बेहया कहीं के! इसी, वक्त

मेरी आँखों के आगे से दूर होजा। नहीं तो हड्डी पसली तोड़कर बराबर कर दूँगा।"

शराब के नशे में था कारिन्दा। मस्ती में झूम रहा था। उसकी चाँदी के पोले वाली वह लाठी, जिसकी मार के सामने उसने गाँव-के-गाँव को हाँक [1] लिया था एक दिन, उसके हाथ में थी। जिन्दगी भर खुलकर चरा [2] था यह जवान पट्ठा,—अभिमान था उसे अपने बाहुबल पर। श्यामू जैसे नाचीज छोकरे की इस बदजबानी को बर्दाश्त करने का कोई कारण नहीं था उसके पास। उसे अभिमान था अपनी और अपने मालिक की ताकत पर।

"खबरदार बदमाश!" यह कहते हुए त्यौरी चढ़ाकर उसने श्यामू पर लाठी का जोरदार प्रहार कर दिया। पर वाह रे शेर श्यामू! पेंतरा काट कर एक ओर खड़ा मुस्करा रहा था। और फिर लपक कर उसने नीचे झुकते हुए कारिन्दे को उसकी रानों से पकड़ कर खटाक से जमीन पर पटख दिया,—ठीक लाला छेदी मल की दूकान के सामने, उसी धूल-भरे कीचड़-वाले दगड़े [3] में।

पटखी जोर की लगी कारिन्दे को। कुछ देर तक उठ न सका अपने को सँभाल कर। वहीं पड़ा-पड़ा जुलकता [4] रहा। एक-एक हड्डी हिल गई झटके से। खून कहीं से भी नहीं निकला, लेकिन बदन तो ऐसा लगा मानो सब बेकार-सा ही हो गया। एक भी हिस्सा ऐसा नहीं था जिसमें दर्द नहीं था।

श्यामू ने ही आगे बढ़कर कारिन्दे को झटका देकर उठाया और फिर दूर पड़ी उनकी चाँदी के पोलेदार लाठी उसके हाथ में देते हुए बोला,—"माफ कीजिये मुखत्यार साहब! आपने नाहक ही मुझे गुस्सा दिला दिया। मैं चाहता

---

१. लकड़ी लेकर जानवरों के झुंड को आगे-आगे कर लेने को हाँकना कहते हैं।

२. बेफिक्री के साथ खाया पिया था।

३. रास्ता।

४. पटखी खाये हुए आदमी का देखना।

नहीं था आपकी इस बजुर्गी में आपसे कुछ कहना, लेकिन मजबूर कर दिया आपने। जरा मालिश कराके तेल की, सिकवा लेना बदन को, सब ठीक हो जायगा।" श्यामू ने अपने दोनों हाथ दोनों बगलों में दबाकर पीछे खड़े होकर कहा। श्यामू इस समय भी गम्भीर था, उसे दुःख था।

कारिन्दे ने धूल में भरे अपने कपड़ों को झाड़ा। लाला छेदीमल ने उसे सहारा देकर अपनी दुकान पर बिठलाया,—लेकिन बोला वह एक शब्द नहीं। देखता भर रहा अपनी खूंखार नजरों से श्यामू की ओर।

गाँव के बहुत से आदमियों ने यह घटना दूर और पास खड़े होकर देखी, भाँति-भाँति की आलोचनाएँ भी कीं, लेकिन मजा सबको आया कारिन्दे को पटखी लगने में,—मन-ही-मन प्रसन्नता भी हुई। भरे गाँव के सामने सरेबाजार कारिन्दे की आबरू किरकिरी होगई,—वह शर्म से गड़ा जा रहा था। उसके दिल में एक तूफान-सा उठ रहा था, लेकिन बदन का तो उसे लगा, मानो पुरजा-पुरजा ढीला हो गया, जोड़-जोड़ हिल गया।

श्यामू को भी अफसोस कम नहीं था आज की घटना पर, लेकिन कारिन्दे का वह खिलखिला कर हँसता हुआ चेहरा इस समय भी उसके हृदय में जलन पैदा कर रहा था। यह उपहास था श्यामू की गरीबी का और इसे श्यामू किसी भी कीमत पर सहन नहीं कर सकता था।

लाला छेदीमल की दूकान के सामने भीड़ लग गई गाँव के आदमियों की। पटवारी को भी किसी ने इस घटना की सूचना दी। वह कपड़े पहन रहा था तहसील जाने के लिए। बात सुनी तो मन में बहुत प्रसन्नता हुई। उसके हृदय ने कहा, 'वाह रे शेर श्यामू! बस कमाल कर दिया तूने। इस पाजी कारिन्दे के साथ जो कुछ भी किया जाय, कम है। सारे गाँव की नाँक में नकेल [1] डाली हुई थी इसने।' लेकिन ऊपर से पटवारी ने अपनी

१. बड़े जानवरों की नाक में छेद करके एक लकड़ी डालकर उसके दोनों सिरों पर रस्सी बाँध दी जाती है। इस रस्सी के इशारे पर ऊंट जैसा बड़ा जानवर भी बच्चे के हाथों की कठपुतली बन जाता है।

मुख-मुद्रा बहुत ही गम्भीर बनाली। उसका चेहरा देखकर कोई भी हाव-भावों को परखने वाला पंडित यही कहता कि मानो वह दुर्घटना पटवारी के पिता के साथ ही घटी थी।

नाक-भौं चढ़ाते हुए पटवारी घटना-स्थल पर पहुँच गया और आनन-फानन में भीड़ को चीर कर कारिन्दे की निस्तेज पड़ी देह के सामने जा खड़ा हुआ। यों देखने में कोई खास परिवर्तन नहीं दिखलाई दिया पटवारी को कारिन्दे की देह में, परन्तु हिला नहीं जा रहा था बेचारे से। आगे बढ़कर सहानुभूति दिखलाते हुए बोला,—"बहुत चोट आ गई मुखत्यार साहब!"

"नहीं कोई खास नहीं।" मुँह बिचकाते हुए कारिन्दे ने कहा, लेकिन उसकी मुख-मुद्रा पर उसके शरीर की पीड़ा चित्रित हो उठी थी।

कारिन्दे को शर्म आती थी अपनी चोट का बखान करते हुए। उसकी बहादुरी के इतिहास में यह पहली पराजय थी जहाँ पहला वार करने पर भी उसे असफलता का मुँह देखना पड़ा। वरना पहले ही वार में दुश्मन को जीवन भर पछाड़ता रहा था कारिन्दा।

"थाने में रपट करनी चाहिए आपको।" पटवारी ने गम्भीरता पूर्वक कहा।

"छी-छी, क्या कहने लगे पटवारी?" एक दम तिलमिला कर कारिन्दा बोला। मानो थाने के नाम ने कारिन्दे को नीचे से ऊपर तक झंझोड़ दिया और न जाने कहाँ से हिम्मत बटोर कर कारिन्दा अपनी लाठी का सहारा लेता हुआ खड़ा होगया। "थाने में कमजोर और वुज़दिल आदमी जाते हैं। भीखू थाने में सहारा ढूँढने जायगा पटवारी!" कुछ घृणा-भरी दृष्टि से कारिन्दे ने पटवारी की ओर देखते हुए कहा।

पटवारी सहमा-सा रह गया। आगे कुछ न कहा उसने। गर्दन नीची कर ली। कारिन्दा लाठी का सहारा लेकर खड़ा हुआ तो श्यामू ने आगे बढ़ कर उसे सहारा दिया। कारिन्दे ने अपना हाथ श्यामू के कंधे पर रख लिया और उसी के सहारे चौधरी राघव नारायण की कोठी के अन्दर तक गया।

श्यामू न उसे खाट पर आराम से लिटा दिया। कारिन्दे को लिटाकर श्यामू अपने घर से एक कटोरी में सरसों का तेल ले आया और उसके दर्द करते हुए शरीर पर तेल की मालिश करके रूअड़[1] बाँध दिया।

चौधरी राघव नारायण कुछ समझ ही न सके इस सब राज को। पूछना चाहते हुए भी न पूछा। श्यामू अपना काम करके चला गया।

---

१. लिहाफ और गद्दों से दबकर निकाली हुई रूई।

: ७ :

श्यामू को दिली अफसोस था कल की घटना का। वह नहीं चाहता था कि कारिन्दे पर हाथ छोड़े, परन्तु इसके अलावा उसके पास और कोई चारा ही नहीं था। उसने जग्गो से सहानुभूतिपूर्ण स्वर में कहा,—"जग्गो! चोट काफी आगई कारिन्दे को। मैं आज भी सवेरे गया था उसे देखने को, कराह रहा था बेचारा। कूल्हे की हड्डी पर ज्यादा चोट आई है।"

"बड़ा दर्द हो रहा है दिल में।" जग्गो मुस्कराती हुई बोली। "दो भिड़ते हैं तो एक पटखी खाता ही है। इसमें अफसोस की क्या बात है? कहीं लाठी का वार सच्चा बैठ जाता कारिन्दे का तो एक बार भी शायद तुम्हारी खाट की तरफ से आकर न झाँकता।"

"ऐसी बात नहीं है जग्गो! कारिन्दा दिल का नेक है। मैंने कई बार परखा है उसके दिल को। क्या भूल गई उस मुरादनगर वाली सन् १९३२ की घटना को, जब काँग्रेस की सभा पर पुलिस ने बेतहाशा लाठी बरसाई थी? वह कारिन्दा ही था जो श्यामू की लाश को कन्धे पर डालकर भीखनपुर तक लाया था।"

एक सचाई सामने रखदी श्यामू ने उठाकर।

लेकिन जग्गो उसी प्रकार मुस्करा रही थी। मानो यह सब कुछ नहीं था। समय की प्रगति थी, चल रही थी अपनी रफ्तार के साथ,—कभी किसी दिशा में, कभी किसी दशा में। आज तो वही कारिन्दा उन्हें भीखनपुर से उखाड़ फेंकने पर तुला था,—यह सत्य भी भूल जाने की बात नहीं थी।

मुरादनगर से श्यामू को कंधे पर डालकर बचा लाना कल का सत्य था

और भीखनपुर से उखाड़ फेंकना आज का सत्य था। जग्गो के लिए इस समय आज का सत्य अधिक महत्त्वपूर्ण था।

कारिन्दे को एक दम बुरा जग्गो भी नहीं समझती थी। उसने लाख सुना था कि कारिन्दा एक आवारा डाकू था, लेकिन भीखनपुर और भीखनपुर की तो जान-माल की रक्षा करते ही जग्गो ने उसे देखा था। गाँव के जवान छोकरों को कारिन्दे की चढ़ी हुई मूछों का हरदम भय रहता था। क्या मजाल जो गाँव की किसी बहू बेटी के साथ कोई छेड़खानी करने की बात मन में भी सोच सके। दिल काँप उठता था उनका कारिन्दे की शक्ल देखकर।

कुछ आवारा छोकरों में एक बार कुछ चोरी की रमक[1] सी कारिन्दे को दिखलाई दी थी, तो उसने उनकी वह कानमैंठी[2] की कि फिर भय के मारे उस रास्ते पर कदम नहीं रखा। कुछ अपने व्यक्तिगत ऐब अवश्य थे उसमें, सो उनमें किसी को क्या? शराब वह पीता था, सो पीता था। किसी और को नहीं कहता था अपने पास बैठकर पीने के लिए और बुरा भी मानता था वह शराब पीने को; परन्तु अपने लिए लाचार था।

जग्गो श्यामू का हाथ पकड़ते हुए बोली,—"कुछ भी सही, कारिन्दा अपनी बात का बहुत पक्का है। मैं जानती हूं कि इस चोट को खाकर वह पुलिस में नहीं जायगा। पुलिस में जाना वह अपनी हतक[3] समझता है। लेकिन कल की घटना को वह इस जिन्दगी में भूल नहीं सकता। समझलो, वह उसके दिल पर लिखी गई।"

"यह मैं जानता हूं जग्गो! और यह भी जानता हूँ कि वह इस बार अच्छा होते ही मुझे भीखनपुर से उखाड़ फेंकने पर पूरी ताकत लगा देगा,—और वह कर भी सकेगा इस काम को।" गम्भीरतापूर्वक श्यामू ने कहा।

---

१. हलका हलका असर।

२. हलकी मारपीट।

३. बेइज्जती।

"कर भी सकेगा !" कड़क कर जग्गो ने कहा,—"वह नहीं कर सकेगा, हमारा हक़ वह हमसे नहीं छीन सकता ।"

श्यामू ने देखा कि जग्गो की आँखों में खून उतर आया था इस समय। उसका चेहरा लाल अंगारे के समान दमदमा उठा। जग्गो की बड़ी-बड़ी चिरवाँ आँखें क्रोध के आवेग में बाहर निकल आईं। क्रोध ने एक चमक लादी जग्गो के विकसित यौवन पर,—उभार आ गया। श्वाँस के तीव्र प्रवाह से उसके उन्नत उरोजों का उतराव-चढ़ाव देखकर श्यामू मन्त्र-मुग्ध हो गया। वह विश्वास ही न कर सका कि वह सामने जग्गो बैठी थी उसके,—उसने एक साहस और शक्ति की देवी के दर्शन किये,—झुक गया उसके सामने श्याम का मानस।

जग्गो का क्रोध धीरे-धीरे हल्का पड़ा। मन्द पवन के शीतल झकोरों में क्रोध की गर्मी हल्के-हल्के बह गई। जग्गो फिर मुस्करा रही थी, कीकर के पेड़ के नीचे खेत के जुते और मैंड़ा लगे इकसार बहान [1] में बैठी। श्यामू ने मिस्सी रोटी का नमकीन टुकड़ा, प्याज-मिर्च की चटनी लगाकर मुँह में रखते हुए लुटिया [2] से छाछ का घूँट भरा। फिर गुड़ की एक डली दाँतों से काट ली और मुस्करा रहा था इस समय वह भी। उसके हृदय में प्रसन्नता थी, साहस था, भविष्य से टक्कर लेने का विश्वास था।

अफसोस जरूर था कारिन्दे के चोट आजाने का श्यामू को, लेकिन आत्मा को एक प्रसन्नता भी थी। एक मजा आया था उसे पटखो लगाने में। कारिन्दे के गाँव पर छाये हुए आतंक को तोड़ा था श्यामू ने और अपने आत्म-सम्मान की रक्षा की थी। श्यामू अपनी गरीबी के सम्मान की कीमत अपने प्राणों से भी अदा करने को हर समय तैयार था।

"तुमने पटखी लगादी मरे को, यह बहुत ठीक किया।" जग्गो हँसकर बोली। "अब गर्दन ऊँची नहीं कर सकेगा तुम्हारे सामने। बड़ा ऐंठ-उभर कर

---

१. बहान जुते और मैंड़ा लगे उस इकसार खेत को कहते हैं जो बोने के लिए तैयार कर दिया हो।

२. छोटा लोटा।

चलता था मूछों पर ताव देता हुआ। दुनिया को कुछ समझा ही नहीं उसने।"

"लेकिन दुश्मनी तो और बढ़ गई जग्गो! पहले दस दिन में बेदखली होती तो अब दो दिन में ही कराने की कोशिश करेगा।" तनिक गम्भीर होकर श्यामू ने कहा।

"तो कराये न मरा! जो कल करना है वह आज कर ले, अब कर ले। इसमें डरने से क्या बनने वाला है?" निर्भीकतापूर्वक जग्गो बोली। "हथेली से मुँह बन्द करने से क्या भूख मिट जायगी? जब ओखली[1] में सिर दिया है तो मूसलों से क्या डरना?"

श्यामू जग्गो से अपरिचित नहीं था, परन्तु उसकी इस निर्भीक प्रकृति के सम्मुख आज उसे झुक जाना पड़ा। श्यामू के प्रवाह में कहीं बल भले ही हो, परन्तु जग्गो का जीवन प्रवाह तो मानो पैमाना लेकर एक सीधी खींची हुई रेखा के समान था,—न कहीं हेर-न-फेर, न कहीं घुमाव-न-फिराव। जो उसके मन में था, वही बाहर।

जग्गो प्रसन्न थी कि श्यामू ने कारिन्दे को पटकी दी। अपने पति पर लाठी का वार करने वाले कारिन्दे के लिए उसके मन में कोई दया नहीं थी, कोई श्रद्धा या झुकाव नहीं था।

चार-पाँच दिन में कारिन्दा ठीक होगया। जितने दिन खाट पर पड़ा रहा, श्यामू बराबर उसे देखने गया, लेकिन बात कभी कुछ न हुई। जब वह वहाँ जाता तो और बैठने वालों के मुँह पर मानो मुहर लग जाती थी, मछूका[2] बँध जाता था। उनकी चलने वाली बातें बंद हो जाती थीं और

---

१. छोटा सा एक गढ़ा होता है जिसमें भरकर धान इत्यादि मूसल से खोटकर चावल और छिलका अलग-अलग किया जाता है।

२. मछूका एक ऐसी जाली को कहते हैं जिसे जानवरों के मुँह पर इस लिये बाँध दिया जाता है कि वह मुँह खोलकर रास्ते के खेतों की फसल को न खा सके।

बेचारे पटवारी की तो गर्दन शर्म से टूटकर इस तरह नीचे गिर जाती थी कि आँखें चार करने का साहस ही नहीं होता था उसमें। लेकिन मनमें उसके कुढ़न बहुत होती थी श्यामू के प्रति। कलेजा जल उठता था श्यामू की शक्ल देखकर। वह जानता था कि श्यामू भी उससे घृणा करता था।

श्यामू खड़ा-खड़ा केवल इतना पूछता,—"अब कैसी तबियत है मुख्तयार साहब?"

"ठीक है।" कारिन्दा रूखा-सा जवाब देता।

और श्यामू लौट आता। फिर कुछ न पूछता।

आज दोपहर बाद घर से घेर को आते हुए पटवारी ने अनाचक श्यामू को पीछे से छेड़ते हुए कहा,--"जवानी के जोश में छोटों को बड़ों का ध्यान नहीं भुला देना चाहिए, श्यामू।"

श्यामू पटवारी के शब्दों की इस चोट को खाकर वहीं रुक गया। पहले मन में आया कि आगे बढ़ता चला जाय और व्यर्थ उस बेईमान आदमी के मुँह न लगे, लेकिन फिर एक बार पटवारी को भी झंझोड़ डालने की उत्कट इच्छा श्यामू के मन में प्रबल वेग के साथ जाग उठी। सिद्धान्त की बातें छौंकने वाला यही वह कमीना आदमी था जिसने अपनी जेब गर्म करने के लिए अनेकों गलों पर मुस्कारते हुए छुरी फेरी थी और फिर अब यह नमक मलने चला था उन घावों पर।

श्यामू के घाव में कसक पैदा हो गई,—वह तिलमिला उठा और पटवारी की ओर मुँह करके दिल का दर्द दिल में छुपाते हुए बोला,—"यह नसीहत मुझे पटवारी जी कर रहे हैं?" प्रखर व्यंग्य था श्यामू के इन शब्दों में। "पटवारी जी! अगर मैं कहूँ कि भीखनपुर की जमीन के खसरा खतौनी पर अधिकार पाकर आपको कलम चलाने में जरा सी इन्सानियत बरतनी चाहिए, तो क्या आप पर कुछ असर होगा मेरी बात का?"

"छोटे मुँह बड़ी बातें करनी छोड़ दो श्यामू।" पटवारी ने गम्भीर होकर कहा। "अपनी हैसियत को समझ कर बात कहो।"

पटवारी की हैसियत अब उस कच्चे कोठे और फूँस के छप्पर वाली

नहीं रह गई थी। जमींदारी समाप्त होने का असली मजा पटवारी को ही हासिल हुआ था। पक्की हवेली चिनी जा रही थी गांव के बीचों-बीच। चिनाई लगी हुई थी, मदद काम कर रही थी उस पर।

हैसियत की बात सुनकर पहले तो जरा श्यामू का दिल मुरझाया लेकिन तुरन्त ही वह उसी आन के साथ मुस्कराता हुआ बोला,—"पटवारी जी ! हैसियत हवेली की पक्की ईंटों में गारे के साथ नहीं चिनी जाती और न ही मुखत्यार साहब के नीले-नीले करारे नोटों से हैसियत बनती है।

"अंगरेजी सरकार की हैसियत जाती रही तो आपकी हैसियत क्या अमर पट्टा लिखकर लाई है ? एक दिन गधे के सिर से सींगों की तरह यह भी रफूचक्कर हो जायगी, यह याद रखना श्यामू की बात।"

"दूसरों की तरक्की को देखकर जलने वाले लोग सदा जलते ही रहते हैं श्यामू।" गम्भीरता पूर्वक पटवारी ने कहा।

"जलते वह जरूर रहते हैं पटवारीजी लेकिन उनकी इस आग में एक दिन ये हैसियत भी जल कर खाक हो जायगी, यह भी न भूल जाना। और वह दिन दूर नहीं है जब इन हैसियतों का जनाजा उठाने के लिए श्यामू को दुबारा कदम बढ़ाना होगा। श्यामू की जिन्दगी की वह आग जिसने भीखनपुर के देहात में जगह-जगह चिंगारी दहकादी थी, अभी बुझ नहीं गई है। वह आग अभी बाकी है।" श्यामू ने एक गहरी साँस खींचते हुए कहा और फिर मुस्करा कर बोला,—"मैं तो एक बार भीखनपुर के देहात और भीखनपुर के जंगलों को मुस्कराते हुए देखने का स्वप्न देख रहा था। मैं तो सोच रहा था कि वह दिन आगया जब यहाँ के रहने वालों के गलों में पड़े चीथड़ों की जगह गाढ़े के साबुत कुर्ते और छाती के पिंजरों पर चढ़ता हुआ गोश्त दिखलाई देगा। लेकिन तुम्हारे नापाक इरादों ने भीखनपुर के स्वस्थ होते हुए समाज का खून चूसना शुरू कर दिया। पर भूल न जाना पटवारी जी कि यह खून जो तुम्हारे मुँह लगा रहा है, एक दिन विष साबित होगा।"

पटवारी ने श्यामू की बात दिल में जलन के साथ सुनी। वह घृणा की दृष्टि से देख रहा था इस समय श्यामू को और उसे लगा कि श्यामू उसकी

बनती हुई पक्की हवेली को देखकर जल रहा था अन्दर-ही-अन्दर, भुन रहा था मन-ही-मन में।

उसने मन में सोचा, 'बस, बड़े आदमियों और छोटे आदमियों में यही अन्तर होता है। चौधरी राघवनारायण भी आये थे उसकी बनती हुई हवेली को देखने। कितनी प्रसन्नता थी उनके मुख-मण्डल पर। भीखनपुर में एक और पक्की हवेली बन रही थी, यह भीखनपुर की शान थी और भीखनपुर शान चौधरी राघवनारायण की शान थी। उन्होंने शाबाशी दी थी पटवारी के पराक्रम को देखकर,—और एक यह श्यामू महाशय हैं, जैसे आप हैं वैसा ही दूसरों को भी बना लेना चाहते है। यह तो कहते हैं,—आ पड़ौसिन मुझ-सी हो।'

श्यामू के प्रति घृणा से पटवारी की नाक चढ़ गई। उसे और अधिक मुँह लगाना पटवारी ने उचित नहीं समझा। ऐंड़ी-बेंड़ी बातें करके अपनी हड्डी पसली तुड़वाते वह कारिन्दे को देख चुका था,—इसलिए भय भी खाता था वह श्यामू से। उसने यही उचित समझा कि बस भरम जब तक बना रहे तभी तक उचित है और एक गँवार के मुँह भी क्या लगना? श्यामू की बात को वह शर्बत के घूँट की तरह पीता हुआ बोला,—"अच्छा भय्या श्यामू! तुम जो कुछ भी कह डालो, वही थोड़ा है। तुमसे मैं कुछ असम्भव नहीं मानता।"

कहकर पटवारी जरा आगे बढ़ा और सीधा चौधरी राघवनारायण की कोठी में घुस गया। द्वेष की ज्वाला जल रही थी इस समय पटवारी के दिल में श्यामू के प्रति। उसकी ताकत में नहीं था कुछ, वरना न जाने क्या कुछ कर डालता। यदि जज की कुर्सी पर बैठा होता तो शायद फाँसी का ही दण्ड-विधान तय्यार कर देता उसके लिए। श्यामू के शब्द उसके कानों में बज रहे थे। उन शब्दों की गर्मी से पटवारी के शरीर का रक्त-प्रवाह तीव्र हो गया था और तमाम शरीर के रौंगटे सतर खड़े थे,—पसीना आ गया था उसे।

पटवारी अन्दर-ही-अन्दर क्रोध से बलबला रहा था। अचानक उसके

पैर रुक गये और वह वहीं से वापिस लौट लिया अपने घर को। आनन-फानन में वह घर पहुँचा और अपना बस्ता खोल कर उसमें से वह दोनों कागज, जो समय देखकर कुछ और रुपया कारिन्दे से ऐंठने के लिए अभी दबा कर रखे हुए थे, निकाल लिए। यह कागज श्यामू के तीन खेतों की काश्त और सीर की वही नकलें थीं जिनमें श्यामू के खान्दान का भविष्य छुपा हुआ था।

दोनों कागज हाथ में ले पटवारी ने गर्व से अपना सीना उभार कर सामने देखा और दाँत पीसते हुए अपने से ही कहा, 'टक्कर भी लेने चला है, तो मुझ से। बेहूदा कहीं का!' इसी समय उसकी दृष्टि सामने रखे हुए अपने कलमदान पर गई और अपने होल्डर पर निगाह जमा कर गर्व से बोला, 'यह कलम की मार है, कारिन्दे की चाँदी के पोलेदार लाठी की नहीं। यह वह मार है जो कत्ल करदे और आह भी न भरने दे और ऊपर से मुस्कराता ही रहे।'

वास्तव में पटवारी इस समय मुसकरा रहा था; बल्कि एकान्त में अपने ही अन्दर खिलखिला कर हँस पड़ा और फिर चल दिया जल्दी से घर की दुबारी पर साँकल चढ़ा कर।

रास्ते में उसे फिर श्यामू लाला छेदीमल की दूकान पर खड़ा मिला लेकिन पटवारी ने उस ओर देखना भी पसन्द नहीं किया,—एक साधारण कीड़ा-मकौड़ा था वह पटवारी की दृष्टि में,—नाचीज़।

कारिन्दे के पास सीधा पहुँच गया पटवारी और उनकी कुशल-मंगल पूछने के पश्चात् वह दोनों पर्चे जिनमें श्यामू के तीनों खेतों की काश्त और सीर चौधरी राघवनारायण के नाम लिखी थी, उनके सामने रख कर कहा,—"यह लीजिए मुखत्यार साहब! यह आपकी अमानत है। हमें भूलियेगा नहीं, हम बाहर नहीं हैं आपसे किसी बात में।"

"अरे! पटवारी! यह क्या कहने लगा भला? तू तो अफसर है गाँव का, अफसर!"

कारिन्दे ने पटवारी को अपने सच्चे दोस्त के रूप में पाया था। पलड़ा

चाहे कुछ भारी जरूर हो गया था आजकल पटवारी का, परन्तु पटवारी भी यह जानता था कि उसकी आर्थिक समस्या का हल कारिन्दे के ही पास था। इसीलिए पटवारी बड़ी इज्जत करता था कारिन्दे की और कारिन्दा अपने चौधरी के रुपये का बल पाकर अपनी इज्जत को बनाये रखने का भरसक प्रयत्न करता था।

दोनों की साँठ-गाँठ खूब पट कर चल रही थी और पिस रही थी भीखनपुर की जनता। केवल इन दोनों की गाड़ी पटरी पर थी और शेष सारे गाँव की गाड़ी पटरी से उतर गई थी। गाँव का बहुत बड़ा समाज-का-समाज आर्थिक संकट में फँस गया था।

चौधरी राघवनारायण पटवारी और कारिन्दा दो पुराने तजुर्बेकार घोड़ों के रथ पर बैठे दुनियाँ का आनन्द ले रहे थे। एम० पी० थे वह। आर्थिक समस्या के हल स्वरूप उनके पास उनका कारिन्दा था, जो अपनी स्वतंत्र इच्छा से चौधरी राघवनारायण का संरक्षण प्राप्त करके भीखनपुर में अपनी इज्जत बनाये बैठा था। जिले के सब सरकारी दफतरों में और उनके अफसरों पर उसकी सीधी पहुँच थी। फिर कोई कठिन परिस्थिति आने पर चौधरी राघवनारायण अपने साथी तथा मित्र, अन्य मैम्बरपारलियामेन्टों से भी सहायता ले सकते थे। मतलब यह था कि इस इलाके में आजकल चौधरी राघवनारायण का राज था और उनका राज उनके कारिन्दे का राज था।

कारिन्दे ने देहात की अपनी सब जमीन जमींदारी समाप्त होने से पहले ही अपने हल के नीचे कर ली थी। चौधरी राघवनारायण ने उसे पहले से बतला दिया था जो कुछ होने जा रहा था जमींदारी के विषय में और अपने एक मशहूर कानूनी वकील से सलाह करके वह दावपेंच भी सुझा दिये थे कारिन्दे को कि जिनसे वह हर बात की रोकथाम समय आने से पहले ही करले। कारिन्दे ने चौधरी साहब का उसे सौंपा हुआ काम बहुत खूबी के साथ निभाया। पंद्रह सौ बीघे की जायदाद को तुरन्त पाँच-पाँच सौ के तीन भागों में विभाजित करके पहले उसे विभाजन न होने वाली इकाई बना लिया और फिर छोटे-मोटे काश्तकारों को चन्द टके देकर उनकी जमीनें कब्जे में कर

लीं। जिन लोगों ने मुखालफत की उन्हें मुंह की खानी पड़ी, बेदखली होगई उनकी। सरकारी अमले और अदालत पर रौब था कारिन्दे का।

चौधरी राघवनारायण से टक्कर लेना मजाक नहीं था।

चौधरी राघवनारायण अपने बरांडे में अकेले घूम रहे थे। भीखनपुर और भीखनपुर के आस-पास के इलाके को नचाया था उन्होंने,—और उसी दिन से नचाया था जिस दिन से होश संभाला। देहात की जनता कठपुतली की तरह नाचती थी उनके इशारे पर,—सब भय खाते थे।

चौधरी राघवनारायण को इस समय श्यामू की मूर्खता पर तरस आ गया और साथ ही उन्हें उसकी गलतफहमी पर अफसोस भी हुआ। जेल में साथ रह जाने से कोई स्तर बराबर नहीं होता। कांगरेस का नारा साथ-साथ लगाने से सामाजिक-स्थान एक नहीं बन सकता।

चौधरी राघवनारायण कर्म और भाग्य को मानते थे। उनका अटल विश्वास था इन दोनों पर। संसार के सभी लोग एक-सी सामाजिक स्थिति में नहीं हैं, यही उनके सामने सब से बड़ा प्रमाण था कर्म-फल के अनुसार भोग भोगने का।

फिर भाग्य भी कोई चीज था उनकी नजरों में। यदि वह भाग्य के बलवान न होते तो क्यों उन्हें जन्म-सिद्ध-अधिकार स्वरूप इतना धन, इतना यश, इतनी बुद्धि मिलजाती। यह सब भाग्य का ही प्रताप था उनके। कई अच्छे-अच्छे ज्योतिषाचार्यों को अपनी पत्री दिखला चुके थे वह और हस्त-रेखा के जानकारों से तो न जाने कितनी बार परामर्श हुआ होगा। भाग्य को सभी ने बलवान बतलाया था उन्हें। सभी ज्योतिषी एकमत थे इस विषय में। ज्योतिष पर बहुत बड़ा विश्वास था चौधरी राघवनारायण का।

फिर भी उन्हें दया ही आती थी श्यामू पर। श्यामू का सबसे बड़ा कसूर उनकी दृष्टि में यही था कि उसने अपने आपको चौधरी राघवनारायण के बराबर समझा।

यदि श्यामू ने प्रसन्नता पूर्वक उन खेतों को चौधरी राघवनारायण के हवाले करके अपनी आजीविका के लिए प्रार्थना की होती उनके सामने

तो क्या वह ध्यान न देते श्यामू की प्रार्थना पर ? वह अवश्य ध्यान देते।

कारिन्दे का भी यही ख्याल था कि श्यामू ने भूल की। उसे चौधरी राघवनारायण के सामने इस प्रकार अपने को उनके बराबर रख कर नहीं आना चाहिए था। चौधरी राघवनारायण को अपने बेटे की जगह मानकर भी कारिन्दा बड़ी इज्जत करता था उनकी। इज्जत का कारण स्पष्ट था और वह यह कि इस चौधरी साहब की लम्बी-चौड़ी सम्पत्ति को अपनी समझने का पूरा-पूरा अधिकार था कारिन्दे को। और चौधरी साहब भी जानते थे कि कारिन्दा जो खायेगा बस वही उसका है। उसके अलावा क्या गठरी बाँध कर ले जायगा मरते समय? सब यहीं रह जायगा। केवल खाने पर एक अपना आदमी मिल गया था उन्हें।

लेकिन श्यामू ने स्वतंत्रताका संग्राम एक आजाद सिपाही के रूप में लड़ा था और वह उसी आजादी के साथ जीवन में भी बढ़ना चाहता था। सहयोगी को वह प्राणों से बाजी लगाना भी सहयोग देने को तय्यार था और इसी लिए लौनी में नमक कानून तोड़ते समय सन् १९३१ में जब चौधरी राघवनारायण के जत्थे पर पुलिस ने डंडे बरसाये थे तो श्यामू ने चौधरी राघवनारायण के शरीर को ढ़क लिया था अपने शरीर से।

श्यामू ने आजादी को पहचाना था और अब वह समाज को नये ढाँचे में देखने का स्वप्न देख रहा था। अपनी आजीविका के लिए गिड़गिड़ाता फिर वह क्यों ? वह भी एक इन्सान था और अन्य सभी इन्सानों की तरह इस दुनियाँ में पैदा हुआ था। उसे भी संसार में उस तरह रहने का अधिकार था जिस तरह दुनियाँ के अन्य सब आदमी रहते हैं।

फिर आज सरकार भी अपनी थी और अपनी सरकार के कानून मान कर ही वह एक सच्चे अहिंसावादी के रूप में धीरे-धीरे आगे बढ़ना चाहता था। वह स्वयं भी किसी दूसरे की चीज पर बलपूर्वक अधिकार कर लेना पाप समझता था।

उसके तीन खेत उसे उसके अधिकार स्वरूप प्राप्त हुए थे और 'अधि-

कार खोकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है,' वाला गीता का सिद्धान्त यह गाँधीजी का असीम भक्त पूरी तरह से मानता था।

श्यामू बजिद था संघर्ष करने को अपने अधिकार के लिए। उसने सर्वस्व लुटा देने का दृढ़ संकल्प कर लिया।

: ८ :

कारिन्दे के हाथ मजबूत कर दिये पटवारी ने खसरे और खतौनी की नकलें देकर। कागजी शक्ति से लैस होकर दूसरे दिन सुबह-ही-सुबह कारिन्दा शहर के लिए रवाना होने को तय्यार बैठा था।

बेहलवान [१] से संध्या को ही कह दिया गया था कि सुबह दिन निकलते ही स्टेशन जाने के लिए ताँगा तय्यार मिलना चाहिए। चौधरी राघवनरायण का ताँगा भी आस पास के देहात में एक खास ताँगा था, एकदम चमाचम, बहलीनुमा। ताँगे की जोट भी एक शानदार जोट थी। उपराली [२] और तरवाली [३] दोनों ही बैल गोरे और खैरे नटिये [४] थे, एक दम सुडौल मानो साँचे में ढाल दिये थे विधाता ने। उनकी चाल में एक मस्तानी अदा थी, झूम-झूमकर चलते थे दोनों, शेर की तरह गर्दन ऊँची करके। ताँगे को लेकर इस तरह सरपट मारते थे कभी-कभी कि ताँगा गेंद की तरह गदागद उछलता चला जाता था। उनके गलों में बँधी हुई टल्लियों की मधुर ध्वनि ताँगे के नीचे बंधे जङ्ग के गम्भीर नाद में मिलकर रास्ते के वातावरण को एक उत्साह पूर्ण संगीत की लहरियों से अच्छादित कर देती था।

ताँगा कोठी के सामने लाकर खड़ा कर दिया बेहलवान ने। सुबह का

---

१. साईस। ताँगा जोतने वाला।

२. जो बैल ताँगे में बहलवान के बाँई ओर रहता है।

३. जो बैल ताँगे में बहलवान के दाँई ओर रहता है।

४. जवान बछड़े।

झुटपुटा था, परन्तु लोग-बागों ने अपनी-अपनी खाटों को छोड़कर इधर-उधर जाना-आना प्रारम्भ कर दिया था। श्यामू अपनी भैंस का दूध निकालकर दुहावनी हाथ पर रखे घर की ओर जा रहा था। चौधरी राघवनारायण का ताँगा उनकी कोठी के सामने जुता हुआ खड़ा देखा तो उसने समझा कि राघव-नारायण शहर जा रहे थे।

श्यामू को दुःख हुआ कि इस बार वह चौधरी राघवनारायण से देश की राजनैतिक गति-विधि पर बात-चीत ही न कर सका। अधिक पढ़ा लिखा न रहने पर भी श्यामू राजनीति की मोटी बातों में दिलचस्पी रखता था। भारत पाकिस्तान के मामले, काश्मीर की समस्या, तिब्बत और उसके पीछे कम्यूनिस्टों की समस्या, पख्तूनिस्तान की समस्या, अफरीका सरकार की रंग-बिरंगी नीति और इसी तरह की बहुत सी बातों पर श्यामू चौधरी राघवनारायण से बातें करता था। कोरिया के मसले पर भी उसके अपने विचार थे और इन सभी समस्याओं के हल भी खोजने की ओर वह ध्यान देता था। हल जोतने वाला किसान वह जरूर था परन्तु राजनैतिक वातावरण में जिन्दगी का काफी हिस्सा बिता लेने के पश्चात् उसकी एक निश्चित-सी विचार-धारा बन गई थी। जवाहरलाल की शांतिपूर्ण विदेशनीति पर भी वह समझता और सोचता था।

एक क्षण के लिए श्यामू ताँगे के पास ठिठका, नजाने क्या विचार आया उसके मन में, पैर आप-से-आप रुके परन्तु दूसरे ही क्षण एक उभार-सा आया श्यामू के सीने में,—उसे अपमान मालूम दिया वहाँ ठहरना। वह तेजी के साथ आगे बढ़ गया। फिर घूमकर भी नहीं देखा उसने ताँगे की ओर।

कारिन्दा अपने कागजात का बस्ता लेकर उठा और जरा लँगड़ाता ताँगे की ओर बढ़ गया। चौधरी राघवनारायण की लड़की विमला ने खाने का कटोरदान कारिन्दे को देते हुए कहा,—"यह खाना है बाबा, आपका।"

"अरे, इसकी क्या जरूरत थी बिटिया! मैं खा लेता वहीं कचहरी में ही दो-चार पूड़ी लेकर। बहू को सुबह-ही-सुबह तकलीफ करनी पड़ी मेरे लिए। देवी दी है भगवान् ने इस घर को।" हृदय से तन्मय होकर कारिन्दे ने कहा

और कटोरदान हाथ में लेते हुए बोला,—"बेटी, तेरे लिए क्या लाऊँ भला शहर से ? कह तो दे जरा ?" और प्यार से विमला को कारिन्दे ने गोद में उठा लिया।

"बाबा जागनी-सोनी, हँसनी-बोलनी गुड़िया लाना मेरे लिए।" विमला ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

"अरे ! जागनी-सोनी-हँसनी-बोलनी गुड़िया तो तू ही है मेरी। अच्छा तेरे लिए भी ऐसी ही गुड़िया लाऊँगा और पेड़ा भी लाऊँगा मीठा-मीठा। रुन्नू-झुन्नू को भी कह देना। उनके लिए गेंद-बल्ला और और भी खिलौने लाऊँगा, बड़े-बड़े रङ्गीन खिलौने।" प्रेम विह्वल होकर विमला को गोद में लिए कारिन्दे ने कहा।

"रंगीन खिलौने, बाबा !" उत्सुकता से विमला ने पूछा।

"हाँ, बेटी रंग-बिरंगे, खिलौने लाऊँगा।"

शहर के स्टेशन पर उतरकर कारिन्दा सीधा अपने वकील के दफ्तर पहुँचा जहाँ भीड़ लगी थी मुकदमेबाजों की। कुछ दावे करने वाले थे और कुछ दावों का जवाबी हमला देने वाले, लेकिन जोश दोनों में था। कुछ अपील करने वाले भी थे,—उनकी हिम्मतें कुछ पस्त थीं, लेकिन वकील साहब और उनके मुंशी लोग साहस का इन्जेक्शन लगा रहे थे उनके दिमागों में। जबान की लपालपी खूब जोर-शोर के साथ जारी थी और वकील साहब अपने मुअक्किलों [1] के दुश्मनों को हर पहलू पर नये नाजो-अन्दाज के साथ पटखी दे रहे थे।

कारिन्दे का वहाँ पहुँचना था कि अन्य मुअक्किलों का झुंड काई की तरह फट गया। वकील साहब ने खुद खड़े होकर बड़े आदर के साथ उसका स्वागत किया और मुंशी ने तो चार कदम आगे बढ़कर उसका बस्ता अपने हाथ में सँभाला। फिर फुर्ती के साथ कारिन्दे के बैठने के लिए मूढ़ा सरकाते हुए मुंशी ने कहा,—"बैठिये मुखत्यार साहब !" और मुखत्यार साहब पूरी

१. मुकद्दमा लड़ने के लिए आने वाले व्यक्ति, (Client) ग्राहक।

आवभगत के साथ वकील साहब के दरबार में विराजमान हो गये।

"अब तो ईद के चाँद हो गये मुखत्यार साहब! दर्शन भी दुर्लभ हो गये हम लोगों को तो।" मुस्कराते हुए वकील साहब ने अपने अन्य सब मुअक्किलों की ओर मुँह मोड़ते हुए कहा।

"ताना न मारिये वकील साहब! पर यह सच है कि जमींदारी के काम काज से बहुत कम फुर्सत मिलती है। जमींदारी खत्म क्या हुई हैं उलटा और काम बढ़ गया है हम लोगों को तो।" कारिन्दे ने अपनी परेशानी पर नाँक भौं सिकोड़ते हुए कहा।

"इसमें क्या शक है?" कारिन्दे की बात का समर्थन करते हुए वकील साहब ने कहा,—"लेकिन, क्या आपकी परेशानियों में खादिम [1] कुछ काम नहीं आ सकता आपके?"

"अरे! यह क्या कहने लगे वकील साहब! आपका तो भरोसा ही है हमें। वरना यहाँ कौन बैठा है हमारा शहर में? चौधरी राघवनारायण बहुत याद करते हैं आपको। आपकी काबलियत पर सच पूछिये तो शैदा [2] हैं वह।" कारिन्दे ने बड़े तपाक के साथ कहा।

वकील साहब मन-ही-मन फूल उठे कारिन्दे की बात सुनकर, लेकिन उनका ध्यान इन सब बातों पर नहीं था। यह तो सब फजूल सी बातें थी, परन्तु जरूरी थीं फिर भी। समय कम था वकील साहब के पास कचहरी का काम भुगताना था, कई केस थे आज जरूरी जिनके मिसल देखने थे।

कारिन्दे ने भी अपना केस वकील साहब के सामने रख दिया। केस सुनकर और खसरे और खतौनी की वह दोनों नकलें देख कर वकील साहब ने चुटकी बजाते हुए कह दिया,—"यह भी कुछ मामला है मुखत्यार साहब! रोजाना दस-बीस बेदखली वाले मामले आकर टकराते हैं, पर मैं तो हाथ ही नहीं रखता इन छोटे मामलात पर। लेकिन अब आपका केस

२. खिदमत करने वाला।

१. आसक्त।

तो हमारा अपना केस है, आपकी परेशानी भी हमारी अपनी ही परेशानी है।

"बस समझ लीजिए कोई हक नहीं है उसका इन खेतों पर। कानून साफ तौर से आपके साथ है। इन्साफ आपको खेत दिला कर छोड़ेगा। वह बेदखल हो जायगा इन खेतों से।"

यह बात वकील साहब ने इस पैराये से कही कि काम होने में कोई संशय की गुंजाइश ही नहीं थी। फिर वकील साहब कारिन्दे के पुराने आजमाये हुए तीरन्दाज थे जिनका आजतक कोई वार खाली नहीं गया। अदालत के अफसरों के साथ खाना-पीना चलता वकील साहब का। अपने मामले के लिए उनकी कोठी पर इस तरह पहुँच जाते थे मानो किसी सामाजिक कार्यक्रम में सहयोग प्राप्त करने जा रहे हों। और उनके लिए नाँ भी नहीं थी किसी हाकिम को। सभी के काम आने वाले आदमी थे वकील साहब।

फिर वकील साहब के मुअक्किल भी वकील साहब की मदद करते थे, उनकी परिस्थिति बनाये रखने में। गाँव का शुद्ध घी, जो अपने बच्चों का पेट काटकर बचाते थे, वकील साहब की सेवा में पेश किया जाता था और वह यहाँ से कनस्तर का कनस्तर हाकिम की फरमाइश पूरी करने के काम आता था,—बड़ा मान था वकील साहब का अदालत के हाकिमों में।

शहर के हर बड़े क्लब के वकील साहब मेम्बर थे और अफसर लोगों को भी इन क्लबों में जाने का शौक था। दोस्ती का गठन क्लब की चौपाटी पर ही होता था, साथ-साथ ब्रिज जमता था और पार्टियाँ उड़ाई जाती थीं,—दाँत काटी रोटी हो जाती थी, बस यहीं से।

और मीठे भी कितने थे वकील साहब कि बस क्या कहने? किसी से दोस्ती पटा लेना उनके लिए बाँये हाथ का काम था। चलते-चलते याराना बना लेते थे, बैठते-उठते मित्रता हो जाती थी। मित्रता का सिलसिला क्लब से चलकर जिन्दगी के हर पहलू में उनके साथ रहता था, लेकिन बहुत सोचसमझ कर पालते थे इस दोस्ती के जंजाल को, वकील साहब। उनकी तेज नजर एक ही बार किसी आदमी पर पड़ने से यह जान लेती थी कि वह किस मतलब का आदमी था। किसी आदमी से काम

ले लेने की कला में वकील साहब बहुत प्रवीण थे।

वकील साहब के दफ्तर में कुछ खास मुअक्किलों के ठहरने का भी प्रबन्ध रहता था और खास तौर पर कारिन्दे के लिए तो पूरा साजोसामान जुटा दिया जाता था उसके पहुँचते ही। जितनी देर वकील साहब को बातों में लगी उतनी देर में वकील साहब के मुंशी ने कारिन्दे के लिए ठहरने का पूरा प्रबन्ध कर दिया।

"अब आप नहा-धोकर आराम कर लीजिये मुखत्यार साहब और मैं जरा इधर-उधर का काम निपटा दूं। फिर कचहरी चलेंगे साथ-साथ। सब ठीक हो जायगा, आप बिलकुल निश्चिन्त रहें।"

कारिन्दा वकील साहब के मुंशी के साथ बराबर के कमरे में चला गया। वहाँ पलंग पड़ा था एक बहुत चौड़ा और दो कुर्सियां लगी थीं। एक शीशा भी था दीवाल में और उसी के नीचे एक साधारण मेज पड़ी थी। कमरे के साथ ही गुसलखाना भी था।

"गर्म पानी का नहाने के लिए प्रबन्ध कर दिया है मुखत्यार साहब आपके लिए।" मुंशी ने कहा।

"अरे! मुंशी जी। आपको सचमुच बहुत तकलीफ देता हूँ मैं यहाँ आकर।"

"यह भला क्या कहने लगे आप मुखत्यार साहब! आपका काम करने में तो मुझे वह लुत्फ आता है जो अपने पिताजी का काम करने में भी नहीं आता। उनसे तो सदा ही डर लगता रहता है और आपतो हर काम प्यार से कराते हैं। आप कितना अपना समझते हैं मुझे, जब कभी मैं यह सोचता हूँ तो सच जानिये मुखत्यार साहब! सोचता ही रहता हूँ, न जाने कितनी देर तक।" हाथ जोड़कर दस्तबस्ता मुंशी जी ने तन्मयता के साथ कहा।

चाटुकारी में वकील साहब के मुंशी को कमाल हासिल था। अपने मुअक्किल के पेट में घुस जाना और उसपर छा जाना, यह दोनों बातें वह खूब जानता था। बड़ा मुअक्किल देखता था तो पेट में घुसता था और लल्लू-पंजू देखता था रौब डाल कर उसे पंजे में फंसा कर वकील साहब के सामने

परख देता था। एक बार मुअक्किल उसकी नजर में आकर फिर जाय,—क्या मजाल। वह भी माहिर था अपने फन का।

कारिन्दा हमेशा से दाद देता आया था मुंशी के कामों की। मुक्त कंठ से कहता था,—"भाई वकील साहब तो हैं ही लेकिन मुंशीजी तुम्हें भी कमाल हासिल है। अदालत का हर अहलमद झुकता है तुम्हारे सामने। घन्टों का काम मिनटों में कराते हो। यह खूबी देखी तुम्हारे अन्दर।"

इस पर मुंशी भी गर्व से कहता,—"मुखत्यार साहब, खरा पैसा खरा काम। यह दुनियाँ तो पैसे की है, मैं तो साफ कहता हूँ। चाहूँ तो मैं कचहरी की सारी मिसलें इसी दम उठा लाऊं। सब मानते हैं मुझे। और मानते भी इसीलिए हैं कि मुझसे ज्यादा खिलाने वाला मुंशी कचहरी भर में नहीं मिलेगा। अपना हक़ छोड़ देता हूँ मुअक्किल पर लेकिन अहलमद का पेटा खाली नहीं छोड़ता, और चपरासी का हक तो पहले धरा लेता हूँ।"

"इस में क्या शक है। और फिर चपरासी के क्या बेचारे के खेती होती है? उसे भी अपने बालबच्चे पालने हैं। आप ही लोगों से चलता है उनका पेट भी। हक है उनका और वह उन्हें जरूर मिलना चाहिए।" कारिन्दा कहता।

"लेकिन मुखत्यार साहब! आप जैसे समझदार मुअक्किल सब तो नहीं होते। एक-से-एक चपरकनाती[1] आता है यहाँ इस बस्ते पर। बाज-बाज तो चाहता है कि उल्टा हमारा बस्ता ही उठाकर रफूचक्कर हो जाय। लेकिन मैं मुँह नहीं लगाता ऐसे रीते-थोते[2] मुअक्किलों को।" मुंशी ने मुँह बिचकाते हुए कहा।

"यह ठीक है तुम्हारा उसूल मुंशी जी! बिना पैसे कचहरी की तरफ को झाँकना भी मूर्खता है। इन्साफ चाहने वाले को पहले यहाँ के मुँशी, बकील अहलमद और अफसरों के साथ इन्साफ बर्तना चाहिए।"

---

१. चलता पुरजा परन्तु बहुत साधारण परिस्थिति का आदमी।

२. जिनकी जेबें गर्म न हों पैसे से।

कारिन्दे के मुह से यह शब्द निकलते ही मुंशी प्रसन्नता से उछल पड़ता और गद्‌गद् होकर कहता,—"मुखत्यार साहब, अगर आप जैसा इन्साफ पसंद जमाना होजाय तो बस क्या ही कहने है ? राम राज्य ही न हो जाय दुनिया में। बेचारे गांधीजी भी इसी के लिए मरते-खपते एक दिन चले ही गये और दुनिया ज्यों-की-त्यों है। बाल बराबर भी तो नहीं सरकी। टस-से-मस नहीं हुई मुखत्यार साहब, टस-से-मस।

"हमारे और अहलमदों के हक पर दाँत पीसते हैं दाँत। लेकिन हम भी सोचे बैठे हैं मुखत्यार साहब, कि चाहे जो भी हो, जब तक गाड़ी रड़कती है तब तक तो अपनी करनी में कमी आने नहीं देंगे।"

"यह तुमने ठीक सोचा है मुंशीजी अपना इरादा इन्सान को मजबूत रखना चाहिए। इरादे में गिरावट आने पर ही इन्सान गिरता है।" गम्भीरता पूर्वक कारिन्दे ने कहा।

मुंशी कारिन्दे का दिल से मान करता था। वकील की फीस के अलावा मुंशी को खुश करना कारिन्दा भी कभी नहीं भूलता था। उसके बाल-बच्चों के लिए कुछ फल और मिठाई भी वह खुद जाकर उसके घर दे आता था,—जिससे मुंशी के बच्चों और स्त्री के दिलों में भी कारिन्दे का सम्मान था और सच यह भी था कि इतने दिन से काम कराते-कराते कुछ घर का सा सम्बन्ध बन गया था कारिन्दे का।

यह मुंशी जब मिडिल पास करके वकील साहब के पास आया था तो कारिन्दे ने इसे होनहार समझकर सिफारिश कर दी थी वकील साहब से, अनजाने में ही। वह बात भी भूली नहीं थी मुंशी को। फिर उसके बाद तो उसके ऊपर ऐहसानों का एक सिलसिला था कारिन्दे का। उसकी शादी में दो सौ रुपया यों ही दे दिया था अपनी ओर से। तभी तो लाख काम छोड़कर भी कारिन्दे का काम करता था मुंशी।

जिस दिन कारिन्दा कचहरी में आजाता था उस दिन मुंशी के गहरे हो जाते थे। अपने महीनों के नाखुश अहलमदों को खुश करने का आज उसे मौका मिल जाता था और अहलमद भी कारिन्दे की इज्जत करते थे। चप-

रासी तो उसी तरह झुक जाते थे उसे देखकर जैसे अपने हाकिम को देखकर झुकना होता था।

आज कचहरी में कारिन्दे ने श्यामू के खिलाफ बेदखलती का दावा डाल दिया। बाकाश्रदा अदालती कार्यवाही पूरी करके संध्या को कारिन्दा लौटा। गाँव के पास वाले स्टेशन पर ताँगा मौजूद था, पहले से ही। कारिन्दा उसमें शान के साथ रेल से उतर कर जा बैठा। स्टेशन का स्टेशन मास्टर भी ताँगे तक कारिन्दे को छोड़ने आया। ताँगा चल पड़ा और ताँगे की जोट ने हवा से बातें कीं। पलक मारते भीखनपुर आगया।

गाँव में घुसे तो सामने ही श्यामू दिखलाई दिया कारिन्दे को। पता नहीं क्यों एक चोट-सी लगी कारिन्दे के दिल पर। लेकिन श्यामू मुस्करा रहा था। उसे पता चल चुका था कि कारिन्दा उसकी बेदखली का मुक़दमा दायर करने गया था कचहरी में। पटवारी ने लाला छेदीमल की दूकान पर बड़े गर्व के साथ कही थी यह बात, और गाँव के बहुत से आदमियों ने सुनी थी।

: ९ :

भीखनपुर और भीखनपुर के आस-पास के देहात में पिछले कुछ दिनों से जो बेदखली का आलम छाया, उससे एक सनसनी फैल गई, लोग बेरोजगार होगये। यह सच था कि पहले साल भर जमीन जोतने-बोने के पश्चात् भी जो फस्ल में गल्ला पैदा होता था वह सब-का-सब पिछले साल के कर्ज की अदायगी में एक बार जमींदार की कोठी में चला जाता था और फिर अगले साल के खाने के लिए कर्ज के बतौर उन्हें गल्ला दिया जाता था; लेकिन एक सिलसिला तो था उनके पास अपने बाल बच्चों को पालने का। इधर जब से जमींदारी समाप्त हुई और काश्तकार भूमिधरों की पदवी पर सरकार द्वारा सुशोभित किये गये तब से उनका यह सिलसिला भी बन्द होगया। जमीनें उनके हाथों से निकल गई और उस जमीन की छाती पर उनके छोटे-मोटे टूटे-फूटे हल-बैलों की जगह गड़गड़ाता हुआ चौधरी राघवनारायण का भारी ट्रेक्टर घूमने लगा।

गाँव के बड़े-बूढ़े कमजोर काश्तकार लाचार होकर छोटी-मोटी मजदूरी की तालाश में इधर-उधर भटकने लगे और कुछ जवान छोकरों ने शहरों के मजदूर-वर्ग में जाकर ठिकाना बनाने का प्रयत्न किया। भीखनपुर की आबादी घटने लगी और वहाँ के अधिकांश लोगों की दशा बिगड़ी। श्यामू अपने देहात की इस गिरती हुई दशा को बड़ी चिन्ता की नजर से देख रहा था। कभी-कभी तो वह घंटों बैठा-बैठा सोचता रहता था कि आखिर यह सब क्या होरहा था? क्या इसी के लिए आजादी का इतना बड़ा घमासान जंग लड़ा गया था? क्या वह आजादी की रूपरेखा यही थी जो इस समय

उसकी नजरों के सामने भीखनपुर में दिखलाई दे रही थी ? गरीब दाने-दाने से मुहताज हो गया । उसके पास जो जमीन का सहारा था वह भी उसके हाथ से छिन गया । अखबार भी श्यामू कभी-कभी देखता था, तो उसमें लिखा होता था 'सरकार ने भारत की खाद्य-समस्या को हल कर दिया । सरकार का अधिक अन्न उगाओ आन्दोलन सफल सिद्ध हुआ ।' और यह सच भी था, क्योंकि भीखनपुर की पैदावार भी इस वर्ष पिछले वर्षों की पैदावार से अधिक थी । टुकड़ों-टुकड़ों में देसी हलों से जोती जाने वाली जमीन को चौधरी राघवनरायण के काबिल कारिन्दे ने मिलाकर एक कर दिया था और आज उसपर नये क़िस्म की खेती हो रही थी, जापानी किस्म से चावल और आस्ट्रेलियन किस्म से गेहूँ बोया जारहा था । डेयरी फर्मिंग भी चालू कर दिया था चौधरी साहब ने और उसके सुप्रबन्ध के लिए सरकार के खाद्य और खेती-विभाग से उन्हें एक अमरीकी जानकार (Expert) की सेवाएँ भी प्राप्त होगई थीं ।

आज भीखनपुर में अनाज और दूध पहले से अधिक पैदा होने लगा था, लेकिन भीखनपुर के रहने वालों के हड्डी के ढाँचे पहले से भी अधिक सूख गये थे । वह बेरोजगार थे और उनका कोई पुरसाँहाल नहीं था । उन्हें दो समय रोटी मिलती थी या नहीं, इसे कोई पूछने वाला नहीं था ।

श्यामू गाँव की बिगड़ती हुई दशा को देखता था और कुढ़ता था मन-ही-मन, परन्तु उसका कुढ़ना कोई हल नहीं था गाँव की समस्या का । आज जग्गो से वह यही सब कुछ कह रहा था,—"जग्गो ! इस आजादी से तो आजादी न मिलती, वही अच्छा था । देख रही हो, भीखनपुर तबाह हो गया । चाहे समझने को हम भले ही मन में समझे बैठे रहें कि गुलामी दूर होगई लेकिन मैं तो देखता हूँ कि असली गुलामी आज ही आई है भीखनपुर में । सारा भीखनपुर गुलाम बन गया है कारिन्दे का । वह हन्टर फटकारता है उन गरीब छोकरों पर जिन्हें काम पर लगाता है, खाल उधेड़कर रख देता है , और वे बेचारे अपने पेट की खन्दक को पाटने के लिए उसकी नाजायज गालियाँ, फटकारें और मार सहन करते हैं ।"

आज जग्गो के मुख पर मुस्कराहट नहीं थी। उसे भी अफसोस था भीखनपुर की दशा पर। गाँव का काश्तकार-वर्ग एकदम समाप्त होगया था। उसे शरण लेनी पड़ी थी मजदूर-पेशे की। और कोई चारा नहीं था उनके पास। फिर मजदूरी भी काफी नहीं थी भीखनपुर में। भीखनपुर में रहने का लोभ और पेट की ज्वाला के बीच सिटपिटा रही थी भीखनपुर की जनता। उजड़ता जारहा था यह देहात धीरे-धीरे। जग्गो ने कहा,—"चौधरी राघवनारायण ने अपने सब काश्तकार बेदखल करा दिये,—बस तुम रह गये हो अकेले। सो तुम पर भी मुकदमा चल रहा है अदालत में। भगवान् जाने किस करवट ऊँट बैठता है ?"

"ऊँट जिस करवट बैठेगा जग्गो! वह छुपा नहीं है, लेकिन आखरी दम तक दाँत खट्टे करता रहूँगा कारिन्दे के। बला से मुकदमा हार जाऊँ, लेकिन मजा जरूर चखादूंगा मुकदमा करने का। अफसोस इतना ही है कि गाँव साथ नहीं देरहा, वरना मुकदमा जीतकर दिखला देता अदालत से।" साहस के साथ श्यामू ने कहा।

"साथ कहाँ से दे गाँव ? पेट जो लगा दिया है भगवान् ने सभी के। यही तो कर देता है जबान बन्द। काश्तकार की बेदखली कराली और मजदूर बनाकर रख लिया उसे,—यही सब किया है कारिन्दे ने। किसी का हक नहीं बर्दाश्त कर सकता कारिन्दा।" जग्गो ने गम्भीरतापूर्वक कहा, परन्तु फिर एक हलकी-सी मुस्कान दौड़गई उसके चेहरे पर और वह इठलाती हुई बोली,—"सब ठीक ही है जी! जो हो रहा है। आखिर सब मजदूर ही बन जाएँगे हम, बस यही न होगा! मजदूरी तो हम आज भी करते हैं, और तब भी कर सकेंगे।"

जग्गो के साहसपूर्ण शब्दों ने श्यामू के निस्तेज होते हुए मुख पर कांति का प्रसार किया, एक चमक लादी; और उसके शिथिल होते पराक्रमी भुजदण्ड फिर से फड़क उठे। उसके संकल्प पर सान चढ़ादी जग्गो ने और श्यामू अब निश्चिन्त था। अपने काम पर जुटा था वह पहले की ही तरह। विपत्ति जो भी आयेगी सामने, उसका हँसकर सामना करेगा, यह उसने ठानली

थी; लेकिन झुककर नहीं चलेगा और न ही पेट की खातिर कारिन्दे के सामने गिड़गिड़ायेगा ।

इस बार गर्मी की छुट्टियों में जब स्कूल बन्द हुए तो पटवारी का लड़का जगन्नाथ जिसे गाँव के सभी लोग जगन कहकर पुकारते थे, और लाला छेदीमल का छोटा लड़का रामलाल जिसका प्यार का नाम रमला ही भीखनपुर जानता था, गाँव में आये। लड़के दोनों ही होनकार थे । एफ० ए० की कक्षा में पढ़ रहे थे मेरठ के किसी कॉलेज में। विचार भी दोनों के तरक्की पसन्द थे।

आज अचानक ही जगन और रमला सुबह-ही-सुबह नहर की पटरी पर घूमते-घामते, गाँव की ताजी हवा में इठलाते और गाते, श्यामू के खेत की ओर जा निकले । श्यामू खेत के किनारे अपनी पुरानी कीकर के नीचे बैठा, एक रस्सी बट रहा था। कुछ सन के पूंजे[1] पानी में भीगे, रखे थे उसके पास और दस-बीस गज लम्बी बटी हुई डोर पड़ी थी वहीं । जंगल में कुए से पानी खींचने के लिए लोटे की डोर तय्यार कर रहा था श्यामू ।

रमला पास में पहुँचकर बोला,—"चचा डोर बट रहे हो ।"

"हाँ, डोर ही बट रहा हूँ एक। यहाँ जंगल में लोटा-डोर के बिना कभी-कभी बड़ी परेशानी हो जाती है बेटा ! पानी पीने के लिए काफी दूर भागना पड़ता है।" श्यामू ने कहा और फिर प्यार के स्वर में बोला,—"स्कूलों की छुट्टियाँ होगईं मालूम देती है रमला ! क्यों जगन, क्या गर्मियों की छुट्टियों में आये हो ?"

"हाँ चचा ! इमतहान देकर आये हैं।" जगन ने कहा ।

"फिर कैसे किये इमतहान के पर्चे ? पास तो जरूर हो जाओगे न ?" श्यामू ने पूछा ।

"पास होने में तो कोई शक है ही नहीं चचा ! बात तो अव्वल आने की है।" जगन हँसता हुआ बोला ।

---

1. गुच्छी ।

"बेटा ! इरादा किया है और मेहनत की है तो जरूर अव्वल भी आओगे, आओगे क्यों नहीं ? अव्वल भी तो लड़के ही आते हैं।" श्यामू ने जगन को उत्साह दिलाते हुए प्यार से कहा,—"आओ, बैठ जाओ यहीं खेत के डौले पर।"

जगन और रमला दोनों श्यामू के पास बैठ गये । बहुत देर इधर-उधर की गप्पें लगाने के बाद जगन ने पूछा,—"चचा ! एक बात पूछूँ अगर बतलाओ तो।"

"पूछो बेटा ! जरूर बतलाऊँगा, अगर जानता हूंगा। बतलाऊँगा क्यों नहीं।" श्यामू बोला।

"चचा ! पूछने के फिराक में तो मैं कई दिन से था लेकिन बस मौका न लग सका। मैंने अखबारों में पढ़ा है, और बड़े मोटे-मोटे अक्षरों में पढ़ा है, कि हमारी सरकार ने जमींदारी का खात्मा कर दिया। जमीन सब उन काश्तकारों को बाँट दी गई जो उसके असली जोतने-बोने वाले हैं, लेकिन भीखनपुर को देखकर तो ऐसा लग रहा है कि मानो इस गाँव पर सरकार का वह कानून लागू ही नहीं हुआ।" जगन कहता जारहा था और श्यामू तन्मयता के साथ इस बच्चे के उद्‌गारों की सच्ची आवाज को सुन रहा था। जगन कहता गया,—"पचासों हल चलते थे भीखनपुर में, सेंकड़ों बैल थे और संध्या को जब गाँव भर के हल खेतों से छूटकर आते थे तो गाँव का वायुमण्डल स्वरमय हो उठता था उन गाँव में घुसते हुए बैलों के गलों की टल्लियों की झंकार से। वह सब मानो लोप ही होगया भीखनपुर से। गाँव ऐसा लगता है मानो जान ही निकल गई हो इसकी। एक शव-सा रह गया है यह गाँव का।"

श्यामू का रस्सी बटना बन्द होगया जगन की यह बात सुनकर वह श्यामू जिसने विपत्तियों के पहाड़ों से टकराकर कभी उफ तक करनी भी नहीं सीखी थी, आँखों से आँसू बहा रहा था इन अबोध बालों के सामने।

"चचा ! रो रहे हो तुम !" जगन ने गम्भीरतापूर्वक कहा। "मैं जानता हूं तुम क्यों रो पड़े चचा !" और चुप हो गया जगन।

"रो नहीं रहा हूँ बेटा जगन ! तुमने याद दिलादी बीते हुए भीखनपुर

की, इसीसे जरा कलेजा भारी हो आया। भीखनपुर के मेहनतकश किसान शहरों की मिल और कारखानों के पुरजे बन गये जाकर और उनमें से बहुतों ने तो अब मोह ही त्याग दिया भीखनपुर का। उन लोगों के मकान ढुंड[1] बन गये हैं। कोई रहता नहीं उनमें। कुछ लोगों के बूढ़े मां-बाप कुछ मकानों में पड़े अपनी जिन्दगी के आखरी दिन पूरे कर रहे हैं और कुछ के बच्चे तथा वह सब चौधरी राघवनारायण के फार्म में नौकर होगये हैं।" गम्भीरतापूर्वक श्यामू ने कहा।

"यह तो खूब रही चचा! आजादी के घोड़ों की बग्घी में बैठकर हिन्दुस्तान आगे को बढ़ा और बेचारे भीखनपुर ने अपनी दौड़ पीछे को लगानी शुरू करदी। लेकिन यह सब कुछ हुआ कैसे चचा! जरा यह भी तो जानलूं।" उत्सुकता से जगन ने पूछा।

"यह जानकर क्या करोगे बेटा! यही तो भीखनपुर की बर्बादी की कहानी है।" श्यामू कहता-कहता चुप हो गया।

श्यामू जानता था कि जगन एक अच्छे विचारों का लड़का था गाँव का और वह यह भी जानता था कि उसे भीखनपुर की दशा देखकर हार्दिक खेद हुआ था; परन्तु वह यह उससे स्पष्ट रूप में भला किस प्रकार कह डालता कि भीखनपुर की बर्बादी का राज जगन के पिता, गाँव के पटवारी, की हवेली में छिपा हुआ था। श्यामू ने कुछ न कहना ही पसन्द किया।

लेकिन जगन मानने वाला नहीं था। उसने श्यामू को मजबूर कर दिया कि वह असली बात उसे बतलाये और श्यामू को बतलानी पड़ी। श्यामू के दिल में ज्वाला जल रही थी। उजड़ता हुआ भीखनपुर उसकी नजरों के सामने था। भीखनपुर का हर काश्तकार और उसका परिवार भीखनपुर-शरीर की हड्डियों के ढाँचे में एक मजबूत हड्डी के समान था। इन हड्डियों में से एक-एक हड्डी को कारिन्दे, पटवारी और लाला छेदीमल द्वारा चूस-चूस कर फेंकते हुए श्यामू ने देखा था। श्यामू आखरी हड्डी थी इस शरीर की और उसी की

---

१. खण्डहर मकान।

श्रोर अब नजरें गड़ी हुई थीं कारिन्दे और कारिन्दे का जूठन खाने वाले गिद्धों की; परन्तु उनका भय नहीं था श्यामू को। मृत्यु उसे स्पष्ट सामने दिखलाई दे रही थी, लेकिन वह तय्यार नहीं था उस मौत से डर कर भाग खड़ा होने के लिए। वह साहस के साथ डटा हुआ था उसके सामने, उसी मुस्तैदी के साथ। रोजाना सुबह अपने बैलों की जोड़ी का पघा पकड़े, कंधे पर हल रखकर शान के साथ निकलता था भीखनपुर के दगड़े के बीचों-बीच और चौधरी राघवनारायण के फार्म का कलेजा चीरता हुआ अपने तीन खेतों के किनारे पर जा खड़ा होता था। हल जोतता था आज भी उसी अदा के साथ और उसके सीने का उभार भी ज्यों-का-त्यों था, कोई बल नहीं आया था उसमें।

जगन श्यामू चचा का मान करता था, अपने पिता से किसी कदर कम नहीं। और आज जब उसने अपने पिता की काली करतूतों की कहानी सुनी तो उसे घृणा हो उठे अपने पिता और उसकी उस नई बनी हुई पक्की हवेली के प्रति।

दिल का दर्द सुनने वाला जब सही आदमी मिल जाता है तो अपना दर्द बँटाने के लिए दर्द वाला आपनी सारी ही दास्ताँ कह डालना चाहता है। श्यामू ने जी खोलकर जगन को अपने दिल का हाल सुनाया और जगन ने भी उसे मन लगाकर ऐसे सुना मानो रामायण का पाठ कर रहा था श्यामू,—इस गाथा में रस का असीम प्रवाह था, करुणा उमड़ी पड़ रही थी। जगन की आँखों के सामने भीखनपुर छोड़कर जाने वाले अपने कितने ही चचा ताउओं के चित्र चल-चित्र की भाँति आ-आकर विलीन होने लगे और उसे लगा कि मानो अब जीवन में कभी फिर उनके दर्शन नहीं हो सकेंगे।

जगन तिलमिला उठा श्यामू चचा की कहानी सुनकर और एकदम बौखलाकर बोला,—"चचा! तुम्हारे खेतों में कारिन्दा घुस नहीं सकता। पिता की सौगन्ध खाकर कहता हूँ चचा! मैं भरी अदालत में कहूँगा कि मेरे पिता ने रुपया लेकर चौधरी राघवनारायण को झूठी रसीदें दी हैं। यह पाप किया है, चचा! पिताजी ने, और मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूंगा।" क्रोध के आवेग में बदन काँप रहा था जगन का।

श्यामू ने जगन के चेहरे पर गम्भीरतापूर्वक देखा और फिर धीरे से उसी स्थिरता के साथ कहा,—"क्रोध में न आओ बेटा ! सोच समझ कर कहो जो कह रहे हो तुम। कह सकोगे यह बात भरी अदालत में ? तुम्हें विश्वास है अपने श्यामू चचा की बात पर ?"

"मैं जरूर कह सकूंगा चचा ! मुझे पूरा-पूरा विश्वास है आप पर । मैं जानता हूं कि आप झूठ नहीं बोल सकते ।" उसी गम्भीरता के साथ जगन ने कहा ।

"तो ठीक है बेटा ! आजमाइश का दिन दूर नहीं है, बहुत ही करीब दीख रहा है मुझे । तुम बयान देना अदालत में और उसके बावजूद भी अगर मुझे इन तीन खेतों से बेदखल हो जाना पड़ा तो मुझे तिल के बराबर भी अफसोस नहीं होगा । मुझे खुशी ही होगी इस बात की कि नाइन्साफी ने आखिर इन्साफ को जन्म दिया । तुम्हारे अन्दर मैं भीखनपुर की उजड़ती हुई बस्ती के फिर से बसजाने के आसार देख सकूंगा और मुझे विश्वास है कि आने वाले जमाने में तुम लोग अपने भीखनपुर से रूठकर चले जाने वाले लालों को फिर समेटकर इसमें भर सकोगे ।" श्यामू ने गम्भीरतापूर्वक कहा ।

जगन बातें करके गाँव को चला गया और श्यामू फिर अपनी रस्सी बटने लगा । बटता रहा बहुत देर तक और सोचता रहा, 'एक अजीब दुनिया है यह भी । बाप कुछ है तो बेटा कुछ । बाप को देखता हूं तो जी चाहता है कि पाजी के बाल नोंच डालूं, बोटी-बोटी उड़ादूं कमीने की, कुत्ते छुड़वादूं जमीन में गड़वाकर, खून पी जाऊँ उसका कलेजा चीरकर,—जो कुछ भी कर सकूं, कर डालूं उस कमीने के साथ और बेटे को देखता हूं तो प्यार से भर आता है कलेजा । मौका पड़े तो कान्हा और उसके भाई के मुँह का निवाला भी उठा कर इसे दे दूँ । कोई आफत आये इस पर तो उसमें अपना सिर फँसादूं । कोई इसका बलिदान माँगे तो अपना सिर कटादूं ।"

बड़ी देर से जग्गो श्यामू के पीछे खड़ी देखती रही उसे रस्सी बटते । सागतोड़ने आई थी खेत में । मुस्कराकर बोली,—"मैंने कहा, बड़ा जी देकर रस्सी बटी जा रही है ।"

"अरे जग्गो ! तू कब की खड़ी है पीछे ?" गर्दन घुमाकर श्यामू ने पूछा ।

जग्गो ने देखा कि श्यामू आज बहुत ही प्रसन्न था । ऐसी प्रसन्नता की आभा उसने आज काफी दिन बाद देखी थी श्यामू के चेहरे पर ।

"आज तो कुछ नई बात मालूम देती है ।" जग्गो ने हँसकर कहा ।

"बिलकुल नई बात है जग्गो, बिलकुल नई । तुझे भी बहुत ही खुशी होगी यह सुनकर ।" श्यामू खुशी-खुशी बोला ।

"आखिर सुनूं भी तो ।"

"जगन आया था अभी ।"

"कौन जगन पटवारी का बेटा ?"

"हाँ-हाँ ! वही । बड़ा ही अच्छा और होनहार लड़का है ।"

"बहुत नेक । गांव भर के लड़कों में एक ही है बस ।" श्यामू की बात का सर्थमन करते हुए जग्गो ने कहा ।

"तेरा खयाल ठीक है जग्गो ! गाँव में उसके जैसा और एक भी लड़का नहीं है । बेचारा बहुत दुखी था गाँव की दशा देखकर, और कह गया है कि चचा, अपने पिता के खिलाफ तेरी गवाही दूँगा अदालत में ।" श्यामू बोला ।

"सच !" अचम्भे में भरकर जग्गो ने पूछा ।

"सच जग्गो ! कसम खा रहा था अपने पिता की ।"

लेकिन जग्गो का उत्साह एक क्षण भी स्थायी न रह सका । उसके चेहरे पर यकायक उदासी छाती चली गई ।

"क्यों जग्गो ! तू उदास क्यों हो गई ?" श्यामू ने पूछा ।

"कोई खास बात नहीं, लेकिन हमें जगन की गवाही नहीं चाहिए, पटवारी कहेगा कि मेरे बेटे को बहका लिया ।" गम्भीरता पूर्वक जग्गो ने कहा ।

"लेकिन मैंने बहकाया नहीं जगन को । यह उसका अपना विचार है ।" स्थिरता से श्यामू ने कहा ।

"लेकिन यह बात गाँव नहीं मानेगा ।" जग्गो बोली ।

"तो न माने गाँव। गाँव मानता ही क्या है? गाँव क्या नहीं जानता कि इन तीन खेतों को पुश्त-दर-पुश्त से श्यामू के बाप दादे जोतते चले आ रहे हैं? गाँव जो कुछ जानता है उसी पर कौन जबान खोल कर कुछ कहता है? मैं इसकी चिंता नही करता। जगन विचारवान लड़का है। अगर वह अदालत के सामने सचाई रखना चाहता हे तो क्या मैं मना करदूँ उसे? यह मुझसे नहीं होगा।" श्यामू ने कहा।

और जग्गो चुप थी, उसकी अनुमति थी श्यामू के साथ।

: १० :

पटवारी के घर में एक तूफान मचा डाला जगन ने और खुल कर साफ-साफ कह दिया कि वह सरे आम अदालत में उसके खिलाफ बयान देगा। पटवारी भिनभिनाया, किड़किड़या, सिटपिटया और गिड़गिड़या जगन के सामने, परन्तु जगन पर इन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जगन अपने विचारों में बहुत स्पष्ट था। पटवारी की कारिन्दे से साठ-गाँठ की पूरी पोल जगन को मालूम हो चुकी थी। यों खुले तौर पर अदालत में गाँव का कोई भी आदमी चौधरी राघवनारायण के खिलाफ जाने का साहस नहीं कर रहा था, परन्तु अन्दर-ही-अन्दर घुटन सभी लोगों के मन में थी। विशेष रूप से उन लोगों के दिल तो नासूर बन चुके थे जिनकी बेदखली कराके कारिन्दे ने उनके खेतों पर अपना ट्रैक्टर घुमाया था। उनकी दशा उन बेजबान जानवरों की-सी थी जिन्हें जबह किया गया था और फिर सिसक-सिसक कर प्राण देने के लिए एक ओर पटक दिया था।

कारिन्दा इन लोगों की गिरती हुई दशा का बड़े गर्व के साथ मुकाबिला करता और प्रसन्न होता था अपनी विजय पर; साथ ही मन-ही-मन दाद भी देता था चौधरी राघवनारायण की दूर-दर्शिता की। क्या खूब दिमाग पाया था उसके चौधरी ने भी। काश्तकारों के उठने वाले बवंडर को ऐसे दबा दिया कि मानो वह उठा ही नहीं उनके इलाके में। चारों ओर का वातावरण शान्त-ही-शान्त था। किसी की हिम्मत नहीं थी कि जो कान-पूंछ फटकार पाता उनके सामने।

चौधरी राघवनारायण आज भी गरीबों के पहले की ही तरह परवरदिगार थे,—बड़े रहम दिल थे चौधरी साहब। अभी पिछले ही सर्दियों के मौसम में उन्होंने पच्चीस कम्बल बांटे थे गाँव में गरीब लोगों को,—बिलकुल मुफ्त और कुछ अनाज भी दिया था कभी वख्तन-फवख्तन कुछ बेगार में काम ले-लेने के बदले। चौधरी साहब का गुणगान भी किया था उन कम्बल और अनाज लेने वाले गरीब लोगों ने, परन्तु गाँव का वह तब-का दुखी ही था जो न तो भीख स्वरूप मिला मुफ्त कम्बल ही ग्रहण कर सकता था और न अनाज ही ले सकता था कभी बेगार देने के विलएवज। जो सच्ची मजदूरी करके इज्जत के साथ अपनी जिन्दगी बिताने वाला भीखनपुर का वर्ग था, उस पर कारिन्दे की खास नजर रहती थी।

कारिन्दा आराम से अपने पलंग पर बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा था और गाँव के चन्द लोग अपने बेटों को लिए उनके सामने जमीन पर बैठे थे। उन्हें नौकर कराने के लिए लाये थे चौधरी साहब के फारम में।

"देखो भाई! कान खोलकर सुनलो! यहाँ मटर-गश्ती करने के लिए आना हो तो नाम मत लेना आने का। काम पूरा-पूरा नाप-तोल कर लिया जाता है मेरे यहाँ। हरामजदगी बिलकुल नहीं चल सकती।" कारिन्दे ने मूँछों पर ताव देते हुए कहा,—"समझलो! और नौकरी चौबीस घन्टे की होगी। घर बार छोड़कर फारम में ही लेट लगाना होगा।"

"सब बात मंजूर हैं सरकार।" उन लड़कों के पिताओं ने कहा। "आप माई-बाप हो इनके। काम से जी चुराने वाले नहीं हैं ये छोकरे। काम तो नाच कर आगे-आगे दौड़ने लगता है इनके मुखत्यार साहब!"

"बहुत खूब! बहुत खूब! तो बस मौज करो फिर बेटा! खाओ पीओ और मस्ती की छानो। खाना कपड़ा और दो रुपये महीना मिलेगा शुरू में। फिर जैसा काम वैसे दाम।

"मंजूर हैं तो हां करो।"

"मंजूर है सरकार!" और भर्ती खुल गई चार छोकरों की; दो को

डेयरी में गोबर समेटने और सफाई का काम मिल गया और दो को जानवरों की अन्य देखभाल के विभाग में भेज दिया गया। लगभग तीस छोकरे काम करते थे अब कारिन्दे के डेयरी फारमिंग विभागों में। पूरा कारखाना बनता जा रहा था भीखनपुर में।

इसी समय कारिन्दे ने क्या देखा की पटवारी बेतहाशा लपका हुआ चला आ रहा था उसकी ओर। ऐनक उसके हाथ में थी और कोट के बटन उलटे सीधे भिड़े हुए थे। धोती की लाँग लटकती और जमीन पर घिसटती आ रही थी, थोड़ी नाली के पानी में भीग कर दगड़े की मिट्टी से भी लिथड़ गई थी और साँस चढ़ रहा था उसे बुरी तरह।

कारिन्दा पटवारी का रूप देखकर मुस्कराया और फिर गम्भीरता पूर्वक बोला,—"अरे क्या गजब होगया पटवारी? क्या कहीं पुलिस आ रही है, गिरफ्तारी के लिए पीछे से?"

"पुलिस-वुलिस नहीं है मुखत्यार साहब! लेकिन गजब हो गया।" हाँफते हुए पटवारी ने नाक पर चश्मा चढ़ा कर कहा।

"आखिर कुछ हो भी गया गजब! जरा मैं भी तो सुनूँ।" कारिन्दे ने उसी स्थिरता और मुसकान भरे चेहरे से पूछा।

"बस, गजब हो गया मुखत्यार साहब! इस पाजी श्यामू ने मेरा घर फोड़ लिया।"

"घर फोड़ लिया! यानी कूमल करके चोरी करली?" आश्चर्य चकित होकर कारिन्दे ने पूछा।

"चोरी, मुखत्यार साहब! चोरी। मेरी जिन्दगी भर की कमाई पर कब्जा करके बैठ गया यह बदमाश कहीं का। मुझे कहीं का नहीं छोड़ा इसने।" और यह कहते हुए वह बुरी तरह सामने पड़े मूढ़े पर पसर गया।

कारिन्दा कुछ समझा नहीं पटवारी की बात। श्यामू ने घर फोड़ लिया, यह वह विश्वास नहीं कर सकता था और दूसरी ओर सामने मूढ़े पर ढुलका पड़ा पटवारी हिड़कियों-हिड़कियों रो रहा था, मानो उसका तो वास्तव में सभी कुछ लुट चुका था।

"अरे भाई, खुलासा भी कहोगे या रोते ही रहोगे। श्यामू ने घर फोड़ लिया तुम्हारा, यह बात मेरी समझ में नहीं आती।" गम्भीरता पूर्वक कारिन्दे ने कहा।

"मेरा जगन लूट लिया मुझसे मुखत्यार साहब ! आखिर कैसे बतलाऊँ आपको ? मैं कहीं भी नहीं रहा। सच जानिए मैं लुट गया।" और इतना कहकर पटवारी फिर माथा पकड़ कर आँसू बहाने लगा।

"तेरा जगन लूट लिया......" कुछ समझ न सका कारिन्दा।

"मुखत्यार साहब ! आप समझ ही नहीं रहे हैं, बस, रोना तो इसी बात का है, वरना रोना ही क्या है ? कुछ सबील बतलाई होती तो रोना बन्द हो गया होता आपके पटवारी का। उस जगन के बच्चे को कुछ ऐसा पाठ पढ़ाया है इस श्यामू के बच्चे ने कि उसने मेरा जीना मुश्किल कर दिया है। कहता है कि वह मेरे खिलाफ और आपके खिलाफ कचहरी में गवाही देगा।"

कारिन्दा पटवारी की बात सुनकर जोर से खिलखिला कर हँस पड़ा। और फिर मूँछों पर ऐंठ चढ़ाता हुआ बोला,—"पटवारी ! अपने खसरे और खतौनी की काट छाँट की चिन्ता करो। यह अदालती पेचीदगी हमारे लिए रहने दो। कागज का पेट जब पूरी तरह भर लेते हैं हम, सिर्फ तभी कोई कदम उठाते हैं। जगन तो क्या अब तो जगन का बाप भी अगर चाहे कि श्यामू को बचाले, तो एक से लाख तक नहीं बचा सकता।"

"बहुत खूब !" एकदम उछल कर पटवारी ने कहा; परन्तु तुरन्त ही कारिन्दे ने देखा कि पटवारी का चेहरा कुछ गमगीन-सा हो गया। कारिन्दे ने यह बात इतने जोरदार शब्दों में कही कि उसने जगन के बाप, यानी पटवारी की हस्ती को भी रगड़ कर रख दिया। पटवारी के दिल पर एक गहरी चोट लगी, परन्तु उस सब को दबाकर अपने को सँभालता हुआ बोला,—"कानून तो ठीक है मुखत्यार साहब ! लेकिन अगर उसने अदालत में जाकर कुछ ऐंडा-बेंडा बयान दे दिया तो फिर क्या होगा ?"

"उसका क्या होना है ? अदालत एक बेवकूफ लड़के के बयान मानकर

उन्हें नाकाबिले गौर समझलेगी ।" इतनी गम्भीरता और ठंडे दिल से कारिन्दे ने यह कहा कि मानो उसे सब कुछ पता था जो हो रहा था और उसे यह भी पता था कि वह मुल्ला अधिक-से अधिक किस मस्जिद की मंजिल तक दौड़ लगा सकता था ।

कारिन्दा मुस्करा कर बोला,—"अदालत की तुमने क्या फिक्र की पटवारी ! वह तो अपना रोज का काम है। देना-लेना चलता है सभी अफसरों से । अभी परसों ही तो क्लब की दावत में मजिस्ट्रेट से बातें हुई थीं चौधरी साहब की । सब ठीक कर दिया है मामला । फैसला ऐसा नपा-तुला होगा कि बस अपील की कोई गुंजाइश ही न रहेगी ।

"हम तो फैसला अपने वकील से लिखाकर उसपर हाकिम के दस्तखत करा के मुकदमा लड़ने वाले आदमियों में से हैं पटवारी ! कच्ची गोली नहीं खेलते हैं अदालत में । अपनी याद में आज तक एक भी मुकदमा नहीं हारा और अब तो रोब रहता है अदालत पर कि चौधरी राघवनारायण का कारिन्दा कभी झूठा मुकदमा पेश ही नहीं करता अदालत के सामने ।

"शक्ल देखकर फैसला लिखा जाता है पटवारी !"

कारिन्दे की यह अभिमान पूर्ण बात सुनकर पटवारी के दिल में अन्दर-ही-अन्दर एक कुढन पैदा हुई और उसे कारिन्दे के गर्व की पूरी मीनार अपनी उन्हीं दो पर्चियों पर खड़ी दिखलाई दी जिनमें पटवारी ने अपनी करामात दिखलाई थी । आज उनका कोई नाम नहीं था, कोई एहसान नहीं था । यह आखरी मुकदमा था इस किस्म का और अब कारिन्दे को पटवारी की कोई खास जरूरत नहीं थी किसी काम में । पटवारी को लगा कि आज कारिन्दे ने उसकी अवहेलना की, उसका वह आदर सम्मान उसने नहीं किया, जो उसे करना चाहिए था, या जो पहले वह किया करता था । पर्चे पाजाने के बाद कारिन्दे ने पटवारी के यहाँ आना-जाना भी बन्द कर दिया था ।

कारिन्दा जरा चुटकी लेता हुआ बोला,—"अरे पटवारी ! तू भी खूब है । जरा जाकर झंझोड़ डाल न श्यामू को, कि आखिर क्यों उसने तेरे बेटे जगन को बिगाड़ने की कोशिश की । यह कोई शराफत

की बात नहीं। इसके लिए तो तू थाने में रपट करके मुकदमा भी कर सकता है, श्यामू पर। मै पूरा-पूरा साथ दूँगा तेरा।

पटवारी अब जरा सँभल गया था। उसका साँस भी ठिकाने से चलने लगा था और हँपहँपी भी बन्द हो गई थी। कारिन्दे की चाल को समझते हुए बोला,—"यह तो ठीक है मुखत्यार साहब! कि उसने शरारत की है मेरे साथ; लेकिन मौका मिलने पर शरारत करने से कौन बाज आता है? और रही उसे झँझोड़ने और मुक़दमे की बात, झंझोड़नेका मजा तो आप देख ही चुके है श्यामू को; मुकदमे का मजा देखना बाकी है सो वह भी आ जायगा सामने। आपके तजुर्बे को दुहराने की हिमाकत भला मै कैसे कर सकता हूँ?"

जवाब पटवारी ने कटीला दिया; जिसे सुनकर कारिन्दा जरा तिल मिलाया और गहरी नजर से पटवारी के मुँह पर देखकर बोला,—"अरे पटवारी! इन आवारागर्द लड़कों की क्या परवाह करते हो तुम? सीधा नुसखा है इसका तो। यह सब खराबी इन स्कूलों ने पैदा की है। मेरा बस चले तो एक दम बन्द करादूँ सब स्कूलों को। दो हरफ पढ़े और बस बातें छौंकने लगते है अक्ल के पुर्जे बन कर।"

"यह ठीक कहते है आप।" और वाकई पटवारी अपने दिल और दिमाग से सहमत था कारिन्दे की इस बात से।

"यह कल के छोकरे पहले सब करे-धरे पर पानी फेर देने के लिए उतारू हुए बैठे हैं। न इनका कोई धरम है, न करम, न बड़ों की इज्जत न छोटों का प्यार; न घर की मोहब्बत न खान्दान की चिन्ता। जात, बिरादरी तो बेवकूफी से बना दीं थीं हमारे पुरखों ने। अरे पटवारी! तू क्या जानेगा इन्हें, यह तो गधा बतलाते है उन पुरखों को गधा।" कारिन्दे ने कहा।

पटवारी कारिन्दे की इस बात से भी सहमत था। लेकिन उसके जगन में यह बातें नही थी। बड़ों की इज्जत करने में उसने कभी कमी नहीं की। सिर्फ इस बार उसका दिमाग बदला हुआ था।

परन्तु पटवारी और कारिन्दे को क्या पता था कि जिस परिवार,

खानदान और पुरखों की सीमा यह लोग अपने तंग दायरों में बाँधकर चलना चाहते थे उन्हें जगन ने मुक्त कर दिया था। पटवारी अपने जिस प्यार को केवल जगन तक सीमित करके कारिन्दे की साठ-गाँठ से उसके लिए पक्की हवेली बनाने का स्वप्न सच्चा कर रहा था, जगन उसको भीखनपुर के वायुमण्डल में बिखराकर उन ढुंड पड़े फूटते जारहे कच्चे मकानों की लिपाई-लिहसाई और मरम्मत में लगा देना चाहता था। कारिन्दा जिस धन-सम्पत्ति को बटोरकर तहखाने में दफन करने का ख्वाब देख रहा था और भीखनपुर के चन्द प्राणियों के लिए ऐश और अय्याशी का सामान जुटाना चाहता था, उसी को जगन बिखरा देना चाहता था भीखनपुर के घर-घर में,—अनाज और कपड़े के रूप में।

पटवारी कारिन्दे के पास से उठकर अपने मकान की ओर चला तो रास्ते में उसके सामने श्यामू पड़ गया। घेर से घर की ओर जा रहा था। पटवारी के दिल के गुबार ने उसके बढ़ते हुए कदम रोक दिये। वह रुक गया और श्यामू का पल्ला पकड़ कर बोला,—"श्यामू ! यह अच्छा नहीं किया तुमने।"

"क्या अच्छा नहीं किया पटवारी जी ?" श्यामू ने पूछा।

"मेरे घर में आग लगाकर मुझी से पूछ रहे हो श्यामू कि तुमने क्या अच्छा नहीं किया।" आँखें तरेर कर पटवारी बोला।

"जरा होश की दवा करो पटवारीजी ! दौलत के नशे में आदमी का दिमाग ठिकाने नहीं रहता। मैं आपसे ज्यादा बातें करना पसन्द नहीं करता। एक बार पहले भी कह चुका हूँ कि आप अपने रास्ते पर जाइये, मैं अपने रास्ते पर चल रहा हूँ।"

पटवारी के पास श्यामू की इस बात का कोई जवाब नहीं था, लेकिन उसके दिल की जलन कम नहीं हुई इन शब्दों से, बल्कि और लपटें ही निकलीं उसमें से। पटवारी के बेटे जगन ने आज खूब आड़े हाथों लिया था उसे और साफ-साफ कह दिया था कि वह उसकी बेईमानी की कमाई से अपना कोई सम्बन्ध नहीं रखेगा, कदम नहीं रखेगा उस हवेली में।

जगन पटवारी का इकलौता बेटा था, जिसे जाने कितने लाड़-प्यार से पाला था, पटवारी ने। जब वह सिर्फ तीन साल का था, तभी उसकी माँ उसे छोड़कर स्वर्ग सिधार गई थी, और उसके बाद जिस-जिस कठिनाई को सहन करके वह जगन को बी० ए० तक पढ़ाता हुआ बीस साल की अवस्था तक लाया था, इसे उसी का दिल जानता था।

आज उसी जगन ने पटवारी का अपमान किया और यह अपमान उसके विचार से जगन ने श्यामू के बहकाने-फुसलाने में आकर किया।

पटवारी के मन में असीम घृणा थी इस समय श्यामू के प्रति।

श्यामू की बेदखली का मुकदमा अदालत में चालू होगया था। श्यामू पर पहले भी कई बार मुकदमे चले थे, और सरकारी रुख तब भी हमेशा उसके खिलाफ ही रहा था, लेकिन यह मुकदमा उन मुकदमों से भिन्न था। उन मुकदमों में बावजूद सरकारी सख्ती और पुलिस की तनातनी के भी एक जोश रहता था, अदालत खचाखच भरी रहती थी दर्शकों से, और कौमी नारों की आवाज उसके कानों में उत्साह और उमंग का संदेश फूंकती रहती थी। लेकिन यह मुकदमा कोरी डाट-फटकार के अलावा मानो कुछ और था ही नहीं श्यामू के लिए। अदालत के चपरासी से लेकर अहलमद और मुंसिफ तक, सभी की त्यौरी श्यामू पर चढ़ी रहती थीं। मानो सभी का कुछ-न-कुछ चुरा लिया था श्यामू ने।

श्यामू को अदालत का वातावरण देखकर लगा कि वह कोई बहुत बड़ा जुर्म करके वहाँ आया था और इसीलिए किसी की भी सहानुभूति का पात्र वह नहीं बन सकता था। चपरासी ने अदालत के दरवाजे पर पहुँचते ही श्यामू को फटकारा,—"क्या झाँकता है गँवार की तरह? साहब की इजाजत नहीं है अन्दर झाँकने की।"

श्यामू सहमा-सा पीछे हट गया।

थोड़ी देर में कारिन्दा भी वहीं आया और श्यामू ने देखा कि उसी चपरासी ने कारिन्दे को अदब के साथ सलाम झुकाया। कारिन्दे ने भी उसकी खैर-खबर पूछी, मानो पुराने सम्बन्ध थे उनके, और फिर एक दो

रुपये का गुलाबी नोट उसके हाथ में देते हुए पूछा,—"साहब हैं अन्दर !"

"साहब अभी नहीं आये। अहलमद साहब बैठे है। याद कर रहे हैं आपकी। मुंशीजी बतला गये हैं कि आज आप आने वाले हैं।"

"अच्छा !" और कारिन्दा अन्दर घुस गया अदालत में, बिना रोक टोक। उसी तरह घुस गया जिस तरह वह चौधरी राघवनारायण की कोठी में घुस जाता था।

श्यामू ने दूसरे दरवाजे के शीशों में से झाँक कर देखा कि कारिन्दे का खड़े होकर अहलमद ने स्वागत किया और कारिन्दा भी अहलमद से बड़े प्यार के साथ हाथ मिलाकर मिला।

श्यामू ने भिन-भिनाती-सी आवाज में किवाड़ों की दराज से कान लगा कर सुना, कारिन्दा कह रहा था,—"अहलमद साहब ! बड़ा नाक में दम किया हुआ है इस पाजी श्यामू के बच्चे ने। ये चपरकनाती काँगरेसी भी यह समझते हैं कि बस सीधे जवाहरलाल से सम्बन्ध बन गये है इनके।"

"आपने बिलकुल ठीक कहा मुखत्यार साहब ! आपकी बात में जरा भी शक नहीं। सच बात तो यह है कि जब सरकार बदली-बदली थी तो हम भी कुछ भयभीत हो उठे थे, लेकिन अब तो इन गाँधी टोपी वालों को खूब परख लिया है हमने। सच जानो, मैं मुँह नहीं लगने देता हूँ इनको।" एक अदा के साथ अहलमद ने कहा।

"तुम बिलकुल ठीक कहते हो अहलमद साहब ! तुम्हारा हिसाब-किताब मुझे सबसे अच्छा लगता है।" और यह कहते हुए एक पाँच रुपये का नोट कारिन्दे के सामने बढ़ा दिया अहलमद ने उसे साधारण व्यवहार स्वरूप उठाकर अपनी अन्दर की जेब में सरका लिया।

फिर अहलमद बोला,—"मुखत्यार साहब ! एक रुपया इस मिसल वाले मुंशी को भी दे देना।"

"जरूर-जरूर !" कारिन्दे ने तुरन्त जेब से निकालकर एक रुपये का नोट आगे करते हुए कहा,—"लो, आप ही दे देना।" और वह नोट भी अहलमद ने अपनी जेब के हवाले किया।

"मुकदमा आज पेश नहीं होना चाहिए।"

"आप बेफिक्र रहें।"

कारिन्दा मुस्कराता हुआ अदालत से बाहर निकला। श्यामू ने फिर देखा कि चपरासी ने कारिन्दे को सलाम झुकाया। श्यामू खड़ा रहा और कारिन्दा वहाँ से अपने वकील के बस्ते की तरफ चला गया।

श्यामू ने कारिंदे की बातें कुछ सुनीं तो, परन्तु बहुत स्वष्ट रूपमें न सुन सका वहाँ से। संध्या तक अदालत में बराँडे से बाहर खुले मैदान में जमीन पर अपनी चादर बिछाये श्यामू बैठा रहा और उसे मुकदमे की आवाज न लगी।

अदालत का साहब आया, आवाजें लगीं, कुछ मुरझाये और कुछ खिलखिलाते हुए चेहरे उसने अदालत में निकालते-बड़ते देखे, परन्तु श्यामू का नाम लेने वाला वहाँ कोई नहीं था। संध्या को श्यामू ने साहब को अदालत से उठकर जाते भी देखा और जब सब चले गये तो उसे पता चला कि उसके मुकदमे की तारीख आज से पंद्रह दिन बाद दूसरी लग गई थी। आज अदालत के पास इतना अधिक काम था कि वह श्यामू के मुकदमे को न ले सकी।

श्यामू को इसी प्रकार अदालत की पंद्रह पेशियाँ भुगतानी पड़ीं और उसका मुकदमा पेश न हो सका। श्यामू के पैर टूट गये अदालत में आते-आते। अदालत की यह पेशियाँ श्यामू की खेती को बर्बाद कर देतीं, परन्तु वहाँ जग्गो ने घर-बाहर का काम इस खूबी से संभाला कि कारिन्दे का यह जाल असफल सिद्ध हुआ। कारिन्दा इसी तरह पैर तुड़ा-तुड़ा कर श्यामू को झुका लेना चाहता था अपने सामने, लेकिन श्यामू न झुका। वह आज भी उसी तरह भीखनपुर के दगड़ों में छाती निकाल कर चलता था।

कल की पेशी पर पटवारी का बेटा जगन भी श्यामू के साथ अदालत में गया था और इस बार दोनों ने मिलकर एक छोटा-मोटा वकील भी खड़ा कर लिया था मुकदमे की पैरवी के लिए। वकील एक नौजवान लड़का था, सिर्फ दो साल से ही उसने वकालत करनी शुरू की थी। कोई कमरा, बराँडा बगैरा नहीं था उसके पास और अपना मुंशी भी वह खुद ही था। एक शीशम के पेड़ के नीचे दरी बिछाली थी उसने और एक मूढ़ा डालने का काम वह

अदालत के ही एक चपरासी से ले लेता था, दो रुपया महीना पर।

श्यामू और जगन ने मुकदमे के पूरे हालात अपने वकील को समझाये और असलियत बयान की। साथ ही यह भी साफ-साफ बतला दिया कि उनके पास रुपये पैसे की ताकत भी नाँ के ही बराबर है। फिर भी मेहनताने के पचास रुपये तय हुए, जिनमें से पच्चीस रुपये श्यामू ने पेशगी दे दिये।

वकील ने पच्चीस रुपये खुशी-खुशी हाथ में थाम लिये और एक बार तो श्यामू को यह यकीन दिला ही दिया कि हाकिम की कलम तक को पकड़कर फैसला लिखा देने की ताकत उसकी बहस में है।

श्यामू का वकील खड़ा हो जाने पर अहलमद का वह परेशान करने वाला रवैया खत्म हो गया और मुकदमा सही तरीके पर चल निकला। पेशियाँ कायदे में भुगतने लगीं और बयानात लिये जाने लगे।

अदालत जरा-जरा सी बात पर श्यामू को फटकारती थी और कारिन्दे का वकील आगे बढ़-बढ़ कर सवालात और बहस की झड़ी लगाता जाता था। एक ओर खुली छुट्टी थी और दूसरी ओर श्यामू की जबान पर ताला था। श्यामू का वकील कुछ कहने की कोशिश करता तो अदालत कहती,—"अरे वकील साहब ! जबानी बातें न कीजिए। कागजी सबूत पेश कीजिये, कागजी।"

कागजी सबूत का नाम आते ही कारिन्दे के वकील ने पटवारी के हाथ की दोनों रसीदें अदालत के सामने पेश कर दीं। रसीदों पर साफ लिखा था कि उन तीनों खेतों की सीर और खुदकाश्त चौधरी राघवनारायण के नाम पर दर्ज थी।

"कहिए ! इन रसीदों के खिलाफ आपको कुछ कहना है।" अदालत ने गम्भीरता पूर्वक पूछा।

"हुजूर ! यह रसीदें पटवारी से, रुपया देकर बनवाई गई हैं। इन खेतों को श्यामू के बाप-दादे जोतते चले आये हैं।" वकील ने कहा।

"पटवारी को रुपया देकर लिखाई गईं', इसका सबूत ? फिर पटवारी

की रिश्वत के विषय में आपको पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करानी चाहिए। हमारा उससे कोई सम्बन्ध नहीं।

"कुछ और कहना है तुम्हें इस विषय में ?" अदालत ने पूछा।

"सरकार! पटवारी के लड़के जगन का बयान हमारे केस के समर्थन में है।" श्यामू का वकील बोला।

"फुलिश ! हम कह चुके, जबानी बयान क्या माने रखता है खसरे खतौनी की नकलों के सामने ?"

श्यामू का वकील चुप हो गया।

मिसल फैसले के लिए भेज दी गई।

श्यामू नीची गर्दन किये अदालत से बहार निकला। उसके वकील ने अपने मेहनताने के बाकी पच्चीस रुपये माँगे और वह श्यामू ने ठीक उसी तरह अदा किये जैसे बीमार के मर जाने पर उसके शव के सामने डाक्टर की फीस चुकाई जाती है।

पैर भारी हो गये थे श्यामू के। श्यामू को अदालत से बाहर निकलना मुश्किल हो गया। जगन श्यामू के साथ था, रंज था उसे भी आज, और दिल में उसके जलन पैदा होती जा रही थी। अदालत से बाहर वरांडे में उसने कारिन्दे को हँसते और खिलखिला कर अपने वकील से हाथ मिलाते हुए देखा। वकील कह रहा था,—"इसका नाम है मुखत्यार साहब ! मुकदमा। अदालतें मानती है हमें। हम सचाई, और वह भी कागजी सचाई, सामने रखते है अदालत के। यह कल के छोकरे वकील जो हमारे सामने आकर खड़े हो जाते हैं, इन्हें क्या तमीज है मुकदमा लड़ाने की ?"

श्यामू ने यह सब सुना और अच्छी तरह जान लिया कि वह मुकदमा हार गया, उसके खेत उसके हाथ से निकल गये। श्यामू का सिर चकरा रहा इस समय था।

श्यामू और जगन इक्के में बैठकर रेल के स्टेशन पर आये और तीसरे दर्जे का टिकट लेकर गाँव की ओर जाने वाली शटल[1] में जा बैठे।

१. वह लोकल गाड़ी जो छोटी लाइनों पर चलती है।

श्यामू के दिल में विद्रोह और जलन की आग पैदा होती जा रही थी। उसने इन्साफ़ के लिए अदालत का दरवाजा खटखटा कर देख लिया था और अदालत के ढाँचे को देख कर समझ लिया था कि वहाँ से इन्साफ़ की आशा करना मूर्खता की बात थी। एक बार उसके मन में कमजोरी भी आई और उसने सोचा कि क्या वाकई उसने चौधरी राघवनारायण से झगड़ा मोल लेकर मूर्खता की ? अपने खान्दान की बर्बादी का सेहरा अपने ही सिर पर बाँध लिया। अपने बाल-बच्चों का भविष्य अन्धकारमय कर दिया; परन्तु तुरन्त ही उसे अपने अन्दर अपने इस गिरावट के विचार के प्रति घृणा होने लगी और उसे लगा कि उसने जो कुछ भी किया, वह ठीक किया। उसे अभी उससे भी आगे बढ़ना होगा। मुकदमा हार जाना या जीत जाना कभी भी श्यामू के सिद्धान्त की हार-जीत नहीं हो सकती। श्यामू ने अपनी हार में भी विजय के ही दर्शन किये और मन-ही-मन निश्चय कर लिया कि वह नाइन्साफी का आखीर दम तक डटकर मुकाबिला करेगा। जो रास्ता उसने बनाया है अपनी जिन्दगी का, यह मुकदमे की हार उसे उस रास्ते से नहीं हटा सकेगी।

जगन ने देखा कि उसका श्यामू चचा मुस्करा रहा था, और सचमुच वह जोर से खिलखिला कर हँस पड़ा। फिर जगन की पीठ ठोकते हुए बोला,- "शाबास बेटा जगन ! शाबाश ! तुम्हारे बयान ने मेरी तबीयत खुश कर दी।"

"लेकिन कुछ लाभ तो हुआ दिखलाई नहीं दे रहा चचा ! उस बयान का।" जगन ने सहमी-सी भाषा में कहा।

"कोई चिन्ता न करो इसकी जगन ! तुमने सचाई को पहचान लिया, बस, यही इसका सबसे बड़ा लाभ है। जब भीखनपुर के सभी काश्तकार अपनी-अपनी जमीनों से हाथ धो बैठे तो अकेला श्यामू ही भूमिधर बनकर क्या अस्मान पर चढ़ने को था ? जिस दशा में भीखनपुर के और सब आदमी रहेंगे उसी दशा में रहना तुम्हारे चचा श्यामू को भी मंजूर है; लेकिन चौधरी और कारिन्दे की चालबाजी का शिकार बनना मंजूर नहीं तुम्हारे श्यामू चचा को। इस मुकदमे का मकसद सिर्फ बेईमानी और बेइन्साफ़ी के खिलाफ आवाज

बुलन्द करना है। बस यही मैंने किया है और सारे भीखनपुर ने देखा कि मैंने समूचे भीखनपुर के लिए किया। बला से उसका नतीजा कुछ भी हुआ।"

जगन श्यामू चचा के विचारों को सुनकर अन्दर-ही-अन्दर उनपर शैदा हो गया। उसे हार्दिक दुःख था अपने पिता की उस कमीनी हरकत पर कि जिसके फल स्वरूप श्यामू चचा के मुकदमा हारने की सम्भावना थी, परन्तु लाचार था वह, कर ही क्या सकता था इस विषय में ?

श्यामू भीखनपुर पहुँचा तो उसकी मुख-मुद्रा और हाव-भाव को देख कर कोई भाँप नहीं सकता था कि कचहरी में उसके मुकदमे की क्या दशा रही। परन्तु जग्गो को श्यामू ने साफ-साफ बतला दिया कि मुकदमा जीतने की उसे कोई आशा नहीं थी। अदालत का रुख सोलहों आने कारिन्दे के साथ था और फिर उसने जो कुछ अदालत की दशा देखी उसका भी खुलासा बयान किया।

जग्गो मुस्करा रही थी उसी तरह। उसके दिल पर मानो जरा भी मलाल नहीं था, जरा भी सदमा नहीं था,—वह सब कुछ जानती थी जानो पहले से ही। प्यार-भरे शब्दों में बोली,—"मरों को मरने भी दो ! तुम्हीं कहते थे कि आजाद होगया है हिन्दुस्तान। अब बेईमानी नहीं चलेगी। जमींदारी खत्म होगई। जोतने बोने वालों का राज आगया। अब देखलो कैसा राज आगया जोतने-बोने वालों का भीखनपुर में। सब पैसे की माया है। चाँदी का जूता तुम्हारे पास भी होता तो यह पटवारी का बच्चा तुम्हारी गुलामी करता, तुम्हारी जूतियाँ चाटता।"

बात सच थी जग्गो की। श्यामू चुप रहा, परन्तु रंज था उसे। उसे रंज खेतों के छिन जाने का नहीं था, उसे रंज था हिन्दुस्तान की आजादी के विश्रंखल ढाँचे पर, उस ढाँचे पर कि जिसका हर पुरजा पैसे का गुलाम और खुदगर्ज बन चुका था। अंगरेजी शासन-काल में अंगरेज ने इन्सान को पेलने का जो कोल्हू लगाया था वह आज अपनी पूरी रफतार के साथ चल रहा था। देश के महान नेता, जनता और गरीबों के हकूकों के संरक्षक, जो उस समय उस कोल्हू में पिलने वाले कंकालों के शब्दों को सुन कर रोते और

आँसू बहाते थे, वही आज हँसते और मुस्कराते थे; उसे विद्रोह कहते थे। श्यामू समझ ही न सका कि क्या वास्तव में जनता के संरक्षकों का वह लम्बे काल तक रोना और चिल्लाना एक कोरा नाटक-मात्र ही था, उसमें सचाई का अंश लेशमात्र भी नहीं था। श्यामू के दिल पर एक चोट लगी, और यह एक गहरी चोट थी।

जग्गो ने श्यामू के मुख पर आने वाले परिवर्त्तनों को देखा और तुरन्त ही जोर से हँस पड़ी वह। "क्या सोच रहे हो तुम ? दुनिया तुम जैसी भोली नहीं है। तुमने तो बस गाँधीबाबा की लकीर का फ़कीर होना सीखा है। पर अब कहाँ हैं गाँधी बाबा ! बेचारे कहीं स्वर्ग में बैठे देख रहे होंगे चौधरी राघवनारायण की करतूतों को। तुम अपना काम करो, खेत छिन ही तो जायँगे हमसे, तो छिन जायँ। हमारा भाग नहीं धो सकता यह कारिन्दा। जिसने पैदा किया है, वह खाने को भी देगा।" सरलता पूर्वक जग्गो ने कहा।

संतोष की मूर्ति जग्गो के नेत्रों में झाँक कर श्यामू सब कुछ भूल गया। वह सारा मुकदमा और खेत उसकी नजरों से दूर हट गये और स्नेहपूर्ण स्वर में बोला,—"जग्गो ! मैंने इस घर को बर्बाद कर दिया। अपने बच्चों का भविष्य अंधकारमय बना दिया अपनी उधेड़-बुन में फँसकर। मोहन और कान्हा जब बड़े होंगे तो अपने बाप की नासमझी और मूर्खता पर दुखी होंगे और कहेंगे कि मैं उनके लिए भी कुछ न कर सका।"

जग्गो गम्भीरतापूर्वक बोली,—"ऐसा न समझो तुम। हाल तो मेरे कान्हा और मोहन यह सब कह नहीं सकते और अगर कहेंगे भी तो उन्हें यह समझना होगा कि उनके बाप ने कोई ऐसा काम नहीं किया कि जिसके लिए उन्हें उनके बाप का नाम कहीं आजाने पर जगन की तरह शरमिन्दा होना पड़े, जमीन में गड़ जाना पड़े।"

श्यामू ने अपने दोनों हाथ जग्गो के दोनों कंधों पर रख कर उसे अपने पास को समेट लिया। श्यामू के प्रेमार्द्र नेत्रों से आँसुओं की बूंदें जग्गो के ऊपर उठे मुख, नेत्रों और पलकों पर टपक पड़ी। जड़ होगये दोनों प्राणी कुछ देर के लिए, एकदम शान्त।

श्यामू ने जग्गो की आँखों में झाँक कर देखा तो उसे अपने हृदय की भावनाओं और कल्पनाओं का जीता जागता स्वरूप उसके अन्दर साकार खड़ा पाया; उसे लगा कि मानो वह एक क्षण के लिए जग्गो के नेत्र-द्वार से घुसकर उसके गहरे दिल में उतर गया था और उसके अन्दर उसने अपने गत जीवन के संघर्षों की मुस्कराती हुई चित्रावली सजी हुई पाई। गत जीवन की हर घटना किसी-न-किसी कोने में संजोई हुई रखी थी। एक इतिहास था वह, और वह भी कलात्मक इतिहास, श्यामू और उसके जीवन की कहानी का।

श्यामू ने जग्गो के हृदय की इस प्रदर्शनी में अपने चेतन; अवचेतन और अचेतन अवस्था में बनाये हुए चित्रों का वह संग्रह देखा जिनमें उसकी जिन्दगी का राज छुपा था और वह राज था जिन्दगी को खेल मान कर मुस्कराते हुए आगे बढ़ने का।

श्यामू की जिन्दगी का हर कदम खेल के मैदान में लगाई हुई वह छलाँग थी जिसमें जीवन की सब शक्तियों को एकत्रित करके वह तूफान को भी एक बार ललकार देता था। उसके इस साहस में मुस्कराते हुए उसे आगे बढ़ने का मौका देने वाली जग्गो वह शक्ति थी कि जिसके बिना श्यामू वह साहस लेकर आगे बढ़ ही नहीं सकता था।

जग्गो मुस्करा रही थी श्यामू की अंक में सटी हुई, बल खाती थी। उसका अंग-अंग पुलकायमान था। मुकदमे की हार या जीत से मानो कोई सम्बन्ध ही नहीं था उसका। उसे भरोसा था अपनी हिम्मत पर, अपनी मजदूरी पर, और अपने श्यामू के पराक्रम पर। फिर क्यों दाब मानती वह किसी की और क्यों उसका श्यामू अपने हक और इन्साफ के लिए न लड़ता?

वह जानती थी कि श्यामू ने कारिन्दे के दाँत खट्टे कर दिये। चाहे उसके मुँह पर कोई उसकी बुराई नहीं कर पाता था, परन्तु खिंचाव भीखनपुर के लोगों का श्यामू की ही तरफ था।

श्यामू को सामने अपना सब कुछ उजड़ता हुआ दिखलाई देने पर भी एक संतोष था और वही संतोष उसके जीवन की वह अमूल्य निधि थी कि जिसके बल पर वह अपनी सचाई का संग्राम लड़ सका था, नाइन्साफी के

खिलाफ विद्रोह कर सका था ।

श्यामू की जग्गो श्यामू को समझती थी,—यही था श्यामू के जीवन का संतोष, श्यामू के जीवन का बल । साथी के इस सहयोग और सद्भाव में श्यामू के जीवन का प्रवाह छिपा हुआ था, प्रगति छिपी हुई थी ।

श्यामू बढ़ रहा था प्रतिदिन आगे, प्रतिपल आगे और आज भी वह पीछे हटने के लिए उद्यत नहीं था, विचलित होने के लिए तय्यार नहीं था । वह देखना चाहता था कि किस तरह गरीबों का परवरदिगार, जनता का नेता और संसद का सदस्य, जमींदारी समाप्त कर देने का हामी और पक्का समर्थक तथा प्रचारक, अहिंसा के अमर पुजारी गाँधी का अनुगामी चौधरी राघवनारायण उसे और उसके बैलों को उसके पुश्त-दर-पुश्त से जोते जाने वाले खेतों से धक्के देकर पुलिस से बाहर निकलवायेगा ।

श्यामू अब इन्सानियत के दरवाजे पर खड़ा था और सचाई की ताकत उसके हर कदम में थी ।

: ११ :

कारिन्दा यह मुकदमा अपनी पूरी चालबाजी, रसूख और पैसे की ताकत से लड़ रहा था। चौधरी राघवनारायण ने भी वक्त-बेवक्त समय निकाल कर अपने ताल्लुकात का इस्तेमाल कारिन्दे की मदद के लिए किया था।

मजिस्ट्रेट को फोन करा दिया था अपने एक दोस्त से, जिसका भाई उनके जिले का कलक्टर था। और उसे उन्होंने एक इम्पोर्ट का परमिट दिलवाया था। एक माना हुआ व्यापारी था वह अपने देश का और उसके सम्बन्ध भी बहुत व्यापक थे सरकारी अमलों में। मजिस्ट्रेट ने वायदा कर दिया था चौधरी साहब को अपनी पूर्ण सहायता देने का। मुकदमे को ऊपर और नीचे, दोनों ही ओर से बाँधकर चला जारहा था। यह भी एक आक्रमण था बेचारे श्यामू पर जिसे चारों ओर से चौधरी राघवनारायण की शक्तियों का जाल घेर लेना चाहता था।

कारिन्दे ने अदालत से लौटकर चौधरी राघवनारायण को अदालत की पूरी तफसील सुनाई और यह भी बतलाया कि किस तरह अदालत से श्यामू को निराश लौटना पड़ा। अपनी सफलता पर भी उसने विस्तार के साथ प्रकाश डाला। लेकिन फिर बड़े आश्चर्य के साथ बोला,—"यह सब कुछ तो हुआ राघव भय्या! पर श्यामू को देखता हूँ कि मलाल जरा नहीं है उसके चेहरे पर।"

चौधरी राघवनारायण मुस्करा दिया कारिन्दे की बात सुनकर और फिर गम्भीरतापूर्वक बोला,—"मुखत्यार साहब! श्यामू तुमसे हार मानने वाला नहीं। तुम उसके खेतों पर कब्जा चाहे भले ही कर लो लेकिन उसपर

कब्जा नहीं कर सकते ।"

"यह सच है राघव !" कारिन्दे ने चौधरी राघवनारायण की बात स्वीकार करते हुए कहा ।

"लेकिन श्यामू ने गलती की है मुख्त्यार साहब! हमें दिली अफसोस है उसकी बरबादी पर । हम नहीं चाहते थे उससे इस तरह झगड़ा मोल लेना । हम सच कहते हैं कि अगर वह आज भी मुआफी माँगले अपनी गुस्ताखी की तो हम उसे दो-तीन खेत कहीं भी दे सकते हैं ।" गम्भीरतापूर्वक चौधरी राघवनारायण ने कहा ।

"इसमें कोई शक नहीं राघव ! यह मेरा भी खयाल है । लेकिन श्यामू का दिमाग खराब होगया है । उसने गलत अन्दाज लगाया है अपनी ताकत का ।" कारिन्दा उतनी ही गम्भीरतापूर्वक बोला ।

"हमने अपनी बंजड़[1] पड़ी सारी जमीन काश्तकारों में ही तो बाँट दी । क्या उसमें से हम तीन खेत इसे नहीं दे सकते थे ? फिर इसने हमारी बदनामी की है आस-पास के देहात में । लेकिन इस मूर्ख को यह पता नहीं कि जो कुछ यह अपनी जबानी बकवास से जिन्दगी भर में कर सकता है उससे कहीं अधिक राघवनारायण चन्द दिन के अन्दर कर सकेगा ।"

"इसमें क्या शक है राघव !" सीना उभार कर कारिन्दे ने उसकी बात का समर्थन किया ।

"भीखनपुर और भीखनपुर के लोग राघवनारायण को पहचानते हैं । श्यामू समझता है कि यहाँ के लोगों पर मेरा जो कुछ असर है वह सब उसी के बल-बूते का है । आज जितने लोगों के मैं काम आ सकता हूं उतने लोगों का भला श्यामू से क्या भला होने वाला है ?"

"इसमें क्या शक है ?" कारिन्दे ने गम्भीर मुख-मुद्रा से कहा ।

"हमारे हाथ में आज इलाके का हर अफसर नाचता है । भीखनपुर के इलाके पर ही नहीं, दूर-दूर तक के इलाके की शतरंज पर आज जो सर-

---

१. कम या पैदा न देने वाली जमीन ।

कारी मोहरे उछल-कूद करते हुए दिखलाई दे रहे हैं, उन सभी की चालें हमारे हाथ में हैं। बिला हमारे इशारे के यहाँ आस-पास में पत्ता भी नहीं हिल सकता।"

"नहीं हिल सकता राघव! बिलकुल नहीं हिल सकता। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि मेरे जीते जी मेरे राघव के कहे को उलाँघ जाने[२] की ताकत किसी में नहीं हो सकती।" कारिन्दे के यह कहने में एक विश्वास और बल का चमत्कार था, साहस था। कारिन्दा जो कुछ कहता था उसने आज तक उसे करके दिखलाया था। अंगरेजी शासन-काल में चौधरी राघवनारायण की आरामतलबी का पूरा-पूरा साजोसामान जेल की तारीकियों तक पहुंचाने की काबलियत से लेकर जमींदारी के इन्तजाम में हुक्कामों पर रौब के साथ अपना असर रखने के सब काम पूरी काबलियत के साथ उसने निभाये थे। राघवनारायण के जेल जाने पर भी जमींदारी के काम की रफतार कभी मध्यम नहीं हुई।

चौधरी राघवनारायण मान करते थे कारिन्दे का। कारिन्दे की राय, जमींदारी के मामले में, आखिरी राय होती थी। राघवनारायण को उस दिशा में कुछ सोचने-समझने का मानो अधिकार ही नहीं था।

राघवनारायण मुकदमे के हालात जानकर कोठी में ऊपर चले गये अपने बाल-बच्चों में उठने-बैठने के लिए। उन्हें समाचार उनकी मर्जी के मुआफिक मिल गया। मजिस्ट्रेट ने जैसा वायदा किया था वह उसी के अनुसार चल रहा था। उसका रुख भी ठीक ही बतलाया कारिन्दे ने लेकिन फिर भी उन्होंने निश्चय किया कि अपने मित्र की सहायता से वह एक बार फिर मिलने का कोई कार्यक्रम निश्चित कर डालें।

उन्होंने निश्चय कर लिया कि आगामी रविवार को वह एक दावत मजिस्ट्रेट साहब को दे ही डालें और उसका प्रबन्ध करने के लिए उन्होंने कारिन्दे को सूचना भी देदी।

---

२. कूद जाना, परवाह न करना।

दावत बहुत शानदार रही। नाच रंग का पूरा साजोसामान इस दावत में जुटाया गया था। एक रंगीन मैफिल सजी थी जिसमें यौवन का मद और मदिरा दोनों छलछला कर नाच उठी थीं। चौधरी राघवनारायण की दावत में शामिल होकर मजिस्ट्रेट को विशेष आनन्द प्राप्त हुआ और उसने इतने बड़े आदमियों के बीच बैठने में गौरव का अनुभव किया।

दावत हुई और उसमें चौधरी साहब की रंगीन प्रकृति की सभी इष्ट-मित्रों ने सराहना की। मजिस्ट्रेट ने भी अपने हृदय के उद्गारों को प्रसारित किया परन्तु चौधरी राघवनारायण ने असली बात की ओर इशारा तक भी नहीं किया, यह उनकी कला थी।

चौधरी राघवनारायण एक कलाकार थे इस माने में। अभिप्राय मन में रहने और उसी के लिए यह सब राग-रङ्ग रचने पर भी जबान से एक शब्द न कहना उनकी निराली ही अदा थी। चौधरी राघवनारायण ने आज तक कभी अपने काम के लिए किसी से नहीं कहा, परन्तु उसके कराने के साधनों को जुटाना भी वह कभी नहीं भूले।

दावत के पश्चात् काम को सँभालना कारिन्दे का काम था और कारिन्दा अपने काम में शुरू से ही माहिर था। वह तो ऐन मौके से ही बात को काबू में करके चलता था।

दावत के पश्चात् कारिन्दा गाँव में आया तो थाने के दारोगा से लेकर गाँव के पटवारी, लाला छेदीमल, चौकीदार और अपने डेयरी फार्मिंग के छोकरों में दावत का वह शानदार वर्णन किया कि जिससे उसका रौब श्यामू के दिल पर छाता चला जाय। श्यामू दहल जाय उसकी सूचना सुनकर और गाँव के कमजोर दिल बूढ़े और कम हिम्मत आदमी श्यामू को घबराहट का शिकार बनादें।

पटवारी की कारिन्दे से भट हुई तो कारिन्दे ने वही दून की हाँकी और रौब के साथ कहा,—"पटवारी! बस क्या पूछते हो पटवारी! आज की दावत वह शानदार थी कि उसमें आकर मजिस्ट्रेट का बच्चा लट्टू हो गया, लट्टू। चलते वक्त वह इतने जोर से हाथ मिला कर गया राघव से

कि बस........"

"कि बस मुकदमे का फैसला वहीं पर दिखलाई दे गया आपको।" पटवारी ने कहा।

"तुमने मेरी जबान पकड़ली पटवारी ! मुकदमा अब हो नहीं सकता कि हमारे खिलाफ हो सके। श्यामू की बेदखली होकर रहेगी।" कारिन्दा बोला।

"अरे ! मुखत्यार साहब ! श्यामू की बेदेखली तो उसी दिन हो गई थी जिस दिन हमने आपको खसरे और खतौनी की पर्ची काट दी थीं।" मुस्करा कर पटवारी ने कहा।

लेकिन कारिन्दे ने पटवारी की इस बात पर कोई खास ध्यान नहीं दिया। मानो आज वह कोई विशेष बात नहीं थी। खाली पटवारी की रसीदों से ही क्या बनने वाला था ? चौधरी राघवनारायण के रसूख, उनका पैसा, कारिन्दे की अक्ल और कचहरी के काम करने वालों पर उसका रौब-दौब,—यह सभी चीजें तो थीं जिन्होंने श्यामू की बेदखली में सहयोग दिया था। पटवारी कारिन्दे की पूरी कोशिशों के फल का सेहरा अपने ही सिर पर बाँध लेना चाहता था। कारिन्दा इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता था। उसने मन-ही-मन पटवारी के इस एकाधिकार को ठुकरा दिया,—और कारिन्दे के इस भाव को पढ़ने में पटवारी को भी देर न लगी।

पटवारी अन्दर-ही-अन्दर जल उठा, परन्तु ऊपर से मुख पर प्रसन्नता के ही भाव बनाये रहा। वहाँ से चलकर लाला छोटेमल की दूकान पर आया तो देखा, श्यामू अपने दोनों हाथ बगलों में दबाये सीनातान कर खड़ा मुस्करा रहा था। उसकी मुस्कराहट में एक व्यंग्य था और वह व्यंग्य-भरी दृष्टि जब पटवारी के चेहरे पर पड़ी तो वह पटवारी के अन्दर तक घुसती चली गई। पटवारी पहले ही कारिन्दे की उपेक्षा से जलाभुना उठा चला आ रहा था। फिर यहाँ आकर उसे श्यामू का भी उभरा हुआ सीना और मुस्कराता हुआ चेहरा ही देखने को मिला, तो उसे लगा कि बस संसार में सबसे दुखी केवल पटवारी ही था। लेकिन उसे तुरन्त याद आया कि कारिन्दा श्यामू की बेदखली की बात

कर रहा था। फिर श्यामू किस तरह हँस सकता था पटवारी की शक्ल देख कर? एक दम त्योरी चढ़ा कर श्यामू के पास खड़ा होता हुआ बोला,—"सुन लिया कुछ! सब फैसला कर आये हैं चौधरी। कल की दावत में सब बातें साफ-साफ हो गई हैं। अभी-अभी कह रहे थे मुखत्यार साहब।"

श्यामू उसी तरह मुस्कराता हुआ बोला,—"श्यामू अपने तीन खेतों से बेदखल हो गया, यही सुनाना चाहते हो न पटवारी जी! लेकिन इसका श्यामू पर कोई असर नहीं होता। मुझे तो अफसोस इस बात का है कि मुखत्यार साहब ने अब पटवारी जी की ड्योढ़ी के चक्कर लगाने बन्द कर दिये।"

पटवारी श्यामू की यह तीखी चोट खाकर छटपटा उठा और एक दम बौखला कर बोला,—"कौन कहता है यह बात?"

"मुखत्यार साहब कहते हैं। कहते हैं कि वह तो पटवारी को मूर्ख बनाने के लिए दो चार बार वहाँ चले गए थे, अब काम ही क्या है उनका वहाँ जाने का। उसे गर्ज होगी तो वह खुद बीस बार चक्कर लगायेगा यहाँ!" बात बनाते हुए श्यामू ने कहा।

बात कही तो कोरी बनाकर ही गई थी, लेकिन इस समय पटवारी के दिल पर ऐसी लगी मानो गोली मार दी किसी ने। अपमानित-सा होकर तो वह आ ही रहा था कारिन्दे के पास से। उसकी दी हुई खसरे और खतौनी की नकलों का आज कारिन्दे की विजय में वह स्थान नहीं था जो वकील की चातुरी, वकील के मुंशी की कारगुजारी, अदालत के चपरासी का सहयोग, अहलमद की मिसिल को पेश करने की दानिशमन्दी और फिर आखीर में मजिस्ट्रेट की मेहरबानी तथा इन सभी के हक की अदायगी को प्राप्त था।

पटवारी अपनी दी हुई नकलों के बदले में काफी रकम वसूल कर चुका था कारिन्दे से, इस लिए अब अधिक सम्मान देने की गुंजाइश नहीं रह गई थी कारिन्दे के पास। कारिन्दे की अपनी अक्ल भी तो थी कुछ, जिसने इन सारी ताकतों को एक स्थान पर लाकर केन्द्रित किया था और फिर सब के सहयोग से चौधरी राघवनारायण की खण्ड-खण्ड होती हुई जमींदारी की

की रक्षा की थी। एक इतने बड़े खान्दानी परिवार की टूटती हुई कमर से बल्लियाँ बाँध कर उसे मजबूत बनाया था और एक बार फिर ऐश और शौक के मंच पर खड़े होकर रोटी तथा कपड़े के उम्मीदवारों का रहनुमा बनने का ख्वाब देखा था।

"लेकिन श्यामू ! तुमने जगन से अदालत में बयान दिलवा कर अच्छा नहीं किया।" पटवारी गम्भीरता पूर्वक सब बातों को भुलाते हुए बोला।

"यह मैं खुद भी महसूस करता हूं।" श्यामू मुस्कराता हुआ; बोला मानो यह जो कुछ भी उसने कहा वह कोरा मजाक था पटवारी के साथ।

श्यामू हँसता हुआ फिर बोला,—"पटवारी जी ! असली पटखी तो आपको दी है मुखत्यार साहब ने। अपना काम कराके अब दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया। कहते हैं, क्या आदमी है पटवारी भी ? चार टके पर अपना ईमान बेच डालता है। क्या ऐतबार किया जाय ऐसे कमीने आदमी का ?"

पटवारी खड़ा न रह सका एक क्षण भी। सिर नीचा किये अपने घर की ओर निकल गया और श्यामू हँसता हुआ पीछे कहता ही रहा,—"अरे ! पटवारी जी ! जरा सुनिये भी तो ! बड़ी-बड़ी बातें करनी हैं अभी तो आप से।" लेकिन पटवारी ने एक न सुनी। वह बढ़ता ही चला गया आगे-आगे।

पटवारी के चले जाने पर लाला छोटेमल ने भी जी भारी करते हुए श्यामू की बेदखली की सूचना जो उसे कारिन्दे से मिली थी, उसे दी; लेकिन श्यामू पर उसका कोई प्रभाव नहीं था। श्यामू लाला की दूकान के सामने वाला लकड़ी का थमला अपनी दोनों भुजाओं में दबा कर हिम्मत के साथ अपनी गहरी दृष्टि उसके छोटे से सूखे चेहरे पर फैला कर बोला,—"लाला छेदीमल ! यह जो कुछ भी तुम कह रहे हो, मैं जानता हूँ। लेकिन मैं यह नहीं जान सका कि तुम्हारे दिल में दर्द क्यों हो रहा है ? तुम्हारी जो आँखें भीखनपुर में दिन दहाड़े जुल्म होता देख सकती है और जिन्होंने

कितने ही काश्तकारों के भूमिधर बनने के स्वप्नों को कारिन्दे के क़दमों के नीचे रौंदे जाते और बर्बाद होते हुए देखा है, उन्हीं आँखों को श्यामू की बरबादी देखने में क्या दिक्कत महसूस हो रही है ?"

लेकिन याद रखो लाला छेदीमल ! तुम्हारी यह दूकान भी तभी चली है जब यहाँ का काश्तकार पनपा है। अकेले मुखत्यार साहब के बूते पर तुम दुकान नहीं चला सकते। और फिर अब तो वह भी भूमिधर बन गये हैं। उनका लम्बा-चौड़ा फार्म है। इकट्ठा अनाज शहर की आड़त पर चला जायगा। लाला छेदीमल की पंसेरी तराजू पर तुलने के बजाय ट्रैक्टर का ठेला सीधा काँटे पर जाकर खड़ा होगा।"

लाला छेदीमल की आँखों के सामने शहर की चुंगी का काँटा आकर लग गया। लाला छेदीमल अपनी जवानी के दिनों में कई बार दिल्ली गये थे। जमना-पुल को पार करते ही दिल्ली की चुंगी-चौकी पर उनकी मोटर रुकी थी और वहीं एक बड़े काँटे पर मोटरें-की-मोटरें तुलती उन्होंने देखी थीं। वह जवानी का नक्शा ज्यों-का-त्यों उनके मानसिक पटल पर खिंचता चला गया और धीरे-धीरे उन्हें लगा कि जैसे उनकी दूकान की आड़त का काम अब नहीं चलेगा। केवल नमक, तेल, मूँगफली, बीड़ी वगैरह की ही बिक्री से उसे संतोष कर लेना होगा।

लाला छेदीमल के चेहरे पर उतरते-चढ़ते भावों को पढ़कर श्यामू मुस्कराता हुआ बोला,—"लेकिन कोई चिन्ता की बात नहीं लाला छेदीमल ! भीखनपुर के मजदूरों के लिए तुम चाय की दुकान खोल लेना। मजदूरों की मजदूरी में तुम्हारा साझा तो भगवान् ने लिख ही दिया है। तुम्हारी भाग्य-रेखा कहती है यह। किसी अच्छे ज्योतिषी को अपनी पत्री दिखलाकर पूछ सकते हो तुम, अगर मेरा विश्वास न हो तो।"

श्यामू मुस्कराता हुआ चल दिया वहाँ से अपने घर की ओर। श्यामू को अच्छे जानवर पालने का शौक था। इधर कुछ दिन से तो वह अपना ध्यान खेती से भी अधिक इसी ओर लगा रहा था। गायों के बछड़े पालना और भैंसों की नस्लें पहचानने में उसे आस-पास के देहात के लोग माहिर

मानते थे। जानवरों का सौदा करते समय उसकी राय ले लेना ठीक समझते थे।

श्यामू जानवरों की इस उलट-फेर में भी कुछ पैसा बनाने लगा था। जिस दिन पहला सौदा श्यामू ने किया था और उसे पन्द्रह रुपये उस सौदे में बचे तो जग्गो ने मुस्कराते हुए कहा था,—"अब तो व्यापारी बन गये तुम।"

"बन नहीं गया हूँ तो बना देगी, तू जग्गो! कल ही बछड़े के पिछत्तर रुपये लगा कर गया है एक सारे गाँव का किसान।" श्यामू ने कहा।

"हूँ! जी! पिछत्तर! सौ से कम का नहीं है मेरा बछड़ा। वह जोट का नटिया[1] निकलेगा कि जो कोई देखे बहार।" आँखें मटका कर झूमती हुई जग्गो बोली।

"तो तू ही सौदा कर लिया कर न जग्गो! मैं तो जानूं तू ऊंचे ही दाम वसूल कर लेगी अपने बछड़े के।" हँसकर श्यामू ने कहा।

जग्गो लजा गई और फिर बछड़े की थूथड़ी प्यार से अपने हाथों में लेती हुई बोली,—"कितने प्यार से पाला है इसे? तुम क्या जानो? चन्द पैसों के लोभ में इनसे जो बिछड़ना पड़ता है उसका कितना दुःख होता है, तुमसे क्या कहूं?"

जग्गो का बछड़ा जग्गो से भी अधिक प्यार से जग्गो की आँखों में आँखें डाले उसके चेहरे पर निहार रहा था।

---

१. तेज चलने वाला गाय का बछड़ा।

: १२ :

श्यामू रोजाना की भांति सवेरे उठा, हल सँवारा, बैलों को न्यार डाला और पेट भर लेने पर उनके गले का पुंडा खोल कर खेत पर जाने के लिए तय्यार होगया। आज अदालत में फैसला सुनाया जाने का दिन था लेकिन श्यामू अदालत नहीं गया। मानो उसे पता था, जो होने वाला था।

श्यामू अपने खेतों पर गया और जो काम उसे करना था उसने वही किया। उसके चेहरे पर पहले जैसी ही प्रसन्नता थी, कोई तबदीली नहीं थी। श्यामू हल जोत रहा था। इसी समय चौधरी राघवनारायण का तांगा उधर से गुजरा, जिसमें कारिन्दा बड़ी शान के साथ बैठा था।

कारिन्दे ने खेत के किनारे आकर तांगा रोक दिया। वह स्वयं तांगे से उतर पड़ा और श्यामू के पास तक पहुँचगया। श्यामू अपना हल जोतने में लगा रहा। कारिन्दा आप ही बोला,—"श्यामू आज फैसला होना है हमारे-तुम्हारे मुकदमे का।"

श्यामू ने हल रोक दिया और मुस्कराकर कारिन्दे के मुँह पर देखकर बोला,—"आप जा तो रहे हैं फैसला सुनने के लिए मुखत्यार साहब! मैं ही उसमें क्या करूंगा? फैसला जो होगा सो होगा, मैं उसे बदलवा नहीं सकता।"

"फिर क्यों बेकार खराब हुआ श्यामू! गम्भीरतापूर्वक कारिन्दे ने कहा।

"नाइन्साफी को उसकी हद तक पहुँचाने के लिए।" उतनी ही गम्भीरता पूर्वक श्यामू ने कहा।

"लेकिन तेरे और हमारे जो ताल्लुकात थे तूने सब पर लात मारदी।

चौधरी राघवनारायण को निहायत अफ़सोस है इसका।" कारिन्दे ने कहा।

श्यामू हँस पड़ा और फिर मुस्कराता हुआ बोला,—"मुखत्यार साहब! ताकत हासिल कर लेना गरीबों पर जुल्म ढाने के लिए नहीं होता। और फिर जहाँ यह ताकत हासिल ही उन गरीबों की मदद से की गई है, वहाँ तो यह नाइन्साफी करना अन्याय है, पाप है। ताल्लुकाल की बात जाने दीजिये। ताल्लुकात मेरे पटवारी जी से भी कम नहीं थे। उनकी भी भैंस खोलकर मैं नहीं लाया[1] परन्तु सचाई मेरे साथ होते हुए भी उन पर आपके करारे नोटों का जादू चल गया। पर उनके बेटे जगन पर नहीं चल सकेगा। चौधरी राघवनारायण भी इसी तरह अमर पट्टा लिखा कर नहीं लाये हैं भगवान् के दरबार से। यह ताकतें जिन्हें तुम समेट लेना चाहते हो अपने अन्दर एक दिन बारूद की तरह फट पड़ेंगी।"

"श्यामू! यह बेकार की बातें नहीं गईं तेरी! रस्सी जल गई, लेकिन बल ज्यों-के-त्यों बाकी हैं।" दुखी मन से कारिन्दे ने कहा।

श्यामू जोर से हँस पड़ा और फिर गम्भीर होता हुआ बोला,—"मुखत्यार साहब! आप भी आदमी खूब हैं। यानी जो बातें मुझे आपके लिए कहनी थीं वह आप मेरे लिए कह रहे हैं। लेकिन याद रखिए अपने श्यामू की बात कि जुल्म की यह रफतार चलने वाली नहीं। भीखनपुर को बर्बाद करने वाला चैन की बंसरी नहीं बजा सकेगा। मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं झूठी और बेईमान अदालत के फैसले को ठुकरा दूंगा और आखरी दम तक विद्रोह करूंगा इस नाइन्साफी के खिलाफ।

आपके पैसे और चौधरी राघवनारायण के सरकारी रसूकों में अगर कुछ ताकत है तो आप देखेंगे कि हमारी फाके मस्ती भी कुछ रंग जरूर लायेगी।" कहता-कहता श्यामू चुप होगया। उसने कुछ और कहना पसन्द नहीं किया और सुनना भी शायद।

श्यामू ने बैलों को टिटकारी दी, बैल चल पड़े। हल का खूड़ निक-

---

१. भैंस खोलना माने भैंस की चोरी करना।

लना शुरू होगया और कारिन्दा अकेला पीछे खड़ा रह गया। वह कुछ भी न समझ सका श्याम् को। कारिन्दे को रहम आरहा था श्यामू पर। श्यामू अपना हल जोतने में लग गया। कारिन्दा भी अपने ताँगे में जा बैठा और ताँगा तेज रफतार से स्टेशन की ओर चला गया।

श्यामू की आँखों के सामने अदालत का नक्शा नाच रहा था। चपरासी से लेकर मजिस्ट्रेट तक सभी लोग उसके सामने थे। भरी अदालत में अहलमद, मुंशी, चपरासी और मिसिल नवीस को हक लेते श्यामू ने देखा था। गाँधी के रामराज्य की कल्पना का साकार रूप सामने था। सब स्वच्छन्द थे अपने हक पर, सब पाबन्द थे। हक पाते ही अदालत का हर कारिन्दा घोड़े की तरह कूदता था, हिरन की तरह चौकड़ी भरता था और घंटों का काम मिनटों में खत्म करता था। हक न मिलने पर बिल्ली जैसी आँखें निकालकर मुकदमेबाजों की ओर घूरते और किटकिटाते श्यामू ने उन्हें देखा था। फिर ठीक भी था। जब मुकदमेबाज अपने हक के लिए उनसे सहायता चाहता था तो वह भी अपने हक के लिए ही वहाँ आकर बैठे थे। वरना उनकी साधारण सी तनखा में उनका क्या काम चलता था? पेट लगा था उन सब के,—बहुत मोटा पेट, श्यामू के पेट से कई गुना बड़ा।

स्वतंत्र भारत की अदालतों का यह रूप श्यामू के सामने आया तो उसे जचा कि मानो देश ने गत कितने ही वर्षों तक जो संग्राम किया, जो विद्रोह किया, वह सब संग्राम नहीं था, विद्रोह नहीं था, एक उपहास मात्र था, एक दिखावा और धोखा था।

चौरी राघवनारायण अब भीखनपुर के एक छत्र भूमिधर थे और इन्साफ की अदालत ने उन्हें यह हकूक प्रदान किये थे। कोई लूट मार नहीं की थी उन्होंने, डाका नहीं डाला था किसी के घर। जो सम्पत्ति उनके पास थी, उनके भाग्य ने उन्हें प्रदान की थी, और उसकी सुरक्षा के लिए सरकारी अदालत, सरकारी पुलिस और सरकारी रौब-दौब उनके पास था। उन्होंने भी उसकी सुरक्षा के लिए बलिदान किया था, त्याग किया था, जेल गये थे,—उसी का तो यह सब फल था। फिर कोई क्यों जले उनके ऐश्वर्य

को देखकर। भगवान् की असीम कृपा थी उनपर। उसी ने तो सब कुछ प्रदान किया था उन्हें। आज चौधरी राघवनारायण के विरुद्ध कुछ कहना भगवान् को ललकारे के समान था।

श्यामू तिलमिला उठा। उसके दिल में एक तूफान-सा उठ रहा था और उस तूफान के बवंडर में उसने देखा कि उसकी सब मान्यताएँ, सब कल्पनाएँ, सब विश्वास, सब आस्थाएँ चक्कर काट कर गोलाकार भँवर सा बनाती हुई दूर, बहुत दूर, शायद फिर कभी उसके जीवन में प्रवेश न करने के लिए आसमान में उड़ती चली गईं। श्यामू को लगा कि वह बहुत कुछ हलका हो गया। उसके सिर पर रखा हुआ युग-युगान्तर का बोझ आज इस तूफान का ग्रास बन गया। श्यामू ने चारों ओर घुमा कर देखा और पाया कि वह अकेला था, उसका हल एक ओर पड़ा था और बैल सामने कीकर के नीचे बैठे थे। न कहीं भाग्य दिखलाई दिया और न भगवान् ही। हाँ उसकी जग्गो मुस्कराती हुई जरूर सामने से आरही थी।

आँधी हलकी पड़ चली थी परन्तु हवा अब भी काफी तीव्र थी। संध्या का समय था, सूर्य अस्ताचल को जाना चाहता था और उसकी अंतिम पीलिमा खेतों में खड़ी फसलों की चोटियों पर बिखरी पड़ी थी।

"जग्गो बहुत बड़ा तूफान आया।" श्यामू बोला।

"तभी तो मैं गाँव से दौड़ी आरही हूँ कि कहीं तूफान में उड़ न जाओ तुम।" जग्गो ने मुस्करा कर कहा।

"अब नहीं उड़ूँगा जग्गो! तू आगई न मेरी मदद को। तेरा बल पाकर तो मैं महसूस करता हूँ कि न जाने कितनी ताकत मेरे अन्दर आ जाती है।" उसी गम्भीरता के साथ श्यामू ने कहा।

इसी समय दूर से चौधरी राघवनारायण के ताँगे के आने की आवाज श्यामू के कानों में पड़ी। ताँगे की जोट के गले में बँधी हुई टल्लियों की झंकार से जंगल का वातावरण गुंजायमान हो उठा और ताँगे के पहियों की आवाज भी स्वरमय हो रही थी।

"कारिन्दा कचहरी से हमारे मुकदमे का फैसला सुनकर लौट रहा है जग्गो !" श्यामू ने कहा।

"लौटने भी दो मरे को। जब तक हमारा इन खेतों में दाना पानी है तब तक तो कोई छीन नहीं सकता और जब दिन आजायगा तो मजदूरी करके अपना काम चला लेंगे। गाँव के और लोगों के भी तो खेत छिने हैं।" संतोष का साँस लेकर जग्गो ने कहा।

"खेत छिनने का अफसोस नहीं है जग्गो ! अफसोस कुछ और ही बातों का हो रहा है। तुमसे क्या कहूँ जग्गो, पता नहीं क्यों दिल में एक बेचैनी-सी पैदा होती जा रही है। यह अन्याय सहन नहीं हो रहा बस।" श्यामू ने दर्द भरे दिल से कहा।

जग्गो कुछ बोली नहीं, मुस्कराती रही सामने खड़ी।

कारिन्दे का ताँगा श्यामू के खेत के किनारे आकर फिर रुक गया और कारिन्दा ताँगे से उतर कर फिर श्यामू के पास आया।

श्यामू कारिन्दे की शक्ल देखकर हँस दिया और दिल का दर्द दिल में छुपा कर बोला,—"मुकदमा जीत गये मुखत्यार साहब ! अब दखल लेना बाकी है। उसे भी पूरा कीजिए ! लेकिन श्यामू के खेतों पर दखल लेने के लिए आपको जुल्म की हद तक जाना होगा। बेजबान जानवरों की तरह मेरे गले पर छुरी आप नहीं फेर सकेंगे। वह दिन आयगा जब पुलिस की मदद से आपको उसी श्यामू को धक्के लगवाकर इन खेतों से बाहर फिकवा देना होगा जिसकी लाश को एक दिन पुलिस के चंगुल से निकाल कर अपने कंधे पर आप मुरादनगर से भीखनपुर लाये थे।

कितना अच्छा होता अगर श्यामू को उस दिन वहीं मर जाने देते आप ? एक इन्सान में हैवान और हैवान में इन्सान छुपा हुआ तो देखने को न मिलता श्यामू को आज।"

श्यामू आज कहता ही गया जी खोलकर। एक निर्भीक स्वर उसके कंठ से निकलता चला जा रहा था और कारिन्दा पत्थर बना सुन रहा था श्यामू की सब बातें।

श्यामू मुस्करा रहा था, कारिन्दे ने देखा। उसके दिल पर जरा भी मलाल नहीं था अपने खेतों का मुकदमा हार जाने का। उसे लगा कि मानो सचमुच ही उसने वह मुकदमा खेतों का भूमिधर बनने के इरादे से नहीं किया।

"मुखत्यार साहब! चौधरी राघवनारायण ने जो चाल भीखनपुर के साथ चली है इसे भीखनपुर भूलने वाला नहीं। जो जख्म यहाँ के लोगों के दिलों पर आपने कर दिये हैं वह आसानी से भर जाने वाले नहीं।" श्यामू गम्भीर हो गया इतना कहकर।

कारिन्दे ने श्यामू की बातों में आज वह अभिमान देखा जिसे सहन करने का वह आदी नहीं था। ललकार उसने कभी जीवन में किसी की बर्दाश्त नहीं की थी। त्योरी चढ़ गई उसकी और वह सीना तानकर बोला,—"तो ठीक है श्यामू! तू भीखनपुर का रहनुमा बनने चला है। शायद सब के दिलों के घाव तेरे ही दिल में सिमटकर चसक उठे हैं। लेकिन याद रख कि भीखू से टक्कर लेकर तू आगे नहीं बढ़ सकेगा।"

"मुखत्यार साहब! मुझे आगे बढ़कर भला कहाँ जाना है? पटवारी जी जैसी शानदार हवेली बनाने का मेरा ख्वाब नहीं। लाला छेदीमल के महल से मुझे नफ़रत है और रही चौधरी राघव नारायण की कोठी की बात,—सो उसे एक दिन जरूर हमवार होना होगा,—यह भी याद रहे आपको।" मुस्करा कर श्यामू ने कहा और कहता ही गया, "मुखत्यार साहब! बड़ी-बड़ी सल्तनतें उठ गईं और आज उनका नामोनिशान भी बाकी नहीं बचा। फिर बेचारे चौधरी राघवनारायण के झिड़ाड़ों[1] पर आप कहाँ तक थेकली लगाते रहेंगे? आज इधर थेकली लगायेंगे कल उधर से फट जायगा। मूछों का रौब-दौब और सरमाये की ताकत इन्सानियत को नहीं कुचल सकेगी। इन्सानियत रौंद डालेगी आपकी इस वहशियाना नासमझी को, जुल्म को आपके।"

"तो हम जुल्म कर रहे हैं तेरी नजर में श्यामू!" कारिन्दे ने गम्भीरता पूर्वक पूछा।

---

१. ज्यादा फटा कपड़ा।

श्यामू जोर से खिलखिला कर हँस पड़ा। ठीक उसी तरह जिस तरह एक दिन श्यामू का उपहास करने के लिए कारिन्दा हँस पड़ा था। यह कोरा उपहास था कारिन्दे का,—जीता जागता मजाक और कारिन्दा श्यामू के मुँह पर आँखें गड़ाये न जाने क्या देखने का प्रयास कर रहा था। कारिन्दे की अक्ल जवाब दे चुकी थी श्यामू को समझने में।

"तो आप अपनी नज़रों में नमक हलाली कर रहे हैं।" श्यामू ने उसी व्यंग्य के साथ पूछा।

"इसमें क्या शक है। भीखनपुर और इसके देहात की एक मुट्ठी में बँधी हुई ताकत को बखेर देना कहाँ की दानिशमन्दी है?" गम्भीरता पूर्वक श्यामू के व्यंग्य से बिना विचलित हुए कारिन्दे ने कहा।

"तब फिर सारे गाँव के बजाय सिर्फ आप और चौधरी साहब ही खाना खा लिया करें। आप मोटे ताजे बने रहेंगे तो भीखनपुर की सुरक्षा तो होती रहेगी।" लापरवाही से श्यामू ने कहा।

कारिन्दा फिर कुछ न बोला। चुपचाप जाकर अपने ताँगे में बैठ गया। ताँगा गाँव की ओर बढ़ गया।

जग्गो मुस्करा कर सामने आती हुई बोली,—"मरे को अच्छी फटकार दी तुमने। इसने समझा होगा कि अपने मुकदमा जीतने की बात हमें सुनायेगा तो हम रो पड़ेंगे, गिड़गिड़ायेंगे इसके सामने। मरा पागल है कहीं का। हम क्यों रोयें गिड़गिड़ायें किसी के सामने। घास खोदनी आती है हमें, भैंसें पालनी आती हैं हमें, बस जानवर पालेंगे और दूध बेचेंगे उनका शान के साथ।"

"तूने तो काम का भी हिसाब किताब जोड़ लिया जग्गो!" प्यार से श्यामू ने जग्गो के पास को खिसकते हुए कहा, और फिर जग्गो के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर बोला,—"जग्गो! चौधरी राघवनारायण को मैं पहले देवता समझता था। लेकिन आज देख रहा हूं कि देवता के वेश में वह एक दानव छुपा हुआ है। यह कारिन्दा तो बेचारा खामखा ही लोगों की नज़रों में खटकता है। जैसे इसके हाथ में यह बाँस की बेजान चांदी के पोले वाली लाठी है उसी तरह चौधरी के हाथ में यह कारिन्दा भी बेजान चाँदी

के पोले वाली लाठी के ही समान है।"

"खूब लाठी से मिसाल दी तुमने कारिन्दे की। लेकिन यह जरा अपनी खुरपेंच[1] भी लगाता रहता है। इसकी लाठी वैसी खुरपेंच नहीं लगाती बेचारी।" मुस्करा कर जग्गो बोली।

सूर्य अस्त हो चुका था। रात्रि का अंधकार चारों ओर से भीखनपुर और भीखनपुर के जंगल को घेरता चला जा रहा था। इस धुंधले शान्त वातावरण में केवल दो प्राणी, एक दूसरे के जीवन-साथी, आमने-सामने खड़े साहस और सौम्यता से मुस्करा रहे थे।

"जग्गो तेरी शक्ति पाकर तेरा श्यामू तूफानों से मुस्कराता हुआ टकराया है और सच कहता हूँ जग्गो! कि कभी दिल में जरा सी भी तो कमजोरी नहीं आने पाई। मेरी दुर्गा है तू जग्गो! तेरी सहनशीलता और ताकत का मैं अन्दाज़ नहीं लगा सकता।" सरलता से श्यामू ने जग्गो के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर हिलाते हुए कहा।

इसी समय श्यामू की दृष्टि सामने बैठे दो बैलों पर गई और उन्हीं के पास पड़े हल और नाड़ी सांटे उसने देखे,—देखे और नेत्र भर आये उसके। नेत्र जग्गो के भी भर आये एक क्षण के लिए। उनसे सर्वदा के लिए श्यामू का सम्बन्ध विच्छेद हो रहा था। उसके बाप दादों का पेशा सरकारी इन्साफ उससे छीन रहा था। श्यामू के वह तीन खेत, जिन पर उसके खांदान के जिन्दा रहने का सहारा थे, उससे छीनकर अदालत ने उस चौधरी राघव-नारायण को दे दिये थे जिसने संसद द्वारा प्राप्त दो वर्ष की मियाद का लाभ उठाकर रौब-दौब और पैसे से सरकारी कागजात और अफ़सरों को खरीद लिया था।

श्यामू की आंखों से इस एकान्त में आंसू बह चले। वह अपने बैलों से लिपट कर अकेले में जी भर कर रोया और जग्गो भी उसे न रोक सकी। उसके अपने नेत्र जो पसीजे हुए थे। इन्हीं खेतों के लिए उसने अपने श्रंगार

१. अपनी अक्ल से मूल बात में कुछ इधर-उधर की बातें लगाना।

के चन्दे के आभूषणों को हँसते-हँसते उतार कर एक दिन श्यामू के हवाले कर दिया था।

जग्गो आँखें पोंछकर बोली,—"इन बैलों का भी हमारे साथ जितने दिन का नाता था वह खत्म हो चुका। खूब साथियों की तरह मुसीबत में निभाया। बड़ा काम दिया है बेचारों ने।"

श्यामू का गला रुँधा हुआ था। शब्द वह प्रयास करने पर भी एक न बोल सका। हल उठाकर उसने अपने कंधे पर रखा और बैलों को आगे-आगे कर लिया। जग्गो उसके साथ थी।

फिर यकायक मुस्करा कर बोला,—"जग्गो! कारिन्दा समझता होगा कि वह जीत गया। उसने बेदखल करा दिया श्यामू को। लेकिन राघव-नारायण के मुँह पर कालिख पोत कर अगर एक दिन भीखनपुर के देहात में मैंने न घुमाया तो मेरा नाम भी श्यामू नहीं।"

श्यामू की छाती में उभार आ गया यह बात कहकर। जग्गो भी मुस्करा रही थी,—उसकी अनुमति थी इसमें। श्यामू उसके जीवन का देवता था और अपने देवता की प्रसन्नता में ही उसने अपने जीवन की शांति के दर्शन किये थे। उसे गर्व था अपने श्यामू पर।

: १३ :

आखिर वह दिन आ गया जब कारिन्दे ने श्यामू के तीनों खेतों पर कब्जा लिया और उसका गड़गड़ाता हुआ ट्रैक्टर उन पर फिर कर इधर से-उधर तक पार हो गया। थाने की पुलिस ने श्यामू को धक्के देकर खेत से बाहर गिरा दिया और उसके बैलों को पीट कर एक ओर खदेड़ा गया।

दखल अमीन ने दिलाया, थाने का दारोगा स्वयं मौके पर मौजूद था, और भीखनपुर तथा आस-पास के देहात की एक बड़ी भारी भीड़ इस दृश्य को देखने के लिए वहाँ आई थी। एक सनसनी फैली थी आसपास में। लोगबागों में काफी जोश था और पुलिस के श्यामू पर किये गये अत्याचार को देखकर सब का दिल दहल उठा था। कुछ बूढ़े किसानों की आँखों में आँसू थे और कुछ नौजवान लड़कों के भुजदण्ड फड़क रहे थे। 'यह अन्याय हो रहा है' एक स्वर में जनता ने कहा और उनका स्वर कुछ फुस-फुसाहट के साथ वहाँ के वायु-मण्डल में गूंज उठा। स्वतंत्रता के जन-स्वर ने अदालत के इन्साफ को ललकारा और सभी के दिलों ने जुड़-मिलकर इस जुल्म के खिलाफ आवाज़ बुलन्द की। जनता के निर्भीक उद्‌गारों का प्रतिनिधित्व करने वाला था नौजवान जगन, सजीला और अचीला जवान भीखनपुर का।

हिम्मत के साथ जगन भीड़ को चीरता हुआ आगे वढ़ा, और उसने अपना जोरदार नारा बुलन्द किया,—"राघवनारायण मुर्दाबाद।" "भूमिधरी के भेष में जमींदारी मुर्दाबाद।" और जनता ने जगन के नारों में अपना स्वर मिला दिया। सब ने एक स्वर होकर, "राघवनारायण मुर्दाबाद" "राघव नारायण का कारिन्दा मुर्दाबाद" के नारे लगाये। जनता के निर्भीक

स्वर ने चौधरी, कारिन्दे, पटवारी और पुलिस के रौब-दौब के परखचे उड़ा दिये। उनका स्वर आकाश में गूंज उठा।

यह वही भीखनपुर का जंगल था, जो एक लम्बे काल तक "चौधरी राघवनारायण जिन्दाबाद" के नारों से गुंजायमान रहा था। आज उसी में "राघवनारायण मुर्दाबाद" की ज्वाला दहक उठी। जनता में रोश था कारिन्दे और पुलिस की इस कार्यवाही के खिलाफ,—एक उत्तेजना थी। जगन आगे बढ़ता चला गया और श्यामू के निस्तेज पड़े शरीर को उसने अपने कंधों पर उठा लिया। अपने श्यामू चचा को कंधे पर उठाकर उसने एक बार फिर "राघवनारायण मुर्दाबाद" का नारा लगाया और गांव की पूरी भीड़ ने उसका साथ दिया। फिर यह भीड़ "श्यामू जिन्दाबाद" के नारे लगाती हुई भीखनपुर की ओर चल पड़ी।

खेतों में थाने की पुलिस, दखल दिलाने वाला अमीन और कारिन्दे के अतिरिक्त और कोई न रहा।

"अमीन साहब आपने हद कर दिया।" कारिन्दे ने अमीन साहब का हक उनकी खिदमत में पेश करते हुए कहा।

"और आपकी मेहरबानी को कभी नहीं मैं भूल सकता दारोगा जी! यदि आप समय पर न आते तो बलवा होजाता। क्या ख्याल है आपका?" दारोगा जी की ओर मुखातिब होकर कारिन्दा बोला।

"इसमें क्या शक है? आपने पुलिस को इत्तला देकर बड़ी ही दानिशमन्दी से काम लिया।" दारोगा ने उत्तर दिया।

हक दारोगा का भी मय उनके अमले के चुकाया गया। श्यामू के तीनों खेत देखते-देखते चौधरी राघवनारायण के फार्म में इस तरह विलीन हो गये जैसे किसी जंगी मगर मच्छ के पट में एक छोटी साधारण सी मछली समा जाती है।

कारिन्दे की विजय हुई और वह अपनी चांदी के पोले वाली लाठी हाथ में लेकर मूँछों पर ताव दिये गाँव के दगड़े से होता हुआ लाला छेदीमल की दूकान पर पहुँचा,—पान खाया बड़े तपाक के साथ और अकड़ कर

बोला,—"आखिर वही हुआ न लाला छेदीमल ! जो हमने कहा था ।"

"वही तो होना ही था मुखत्यार साहब ! आपका और श्यामू का मुकाबला ही क्या ? आप आप ही हैं और वह वह ही हैं ।"

इसी समय पटवारी भी वहीं पर आगया । आगे बढ़ कर बोला,—"बस कमाल कर दिया आपने मुखत्यार साहब मुकदमा लड़ने में !"

कारिन्दा मुस्करा रहा था एक अदा के साथ । आज भीखनपुर और भीखनपुर के रहने वालों की खोपड़ियाँ उसकी लाठी के खोदे के नीचे थीं, उसके पैर के नीचे थीं । उभर कर साँस लेने की किसी को इजाजत नहीं थी । कारिन्दे के सामने सीना उभार कर मूँछों पर ताव देते हुए चलना अपराध था उसकी दृष्टि में,—विद्रोह था बड़ा भारी ।

श्यामू को रगड़ दिया था उसने, लेकिन जगन के उभर उठने से एक चिन्ता पैदा हो गई थी दिल में । फिर भी ऊपर से मुस्कराता ही रहा कारिन्दा ।